राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

उभरता बिहार

सच्चाई, ऊर्जा, सकारात्मक विचार

RNI No. BIHHIN/2007/22741

वर्ष : 14, अंक : 08, फरवरी 2022

www.ubhartabihar.com | Email : ubhartabihar@gmail.com

कल भी सूरज निकलेगा, सब तुझको दिखाई देंगे पर हम न नजर आएंगे

आम बजट में एमएसएमई क्षेत्र पर दिया गया है...

पश्चिम में खौफ, पलायन और दंगो की याद पर...

ENVISION MEDICAL
IMAGING & SCAN CENTRE

(A UNIT OF ENVISION MEDICAL IMAGING & SCAN CENTRE PVT. LTD)

C-14 BEHIND V-MART, KANKARBAGH AUTO STAND, KANKARBAGH, PATNA - 800 020
MOBILE : 9155998970, 9155998971, E-mail : envisionimagingpatna@gmail.com

उभरता बिहार

वर्ष : 14, अंक : 8, फरवरी 2022

RNI No. BIHHIN/2007/22741

संपादक

राजीव रंजन

छायाकार

विनोद राज

विधि सलाहकार

उपेन्द्र प्रसाद

चंद्र नारायण जायसवाल

साज-सज्जा

मयंक शर्मा

प्रशासनिक कार्यालय

सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर

कंकड़बाग, पटना - 800020

फोन : 7004721818

Email : ubhartabihar@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक राजीव रंजन द्वारा कृत्या पब्लिकेशन, लंगरटोली, बिहार से मुद्रित एवं सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर, कंकड़बाग, पटना - 800020 से प्रकाशित।

संपादक: राजीव रंजन

सभी कानूनी विवाद पटना न्यायिक क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत निपटाये जायेंगे। लेखकों द्वारा व्यक्त विचार उनके अपने है। इसकी जिम्मेदारी उनकी है एवं इसके लिये संपादक, प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नही है। सामग्री की वापसी की जिम्मेवारी उभरता बिहार की नहीं होगी। इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित है। कुछ छाया चित्र और लेख इंटरनेट, एजेंसी एवं पत्र-पत्रिकाओं से साभार। उपरोक्त सभी पद अस्थायी एवं अवैतनिक है। किसी भी आलेख पर आपत्ति हो तो 15 दिनों के अंदर खंडन करें।

नोट : किसी भी रिपोर्टर द्वारा अनैतिक ढंग से लेन-देन के जिम्मेवार वे स्वयं होंगे।

संरक्षक

डॉ. संतोष कुमार | अखिलेश कुमार जायसवाल

राजा बाबू | डॉ. राकेश कुमार

पश्चिम में खौफ, पलायन और दंगो की याद पर होगा मतदान 09

भूख की व्याकुलता एवं खाद्य पदार्थों की बर्बादी 19

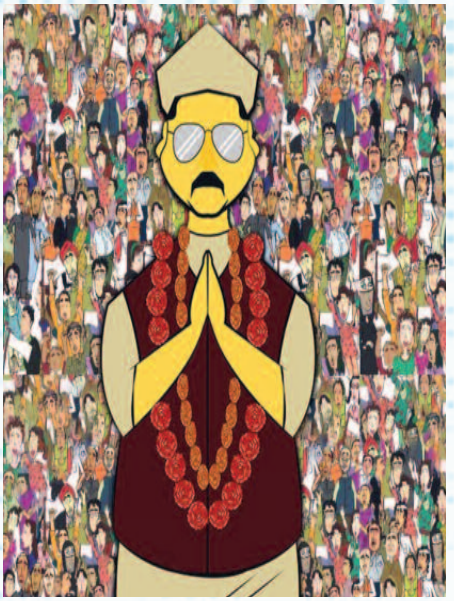

लोकतंत्र दागी राजनीति से कब मुक्त होगा? 23

मातृछाया ऑर्थो एण्ड हेल्थ केयर

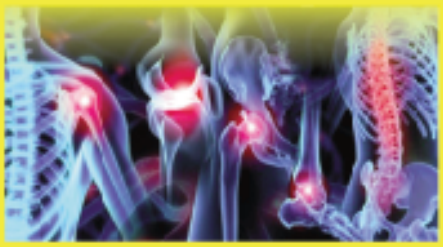

Consultant Trauma & Spinal Surgeon

हड्डी, जोड़, रीढ़, नस एवं गठिया रोग विशेषज्ञ

विशेषता:

1. यहां हड्डी रोग से संबंधित सभी रोगों का इलाज होता है।
2. मशीन के द्वारा टूटे-हड्डी बैठाने की सुविधा उपलब्ध है।

विशेषता:

3. स्पाइन सर्जरी की भी सुविधा है।
4. Total Joint Replacement विशेषज्ञों की टीम के द्वारा सस्ते दरों पर की जाती है।

24 HRS.

ORTHO & SPINAL EMERGENCY

Dr. Rakesh Kumar

M.B.B.S. (Pat), M.S. (Pat), M.Ch.

Ortho Fellowship in Spine Surgery

Indian Spinal Injury Centre, New Delhi

G-43, P.C. Colony, Kankarbagh, Patna-20, Mob. - 7484814448, 9504246216

राजीव रंजन
संपादक
rradvocate@gmail.com

कर्नाटक सरकार ने अपने स्कूलों और कालेजों में हिजाब (शिरोवस्त्र) पहनने पर पायवंदी लगायी है। इस पायवंदी से सीधा असर मुस्लिम छात्राओं को हो रहा है, क्योंकि मुस्लिम छात्राओं अपने सिर पर हिजाब लगाकर स्कूल में पढ़ने आती है।

देखा जाय तो मुसलमान लोग अपने सिर पर तुर्की टोपी और अन्य लोग गोल टोपी या पगड़ी पहनते हैं। जो उनके धर्म का द्योतक है। लेकिन यह सब पहनामा शिक्षण-संस्थाओं में होता है तो वह अलगाववाद का प्रतीक बन जाता है। जो लड़कियाँ हिजाब पहनती है, वे अलग से दिखाई पड़ती है कि वे मुसलमान है। जबकि मुसलमान के अतिरिक्त हिन्दू और इसाई लड़कियाँ अपने सिर पर कुछ भी नहीं पहनती है।

इस सन्दर्भ में कर्नाटक सरकार का कहना है कि उसने यह आदेश 1983 के अपने एक कर्नाटक शिक्षा कानून के तहत जारी किया है, जिसमे कहा गया है कि छात्र-छात्राओं को वही वेषभूषा पहनकर आना होगा, जिसका प्रावधान सरकार या वह शिक्षा-संस्थान करता है। जबकि इस प्रावधान के विरूद्ध कुछ लोगों ने अदालत में याचिका भी दायर किया है।

सरकार का मानना है कि इस नियम से नागरिकों के मूल अधिकारों का उल्लंघन बिल्कुल नहीं होता है। शिक्षा संस्थाओं में सारा वातावरण एकरूपतामय होना चाहिए। कक्षा में बैठनेवालों के बीच जाति, मजहब, ऊच-नीच आदि का कोई भेद भाव नहीं होना चाहिए। सबको एक-जैसे वातावरण में रहकर ही शिक्षा-ग्रहण करनी चाहिए। यह बात बहुत ही आदर्श मंडित है लेकिन जहां तक हिजाब का सवाल है, उसमें कोई आत्तिजनक नहीं दिखाई पड़ता।

सर्वविदित कि मुस्लिम महिलाएं ही नहीं, हिन्दू महिलाएँ भी गाँवों में अभी भी घुंघट करती हैं और शहरों में तो वे सिर पर पल्लू भी रखती हैं, जैसे मुसलमान सिर पर तुर्की टोपी और अन्य लोग गोल टोपी या पगड़ी पहनते हैं। लेकिन यह सब काम शिक्षण-संस्थाओं में होता है तो वह अलगाववाद का प्रतीक बन जाता है, क्योंकि जो लड़कियाँ हिजाब पहनती है, वे अलग से दिखाई पड़ती है कि वे मुसलमान है।

कर्नाटक सरकार का कहना है कि लड़कियां अपने घर या बाजार में अन्यत्र हिजाब पहनें तो उसमें कोई बुराई नहीं है लेकिन शिक्षा-संस्थाओं में सबकी वेषभूषा एक जैसी होनी चहिए।

यदि भारत के मुसलमान चाहे तो वे अपना नाम, वेशभूषा, खान-पान आदि में भी एकदम भारतीय ढंग में रखे तो भी उनके मुसलमान होने में किसी को जरा भी शक नहीं होगा। बल्कि भारत में यदि मुसलामान और इसाई मांसाहार बंद कर दें तो यह बहुत से हिन्दुओं के लिए प्रेरणा-स्रोत बन सकता हैं। ऐसा करने से भारतीय मुसलमान दुनियाँ के सर्वश्रेष्ट मुसलमान और ईसाई कहला सकते हैं और फिर भारत दुनियाँ का सबसे बड़ा लोकतंत्र ही नहीं, दुनियाँ का सर्वश्रेष्ठ सर्वमावेशी राष्ट्र भी हो जायेगा।

कल भी सूरज निकलेगा, सब तुझको दिखाई देंगे
पर हम न नजर आएंगे

कल भी सूरज निकलेगा, कल भी पंछी गाएंगे, सब तुझको दिखाई देंगे, पर हम न नजर आएंगे... लता मंगेशकर आज हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनका ये गाना अमर हो गया। उन्हें क्या पता कि उनका गाया ये गाना उन्हीं के लिए है। बेशक, लता मंगेशकर का म्यूजिक इंडस्ट्री में योगदान अतुलनीय था, जिसे कभी नहीं भुलाया जा सकता। 78 साल के करियर में लता मंगेशकर ने 30 हजार से ज्यादा गाने गाए। लता को कई सारे पुरस्कारों से नवाजा गया। वे तीन बार नेशनल अवॉर्ड विनर रही। दादा साहेबवॉर्ड और भारत रत्न से भी उन्हें नवाजा गया। संगीत में सुरों की लता एक अतुलनीय आवाज का खामोश हो जाना, एक पाक साफ आवाज का गुम हो जाना, देश हीं दुनिया को भी स्तब्ध कर जाना, किसी के गले के नीचे नहीं उतर रहा। त्याग, समर्पण, संघर्ष से बनी लता। देश की सरगम में सुरों की लता। जब- जब देश भक्ति का आवाज उठेगी तब-तब उनका यह गाना ह्यए मेरे वतन के लोगों, जरा आंख में भर लो पानी लोगों के कानों में गूंजता रहेगा

सुरेश गांधी

रातोंरात कोई गायक या गायिका नहीं हो जाता। बरसों लगते हैं। रियाज की कसौटी कसती जाती है। लेकिन कभी फिर कोई आवाज ऐसी आती है, जिसे सुन कर लगता है कि उसके कंठ में वाग्देवी का वास है। लता मंगेशकर वही थीं। ईश्वरप्रदत्त प्रतिभा के साथ. कोकिल कंठी. स्वर साम्राज्ञी। लता से पहले और उनके दौर में भी अनेक मीठी-सुरीली-मखमली आवाजें हुईं मगर लता जैसी दूसरी आवाज नहीं थी। क्या भविष्य में होगी? फिल्म संगीत की

वर्तमान मुर्दा स्थिति को देख करते हुए कहा जा सकता है कि शायद सदियां लग जाएं, फिर भी दूसरी लता नहीं हो पाएगी। लता की आवाज देश-दुनिया के करोड़ों लोगों की दैनिक दिनचर्या का हिस्सा है। कोई पल शायद ही होता होगा, जब दुनिया के किसी न किसी कोने में लता मंगेशकर का कोई न कोई गीत बज न रहा हो। सुबह के भजनों से लेकर रात को सोते हुए तकिये के पास रखे मोबाइल में बजते ओल्ड इज गोल्ड गाने। लता मंगेशकर गुजरने के बाद भी अपनी आवाज के साथ हमारे बीच बनी रहेंगी। लता सरहदों से परे थीं। उन्हें सिर्फ भारत के करोड़ों संगीत-प्रेमियों ने नहीं खोया है। पूरी दुनिया में जहां-जहां हिंदी का गीत-संगीत है, वहां-वहां लता थीं और अपनी आवाज के साथ रहेंगी।

सुर साम्राज्ञी, परम श्रद्धेय ह्नस्वर कोकिलाह्न लता मंगेशकर ने 5 साल की उम्र में काम करना शुरू कर दिया। जिस उम्र में बच्चे खेलते-पढ़ते हैं तब लता मंगेशकर ने घर की जिम्मेदारी संभाली। अपने भाई-बहनों के बेहतर भविष्य के लिए कभी शादी नहीं की। लता मंगेशकर चाहे ये दुनिया छोड़कर चली गई हैं, लेकिन अपने सदाबहारे गानों की विरासत फैंस के लिए छोड़ गई हैं। लता दीदी के इन गानों ने उन्हें इस दुनिया में अमर कर दिया है। देश ही नहीं, समूचे विश्व ने एक ऐसी स्वर साधिका को खो दिया, जिन्होंने अपनी मधुर आवाज से जीवन में आनंद घोलने वाले असंख्य गीत दिए। लता दीदी का तपस्वी जीवन स्वर साधना का अप्रतिम अध्याय है। सुरों की कोकिला लता मंगेशकर म्यूजिक की दुनिया का एक पूजनीय नाम हैं। लता मंगेशकर ने जब भी कोई गाना गाया अपनी आवाज से जादू चलाया। उनकी आवाज में न जाने कैसी कशिश थी, जो सुनने वाला सुनता रह जाता। पिछले कई सालों से वो म्यूजिक इंडस्ट्री पर राज कर रही थीं। लता मंगेशकर के लाखों-करोड़ों चाहने वाले हैं। लता का असली नाम कुमारी लता दीनानाथ मंगेशकर था। लता मंगेशकर के पिता का नाम पंडित दीनानाथ मंगेशकर था। उनके पिता मराठी थियेटर के मशहूर एक्टर और नाट्य संगीत म्युजिशियन थे। इसलिये संगीत की कला उन्हें विरासत में मिली थी।

लता जी के पिता को अपने पिता से ज्यादा माता से लगाव था। दीनानाथ की मां येसूबाई देवदासी थीं। वो गोवा के ंगेशीह्न गांव में रहती थीं। वो भी मंदिरों में भजन-कीर्तन कर जिंदगी का गुजारा करती थीं। बस यहीं से दीनानाथ को ंगेशकरह्न नाम का टाइटल मिला। जन्म के समय लता जी का नाम हेमा रखा गया था पर एक बार उनके पिता दीनानाथ ने ह्नभावबंधनह्न नाटक में काम किया। जिसमें एक फीमेल कैरेक्टर का नाम ह्नलतिकाह्न था। लता जी के पिता को ये नाम इतना पसंद आया कि उन्होंने जल्दी से अपनी बेटी ह्नहेमाह्न का नाम बदलकर ह्नलताह्न रख दिया। ये वही छोटी ह्नहेमाह्न है, जिसे पूरी दुनिया आज ह्नलता मंगेशकरह्न के नाम से जानती है। संगीत की दुनिया में लता जी एक बड़ा नाम हैं और यहां आने वाला हर शख्स उन्हें देवी मानता है। अपनी गायिकी के दम पर उन्हें बड़े अवॉर्ड्स से नवाजा गया था। लता मंगेशकर को दादासाहब फाल्के और भारत रत्न अवॉर्ड से भी सम्मानित किया गया था। अपने सिंगिंग करियर में उन्होंने कई सदाबहार गाने गाये थे, जो हमेशा ही म्यूजिक प्रेमियों के फेवरेट बने रहेंगे।

लता मंगेशकर ने अनेक भाषाओं में हजारों गीत गाए, लेकिन एक गाना ऐसा भी है, जो अगर वह नहीं गातीं तो शायद उसका वह असर नहीं पैदा होता, जो

> “ सुर साम्राज्ञी, परम श्रद्धेय ह्नस्वर कोकिलाह्न लता मंगेशकर ने 5 साल की उम्र में काम करना शुरू कर दिया। जिस उम्र में बच्चे खेलते-पढ़ते हैं तब लता मंगेशकर ने घर की जिम्मेदारी संभाली। अपने भाई-बहनों के बेहतर भविष्य के लिए कभी शादी नहीं की। लता मंगेशकर चाहे ये दुनिया छोड़कर चली गई हैं, लेकिन अपने सदाबहारे गानों की विरासत फैंस के लिए छोड़ गई हैं।

समय की नदी के निरंतर बहते हुए आज तक बरकरार है. कवि प्रदीप ने निश्चित ही जो लिखा कि ऐ मेरे वतन के लोगों... वह बेहतरीन है. इस गीत का कोई जोड़ नहीं. कवि प्रदीप की लेखनी की कोई तुलना नहीं. मगर लता ने अपनी आवाज में जिन भावनाओं में डूब कर इस गीत को गाया, उसे सुन कर ही महसूस किया जा सकता है. सैकड़ों बार सुन चुकने के बाद भी आप जब फिर इस गाने को सुनें और इससे जुड़ जाएं तो आंखें अपने आप नम हो जाती हैं. तय है कि कुछ है इस आवाज में, आंखें यूं ही नम नहीं होतीं. लता मंगेशकर अपनी गायकी के साथ तो हमारे बीच सदा रहेंगी ही, लेकिन लोगों के साथ अपने व्यवहार के लिए भी वह सदा याद रखी जाएंगी. 70 से अधिक वर्ष सार्वजनिक जीवन में बिताने, करोड़ों-करोड़ फैन्स के साथ मिलने-जुलने और लाखों स्टेज शो करने के बावजूद उनका व्यवहार सदा शालीन रहा. उनके चेहरे पर सदा मुस्कान और विनम्रता रही. उनका सार्वजनिक जीवन एक आदर्श है. आज के दौर में अगर किसी कलाकार लोगों का इतना प्यार मिले तो आप जानते हैं कि वह रात-दिन विज्ञापन फिल्में करके पैसे कमाने की मशीन बन जाएगा. घमंड में चूर होकर, उसके पैर जमीन पर नहीं रह जाएंगे. मगर लता आदर्श थीं. अपनी कला हो या फिर जीवन में आया ऐश्वर्य, उसका भौंडा प्रदर्शन उन्होंने कभी नहीं किया. किसी से कभी ऊंची आवाज में बात नहीं की. अपने आलोचकों से भी नहीं. अपनी मिमिक्री कर चुटकुले बनाने वालों से भी नहीं.

51 साल में मिले 75 से ज्यादा अवॉर्ड

लता दीदी को 51 साल में 75 से ज्यादा अवॉर्ड मिले। उन्हें महज 30 साल की उम्र में पहला अवॉर्ड मिला था। साल 2001 में उन्हें केंद्र सरकार ने भारत रत्न से नवाजा था। आखिरी बार उन्हें 2 साल पहले टीआरए की मोस्ट डिजायर्ड अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

ऐ मेरे वतन के लोगो सुन रो चुके हैं नेहरू-मोदी

लता मंगेशकर इस दुनिया में नहीं रहीं। उनके निधन की खबर सुनकर आज हर आंख नम है। देश की बुलबुल अब और नहीं गा सकेगी लेकिन उनकी आवाज और गाने अमर हैं। वह हमेशा लोगों के दिलों में रहेंगी। लता मंगेशकर के गाने कानों से दिल की गहराइयों में उतरते हैं। उनके कुछ गीत तो ऐसे हैं जिन्हें सुनकर बड़ी से बड़ी हस्तियां अपने आंसू नहीं रोक पाईं। ऐसा ही एक गाना है ऐ मेरे वतन के लोगों...जरा आंख में भर लो पानी। इस गाने को सुनकर उस वक्त देश के प्रधानमंत्री रहे जवाहर लाल नेहरू भी रो पड़े थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी रो चुके हैं।

शहीदों के लिए लिखा गया था गाना

सुर सम्राज्ञी लता मंगेशकर का गाया एक-एक गाना लोगों की रूह छूने वाला है। सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में उनके गाने पसंद किए जाते हैं। लता ने हजारों गाने गाए हैं, इनमें से ऐ मेरे वतन के लोगो बेहद खास है। लता ने 27 जनवरी 1963 में यह गाना दिल्ली के रामलीला मैदान में गाया था। उस वक्त प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू देश के प्रधानमंत्री थे। यह गाना उन सैनिकों की याद में लिखा गया था जो कि 1962 के भारत-चीन युद्ध में शहीद हो गए थे। लता मंगेशकर से पहले यहा गाना गाने से मना कर दिया था। गाने के लिरिसिस्ट कवि प्रदीप ने लता को मनाया था। लता लाइव परफॉर्मेंस के पहले सिर्फ एक बार रिहर्सल कर पाई थीं। लता ने खुद ये सब खुलासे, 2014 में इंडियन एक्सप्रेस को दिए एक इंटरव्यू में किए थे।

रहें ना रहें हम, महका करेंगे

लता जी देश की धरोहर हैं, उनकी कमी हमेशा खलेगी। ऐसी हस्ती सदियों-सदियों तक अमर रहती हैं। उनके गीत सदाबहार हैं। उनके इस दुनिया से चले जाने से पूरे देश में शोक की लहर है। लता मंगेशकर के निधन से हर कोई दुखी है। 92 साल की उम्र में लता मंगेशकर के चले जाने से बॉलीवुड शोक में डूब गया है। लता मंगेशकर ने अपने करियर में 30 हजार से ज्यादा गाने गाए हैं। उन्होंने कई भाषाओं में गाने गाए हैं। इतना ही नहीं लता दीदी ने हर दशक की टॉप एक्ट्रेस के लिए अपनी आवाज दी है। उन्हें में से एक श्रीदेवी भी हैं। लता मंगेशकर श्रीदेवी की एक्टिंग की दीवानी थीं। उन्होंने श्रीदेवी के लिए कई गाने भी गाए हैं। लता मंगेशकर के गानों की वजह से श्रीदेवी इंडस्ट्री में छा गई थीं।

दोनों ही एक-दूसरे की बहुत बड़ी फैन थीं। जहां एक तरफ लता दीदी श्रीदेवी की एक्टिंग की तारीफ करती थीं तो वहीं श्रीदेवी ने एक बार कहा था कि जब लता जी मेरे लिए गाना गाती हैं मुझे लगता है मेरा आधा काम हो जाता है। वह सिर्फ गाना नहीं गाती थीं बल्कि इमोशन्स भी एक्सप्रेस करती थीं। हम अभिनेत्रियों को बस उनकी आवाज फॉलो करनी होती थी।

मेरे हाथों में नौ नौ चूड़ियां हैं

लता मंगेशकर ने 1980 में प्लेबैक सिंगिंग छोड़कर क्लासिकल म्यूजिक पर फोकस करने का फैसला लिया था। मगर यश चोपड़ा ने लता मंगेशकर से कहा था कि वह चाहते हैं कि वह उनकी फिल्म चांदनी के लिए गाएं। लता जी श्रीदेवी की वजह से गाने के लिए तैयार हुईं थीं और उन्होंने ये गाना गाया था। इस गाने से श्रीदेवी हर जगह छा गई थीं। श्रीदेवी और अनिल कपूर की फिल्म लम्हे का मोरनी बागा मा गाना लता मंगेशकर ने गाया था। इस गाने पर श्रीदेवी ने बेहद खूबसूरत डांस किया था। लता मंगेशकर ने श्रीदेवी की फिल्म चांदनी में दो गाने गाए थे। इसमें दूसरा गाना तेरे मेरे होठों पर गाना था। इस गाने को श्रीदेवी और ऋषि कपूर पर फिल्माया गया था। श्रीदेवी की नगिना फिल्म हिट साबित हुई थी। लता जी ये गाना नहीं गाना चाहती थीं मगर फिर कंपोजर लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल ने उन्हें ये गाना गाने के लिए मनाया था। ये गाना सुपरहिट साबित हुआ था।

आंख यूं ही नम नहीं होती...

लता मंगेशकर के करिअर की तरह उनका जीवन भी कई मायनों में बेहद उल्लेखनीय है। पिता दीनानाथ मंगेशकर (1900-1942) की नाटक मंडली थी और रंगमंच पेशा था। पिता ने लता को अभिनय के साथ-साथ गीत-संगीत में भी तैयार किया। लेकिन पिता का साया बहुत कम में उनके सिर से उठ गया। मां समेत चार भाई-बहनों की जिम्मेदारी सबसे बड़ी, मात्र 13 साल की लता पर आ गई। यहां से आप उनके जीवन में जिम्मेदारी, समझ, स्नेह, करुणा, ममता और निस्वार्थ सेवा को देखते हैं। उन्होंने जीविका के लिए, परिवार के पालन-पोषण के लिए संघर्ष किया। पिता से जो विरासत मिली थी, उसे ही लेकर वह आगे बढ़ीं और सिनेमा में मौके तलाशे। कुछ अभिनय. कुछ गीत. आसान कुछ नहीं था. उस पर परिवार को संभालना और भाई-बहनों का जीवन संवारना. लता निरंतर लगी रहीं. यह उनके जीवन की तपस्या थी. आज पूरा मंगेशकर परिवार समृद्ध है और

“मगर लता ने अपनी आवाज में जिन भावनाओं में डूब कर इस गीत को गाया, उसे सुन कर ही महसूस किया जा सकता है. सैकड़ों बार सुन चुकने के बाद भी आप जब फिर इस गाने को सुनें और इससे जुड़ जाएं तो आंखें अपने आप नम हो जाती हैं. तय है कि कुछ है इस आवाज में, आंखें यूं ही नम नहीं होतीं. लता मंगेशकर अपनी गायकी के साथ तो हमारे बीच सदा रहेंगी ही, लेकिन लोगों के साथ अपने व्यवहार के लिए भी वह सदा याद रखी जाएंगी. 70 से अधिक वर्ष सार्वजनिक जीवन में बिताने, करोड़ों-करोड़ फैन्स के साथ मिलने-जुलने और लाखों स्टेज शो करने के बावजूद उनका व्यवहार सदा शालीन रहा.

लगभग सभी एक ही जगह पर रहते हैं. लता उनके लिए वट-वृक्ष बन गईं. एक समय वह भी था जब फिल्म महल (1949) के गाने, आएगा आने वाला... की रिकॉर्डिंग के लिए लता स्लीपर पहन कर स्टूडियो गई थीं और एक समय यह भी है कि अपने पीछे वह तीन सौ करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति छोड़ गई हैं. लता अपने भाई-बहनों से लेकर पूरी फिल्म इंडस्ट्री और जाने-पहचाने-अनजाने लोगों के लिए दीदी बन गईं. उनकी मातृभाषा मराठी में, लता ताई. उन्होंने अपने हर मिलने-जुलने वाले को किसी बड़ी बहन के जैसा स्नेह और आशीर्वाद दिया. लता का जीवन देखें तो सचमुच वह बड़ी बहन होने का कर्तव्य निभाती रहीं. अगर रामायण में आपको बड़े भाई का आदर्श, त्याग और छोटों के प्रति स्नेह भगवान राम में दिखता है तो बड़ी बहन के रूप में वही आदर्श, त्याग और छोटों के प्रति स्नेह कैसा हो सकता है, वह आप लता दीदी के जीवन में देख सकते हैं. छोटे भाई-बहनों को बनाने-संवारने के झंझावातों के बीच उन्हें शायद पता ही नहीं चला कि उनके जीवन में कभी बसंत आया या नहीं. हालांकि बसंत की आहट मिली भी होगी तो निश्चित ही उन्होंने अपने भाई-बहनों तथा उनके परिवार के लिए उसे अनदेखा कर दिया होगा.

उनकी आवाज अब स्वर्ग में गूंजेगी

सब कुछ होकर भी अंत में वह सबकी दीदी थीं. उनके व्यवहार में बड़प्पन झलकता था. उनकी विनम्रता और शालीनता सदा याद रहेगी. उन्हें भारत रत्न दिया गया तो वह सचमुच वैसी थीं. अपनी सादगी से उन्होंने फिल्म, खेल और राजनीति की दुनिया में दोस्त बनाए और निभाए. वह जब भी विदेश जाती थीं तो अपने दोस्तों-परिचितों के लिए तोहफे खरीद कर लाती थीं. ऐसा करना उन्हें अच्छा लगता था. मिलने-जुलने वाले उनके घर से खाली हाथ नहीं लौटते थे. लता मंगेशकर के गुजर जाने से सुरों की दुनिया में एक सन्नाटा पैदा हो गया है. लेकिन महानायक अमिताभ बच्चन ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए अपने ब्लॉग में सही लिखा है कि उनकी आवाज अब स्वर्ग में गूंजेगी.

मुझे ताउम्र अफसोस रहेगा

दिवंगत स्वर कोकिला लता मंगेशकर की जिंदगी से जुड़े इतने किस्से कहानियां हैं जिन्हें जानने बैठो तो शायद कई दिन निकल जाएं। ऐसा ही एक किस्सा है लता मंगेशकर की शादी का. ये बात तो हर कोई जानता है कि लता मंगेशकर ने कभी शादी नहीं की, ताउम्र वो कुंवारी ही रहीं और गायकी की उनकी पहली मुहब्बत रही. लेकिन बॉलीवुड के एक ऐसे जाने माने सिंगर और अभिनेता थे जिन्हें लता दीदी बहुत पसंद करती थी, इतना ही नहीं वो उनसे शादी भी करना चाहती थीं, लेकिन सिंगर की जीते जी ये मुमकिन ना हो सका. दरअसल, ये बात उन दिनों की है जब लता मंगेकर बहुत छोटी थीं और अपने पिता के साथ के.एल. सहगल के गाने सुनती थीं. लता ताई, के.एल सहगल के गाने सुनते-सुनते ही अपने पिता के साथ रियाज करती थीं. सिंगर की आवाज लता मंगेशकर की इतनी पसंद थी कि बड़े होकर उनसे शादी करना चाहती थीं. एक इंटरव्यू में लता ताई ने खुद इस बात का जिक्र भी किया था. सिंगर ने कहा था, ह्लजहां तक मुझे याद है, मैं हमेशा के.एल सहगल से मिलना चाहती थी. मैं कहा करती थी कि जब मैं बड़ी हो जाऊंगी तो इनसे शादी करूंगी. तब पापा मुझे समझाते थे कि जब तुम शादी करने उम्र में आ जाओगी तब तक सहगल साहब बूढ़े हो चुके होंगे.ह्ल दुख की बात ये रही कि लता मंगेशकर कभी के.एल. सहगल से मिल तक नहीं पाईं. सिंगर ने कहा था ह्लमुझे हमेशा हमेशा इस बात का दुख रहेगा कि मैं उनसे कभी मिल नहीं पाई. लेकिन बाद में उनके भाई की मदद से मै उनके पत्नी आशाजी और बच्चों से मिली थी जिन्होंने मुझे के.एल सहगल साहब की अंगूठी तोहफे में दी थी.ह्ल कहा जाता है उस दौर में लता मंगेशकर अपने लिए एक रेडियो खरीदकर लाई थीं. जब उन्होंने रेडियो चलाया तो उन्हें के.एल. सहगल के निधन की खबर सुनाई थी. अपने पसंदीदा गायक के निधन की खबर सुन लता दीदी को झटका लगा था जिसके बाद वो रेडियो दुकान पर वापस कर आई थीं.

पश्चिम में खौफ, पलायन और दंगो की याद पर होगा मतदान

बसंती बयार के बीच सूबे में चुनावी अंधड़ चलने लगी है। गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, दंगा, गुंडागर्दी, पलायन, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार मिटाने, महंगाई, राम मंदिर, बाबा विश्वनाथ धाम, कृष्ण मंदिर से लेकर गर्मी-चर्बी और हिंदुगर्दी, कानून का राज, जिन्नावाद व राष्ट्रवाद नेताओं जुबान पर है। खासकर पहले चरण में पश्चिमी इलाके के 15 जिलों की 73 सीटों के लिए होने वाले मतदान ने सियासी तपिश बढ़ा दी है और जब मतदान में तीन ही दिन बचे है तो दलों ने पूरी ताकत झोक रखी है। भाजपा, सपा-रालोद, कांग्रेस व बसपा समेत अन्य दलों के प्रत्याशी मैदान मारने के लिए हर हथकंडे अपना रहे हैं। लेकिन चुनावी के ध्रुवीकरण व जातीय गठजोड़ का मोड़ देने की कोशिशों ने सारे समीकरणों को उलझा दिया है। जबकि खामोशी की चादर ओढ़े मतदाताओं को इंतजार है तो बस 10 फरवरी की वोटिंग का। उनके जेहन में आज भी वह खौफनाक मंजर घूम रहा, जिसमें किसी ने अपने भाई को कटते देखा है तो बेटियों के संग दुष्कर्म। हो जो भी यहां के लोगों में साम्प्रदायिकता, पलायन, दंगा ही मुद्दा है और दलों ने भी इसी के इर्द-गिर्द अपना चुनावी मुद्दा बना रखा है।

सुरेश गांधी

आज से ठीक तीसरे दिन यानी 10 फरवरी को पश्चिम के 11 जिलों में पहले फेज की वोटिंग होगी। यहां 58 विधानसभा सीटों पर कुल 623 प्रत्याशी अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। वैसे भी पश्चिम यूपी को चुनावी प्रयोगशाला कहा जाता है। यहां हर बार राजनीति किसानों के मसले से शुरू होती है और चुनाव की चैखट पर पहुंचते-पहुंचते ध्रुवीकरण का रसायन गाढ़ा होने लगता है। 2013 में मुजफ्फरनगर दंगों के बाद चुनावी जंग में बयानों के तीरों की संख्या बढ़ी। 2014 लोस, 2017 विस एवं 2019 लोक चुनावों में भाजपा को एकतरफा जीत मिली। गठबंधन बने और बिगड़े। अब सपा मुखिया अखिलेश यादव एवं रालोद मुखिया चैधरी जयंत सिंह ने हाथ मिलाकर पश्चिम में भाजपा को घेरने का प्रयास किया है। लेकिन इस बार चुनावी हवा में बयानों की आंच ज्यादा महसूस हो रही है। अखिलेश यादव के जिन्ना वाले बयान के बाद गर्मी, चर्बी व हिदूगर्दी पर आ टिकी है। भाजपा ने बाबा के बुलडोजर सहित कानून व्यवस्था को चुनावी मुद्दा बना हुआ है। इसी पर सियासी पार्टियां मैदान में जंग लड़ते देखी जा सकती हैं। सत्तारूढ़ दल के सारे बड़े नेता ने इसी मुद्दे को लेकर पिच में डटे हैं। जबकि विपक्षी साम्प्रदायिकता, नफरत फैलाने की बात कहकर माहौल को अपने पक्ष में करने की भरपूर कोशिश में जुटे है। मतलब साफ है पश्चिम यूपी की राजनीतिक तपिश ऐसी कि चुनावी जंग में खेतीबाड़ी के मुद्दे मुरझा गए, और ध्रुवीकरण की नई फसल

खड़ी हो गई। दिग्गजों के बयानों ने चुनावी मौसम को गर्म कर दिया है। जहां सीएम योगी का मई-जून में शिमला बना देने का बयान सुर्खियों में है, वहीं रालोद मुखिया ने भाजपा की चर्बी उतार लेने की बात कहकर राजनीतिक खिंचाव को साबित कर दिया।

बता दें, पश्चिम उप्र में बयानबाजी की आंच पूरब तक असर करेगी। यही वजह है कि अब कानून व्यवस्था को मुद्दा बनाकर धुव्रीकरण कराने का प्रयास हो रहा है। 2013 में हुए मुजफ्फर नगर के दंगों की यादे ताजा की जा रही हैं। भाजपा की ओर से बताने का प्रयास हो रहा है कि पहले की तस्वीर क्या थी अब क्या बदलाव हुए हैं। हलांकि यह मुद्दे कितने मुफीद होंगे यह तो 10 मार्च के बाद पता चलेगा। लेकिन सच यही है कि बीजेपी और सपा-रालोद गठबंधन के बीच कहीं कांटे की टक्कर है तो कहीं कांग्रेस और बसपा के अलावा असदुद्दीन ओवैसी भी लड़ाई को त्रिकोणीय व बहुकोणिय बनाते दिख रहे है और मुसलिम मतदाताओं को अपने तरीके से रिझाने के लिए पूरे दमखम के साथ जुटे हुए हैं। हाल ही में ओवैसी पर हुए हमले से यहां का राजनीतिक माहौल कुछ ज्यादा ही गरमा गया है। ये सवाल उठना लाजिमी है कि आखिर मतदान से ठीक पहले ओवैसी क्यों चर्चा का केंद्र बन गए हैं? दूसरा सवाल ये है कि क्या ओवैसी पर हुए हमले से पश्चिम यूपी के सिसायी समीकरण बिगड़ सकते हैं? हालांकि लोकसभा चुनाव में टर्निंग प्वाइंट बने पश्चिमी यूपी से ही भाजपा सबसे ज्यादा उम्मींदे लगाएं है। बेशक, पश्चिम मुस्लिम बहुल इलाका है। 10 फरवरी को होने वाले मतदान में दंगे झेल चुके मुजफ्फरनगर और शामली के अलावा मेरठ, आगरा, मथुरा, नोएडा, बुलंदशहर, सिकंदराबाद, बागपत, फतेहपुर सीकरी, एटा आदि क्षेत्र शामिल हैं। देखा जाएं तो यहां सबसे बड़ा मुद्दा खौफ, पलायन, गुंडागर्दी, दंगों की याद व सांप्रदायिकता ही है। चाहे फिर मतदाता इसके पक्ष में हो या फिर विरोध में। सभी प्रमुख दलों के नेता विकास की बात तो कर रहे हैं लेकिन मौका मिलते ही वह हिंदू-मुस्लिम मतों के मसले को भी उठाते हैं। अधिकांश हिस्सा मुज्जफरनगर दंगों से प्रभावित दिख रहा है। सांप्रदायिक तनाव अब इस क्षेत्र में आम हो गया है। इस बार भी बीजेपी कैराना की याद दिला रही है...जिन्नावाद के आरोप लगा रही है। दंगे-अपराध और तमंचावाद की बात कर रही है। वहीं सपा-रालोद गठबंधन के अलावा ओवैसी, कांग्रेस व बसपा मुस्लिम वोटों के भरोसे है। बसपा अधिकतर सीटों पर मुस्लिम दलित समीकरण के साथ लड़ रही है। सपा-रालोद गठबंधन पर लोगों का कहना है कि सपा ने गठबंधन का दांव मुस्लिमों को अपने पक्ष में बिखरने से रोकने के लिए चला है। कहा जा सकता है गठबंधन कई इलाके में जातिगत समीकरण बिगाड़ने में जुटा है तो कांग्रेस भी कई सीट पर वोटकटवा के रूप में नजर आ रही है। बता दें, पश्चिमी यूपी ने पीएम मोदी को प्रधानमंत्री बनाने से लेकर योगी को सीएम बनाने में एक अहम भूमिका निभाई है। और इस बार भी पीएम मोदी से लेकर अमित शाह, जेपी नड्डा समेत बीजेपी के कई नेता पश्चिमी उत्तर प्रदेश का दौरा कर चुके हैं। पश्चिमी यूपी में सहारनपुर, शामली, मुजफ़्फरनगर, बिजनौर, मुरादाबाद, संभल, रामपुर, अमरोहा, मेरठ, बागपत, गाजियाबाद, हापुड़, गौतम बुद्ध नगर और बुलंदशहर जिले आते हैं। वहीं, अगर इस क्षेत्र में अहम सीटों की बात करें यहां कैराना, मुजफ्फरनगर, खतौली, नगीना, नजीबाबाद, मुरादाबाद, चंदौसी, देवबंद, सहारनपुर, हसनपुर, मेरठ, मुरादनगर, लोनी, गाजियाबाद, मोदीनगर, नोएडा, दादरी, जेवर, धौलाना, हापुड़ शामिल हैं जहां पहले चरण और दूसरे चरण के लिए 10 फरवरी और 14 फरवरी को मतदान होना है।

2017 का पार्टियों को मिला वोट शेयर
-भाजपा - 41 फीसदी
- सपा- 22 फीसदी
- बीएसपी- 21 फीसदी
- कांग्रेस - 8 फीसदी
- अन्य- 8 फीसदी

वर्ष 2017 में पश्चिम यूपी में किसे मिलीं कितनी सीटें
भाजपा - 52 सीट
स्पा -15 सीट
कांग्रेस - 2 सीट
बीएसपी- 1 सीट
अन्य - 1 सीट

“पश्चिम उप्र में बयानबाजी की आंच पूरब तक असर करेगी। यही वजह है कि अब कानून व्यवस्था को मुद्दा बनाकर धुव्रीकरण कराने का प्रयास हो रहा है। 2013 में हुए मुजफ्फर नगर के दंगों की यादे ताजा की जा रही हैं। भाजपा की ओर से बताने का प्रयास हो रहा है कि पहले की तस्वीर क्या थी अब क्या बदलाव हुए हैं। हलांकि यह मुद्दे कितने मुफीद होंगे यह तो 10 मार्च के बाद पता चलेगा।

पश्चिमी यूपी का गणित

पश्चिमी यूपी में लोकसभा की 27 सीटें हैं। 2014 में बीजेपी ने 27 में से 24 सीटें जीती थीं। इसी तरह 2019 के लोकसभा चुनावों में भी बीजेपी यहां 19 सीटें जीतने में कामयाब रही थी। 2017 के विधानसभा चुनावों में बीजेपी को सत्ता दिलाने में पश्चिमी यूपी की मुख्य भूमिका थी, क्योंकि यहां विधानसभा की 136 में से 109 सीटें बीजेपी ने जीती थीं।

मुस्लिम-जाट और यादव

वेस्टर्न यूपी में इस बार सपा और रालोद का गठबंधन है। मुस्लिम, जाट और यादव वोट मिलकर ही 51 फीसदी हो रहे हैं। यही वजह है कि बीजेपी चुनाव जीतने के लिए हर हथकंडे अपना रही है। योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि ये चुनाव 80 बनाम 20 का होगा, 80 फीसदी समर्थन एक तरफ होगा, 20 फीसदी दूसरी तरफ होगा। मुझे लगता है कि 80 प्रतिशत सकारात्मक ऊर्जा के साथ आगे बढ़ेंगे, 20 फीसदी हमेशा विरोध करने वाले हैं, विरोध करेंगे, लेकिन सत्ता बीजेपी की आएगी। बीजेपी फिर सबका सबके विकास अभियान को आगे बढ़ाने का काम करेगी। मतलब साफ है योगी 80 प्रतिशत हिंदू बनाम 20 प्रतिशत मुसलमानों की बात करते हैं? हालांकि योगी इसे 80 प्रतिशत सीटों पर बीजेपी जीतेगी और 20 प्रतिशत पर सपा, बसपा कांग्रेस जैसी पार्टियां होंगी की बात करते है। बता दें, यूपी में करीब 20 फीसदी आबादी मुसलमानों की है। 143 सीटें ऐसी हैं, जहां मुस्लिम वोट्स का प्रभाव है। 107 सीटों पर मुस्लिम मतदाता जीत-हार तय करते हैं। 70 सीटों पर मुस्लिम आबादी 20 से 30 प्रतिशत हैं। 43 सीटों पर मुस्लिम जनसंख्या 30 प्रतिशत से ज्यादा है। 36 सीटें ऐसी हैं, जहां मुस्लिम प्रत्याशी अपने दम पर जीत सकता है। पश्चिमी यूपी में 9 सीटें ऐसी हैं, जहां मुस्लिम प्रत्याशी आसानी से जीत सकता है। सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादी वाली सीट रामपुर है, जहां 50 प्रतिशत से ज्यादा मुसलमान हैं। अब बीजेपी को ये डर है कि अगर अखिलेश और जयंत के गठबंधन से मुसलमान और जाट वोट एक तरफ हो गए और उनके साथ यादव और दूसरी जातियां भी मिल गईं तो फिर बीजेपी के लिए कुछ नहीं बचेगा। इसीलिए बीजेपी पश्चिमी यूपी में अपना सबकुछ दांव पर लगा दी है।

कानून का राज ही बना मुद्दा

पश्चिम किसान आंदोलन की वजह से प्रभावित रहा है। इस बार किसान आंदोलन और सपा और रालोद के गठबंधन से यहां भाजपा को चुनौती मिलती दिखाई दे रही है। भाजपा की ओर से गृहमंत्री अमित शाह, जेपी नड्डा, राजनाथ और योगी ने कमान संभाल रखी है। अमित शाह ने कैराना से प्रचार की शुरूआत की और पलायन का मुद्दा लोगों को याद दिलाया। इसके बाद बुलंदशहर,अलीगढ़ में मफिया अपराधी कानून व्यवस्था को लेकर विपक्ष को घेरने में लगे हैं। इसके अलावा उनके निशाने पर सपा के प्रत्याशियों की सूची हैं, जिसे बार-बार याद दिलाकर लोगों को झकजोर रहे हैं। साथ ही मुजफ्फरनगर के दंगों की याद दिला रहे हैं। यह भी बता रहे हैं कि 2014, 2017 फिर 2019 में क्या क्या बदलाव हुए हैं। मुजफ्फरनगर के दंगों के बाद भाजपा को सत्ता मिली थी। शाह ने मुजफ्फरनगर दंगों का जिक्र करते हुए कहा कि वो आज भी दंगों की पीड़ा को भूल नहीं पाए हैं। शाह ने आगे कहा कि अखिलेश सरकार ने मुजफ्फरनगर दंगे के समय पीड़ितों को आरोपी और आरोपियों को पीड़ित बना दिया। अखिलेश और जयंत के गठबंधन पर निशाना साधते हुए शाह ने कहा कि जयंत और वे साथ-साथ हैं। लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूं कि सिर्फ मतगणना तक ही दोनों साथ-साथ हैं। सरकार बनते ही अखिलेश जयंत को बाहर कर देंगे और आजम खान को अपने बगल में बैठा लेंगे। इसके बाद आपको आजम और अतीक ही दिखाई देंगे।जबकि सपा-रालोद दोनों अन्न की पोटली के जरिए किसानों के मुद्दे को जिंदा रखने का प्रयास कर रहे हैं।

ओवैसी पर हमले से गरमाई राजनीति

ओवैसी पर हमले का मामला संसद में गूंजा। आनन-फानन में मोदी सरकार ने उन्हें जेड सुरक्षा देने का ऐलान कर दिया। लेकिन ओवैसी ने लोकसभा में सुरक्षा लेने से इंकार कर दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें सुरक्षा नहीं बल्कि इंसाफ चाहिए।

“पश्चिमी यूपी में लोकसभा की 27 सीटें हैं। 2014 में बीजेपी ने 27 में से 24 सीटें जीती थीं। इसी तरह 2019 के लोकसभा चुनावों में भी बीजेपी यहां 19 सीटें जीतने में कामयाब रही थी। 2017 के विधानसभा चुनावों में बीजेपी को सत्ता दिलाने में पश्चिमी यूपी की मुख्य भूमिका थी, क्योंकि यहां विधानसभा की 136 में से 109 सीटें बीजेपी ने जीती थीं।

ओवैसी ने यह कहकर संविधान और लोकतंत्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई कि उन पर ह्यबुलेट चलाने वालों को जनता ह्यबैलेट पेपर से जवाब देगी। ओवैसी पर हमले के अगले दिन उनकी पार्टी के कार्यकर्ता सड़कों पर उतर आए और केंद्र सरकार से उन्हें सुरक्षा देने की मांग करने लगे। इससे मुसलिम समाज में ओवैसी के प्रति सहानुभूति लहर देखी जा रही है। इस लहर के वोटों में तब्दील होने की आशंका से मुसलिम वोटों के सहारे योगी सरकार को उखाड़ फेंकने का दावा कर रहे अखिलेश यादव की धड़कन बढ़ गई हैं।

ध्रुवीकरण की साजिश

ओवैसी पर हमला पश्चिम में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की साजिश हो सकती है। पहले चरण में मतदान वाली सीटों पर इसका असर पड़ सकता है। पहले चरण की 58 में से 12 सीटों पर ओवैसी की पार्टी के उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। इनमें से मुजफ्फनगर और मेरठ की तीन-तीन, गाजियाबाद में दो, हापुड़ में दो सीटों पर ओवैसी की पार्टी के उम्मीदवार ताल ठोक रहे हैं। इनके अलावा बुलंदशहर और अलीगढ़ जिले में एक-एक सीट पर उनकी पार्टी का उम्मीदवार किस्मत आजमा रहा है। ओवैसी के उम्मीदवार कहीं सपा-रालोद गठबंधन के मुसलिम उम्मीदवार की मुश्किलें बढ़ा रहे हैं तो कहीं बसपा और कांग्रेस के। ये स्थिति बीजेपी को राहत देने वाली है।

क्या कहते है मतदाता

संजय राठी ने कहा कि सभी दल ध्रुवीकरण से लेकर अन्य सभी दांवपेचों का इस्तेमाल कर रहे हैं। बसपा भी सोशल इंजीनियरिंग में जुटी हुई है। इस जद्दोजहद में सुरक्षा और कृषि कानून के मुद्दे तो जोर-शोर से उठ रहे हैं, पर अन्य अहम मुद्दे कहीं पीछे छूट रहे हैं। अब तो हर दांवपेच आजमाए जा रहे हैं। भाजपा जहां सुरक्षा के मुद्दे को बड़ा बनाए हुए है, तो सपा-रालोद गठबंधन किसानों के मुद्दों को उठाने की भरपूर कोशिश कर रहा है।

मुद्दे गयाब

कुछ मुद्दे ऐसे भी हैं जिनकी चुनाव के शुरूआत में खूब चर्चा हुई। पर, अब इन मुद्दों की तपिश वैसी नहीं दिख रही।अब तो चुनाव सुरक्षा के मुद्दे और ध्रुवीकरण की तरफ जाता नजर आ रहा है।

महंगाईः शुरू में महंगाई का मुद्दा चरम पर रहा था। विपक्षियों ने इसपर सरकार को खूब घेरा। खासकर डीजल-पेट्रोल के दामों को लेकर। कहा जाता रहा कि महंगाई किसानों की मुश्किलें बढ़ा रही है। कीटनाशक, उर्वरक के दामों से फसलों की लागत बढ□ का भी मुद्दा काफी समय तक गर्म रहा। पर, चुनावी गर्मी बढ़ते ही चचाओं में महंगाई का मुद्दा मंदी का मारा हो गया है।

रोजगारः विपक्षी दलों केएजेंडे में रोजगार बड़ा मुद्दा था। सरकार पर लगातार आरोप लगे कि युवाओं को नौकरियां नहीं मिलीं। स्थानीय स्तर पर कोई नई फैक्टरी नहीं लगाई गई। जो कुछ रोजगार था वह कोरोना काल में चला गया, पर सरकार ने मदद नहीं की। पर, चुनावी शोर में इसको लेकर भी कम आवाजें सुनाई दे रही हैं।

छुट्टा पशुः कई सालों से छुट्टा पशुओं का मुद्दा गूंजता रहा। हालांकि, सरकार ने गौशालाएं बनाकर भरपाई करने की कोशिश की। कहा कि प्रति गोवंश प्रति माह 930 रुपये सरकार देगी और कोई भी गोवंश का भरण-पोषण कर सकता है, पर लोगों ने इसे नाकाफी बताया। आलम यह रहा कि छुट्टा पशुओं का मुद्दा बढ़ता ही गया। ध्रुवीकरण के दौर में यह मुद्दा भी अब उतना नहीं सुनाई दे रहा।

स्वास्थ्य सेवाएं : जिला अस्पतालों की बदतर स्थितियां खूब मुद्दा बनीं। कोरोना काल में हालात बिगड़ तो सरकार पर ठीकरा फोड़ा गया। स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली का खूब शोर रहा, पर जब चुनाव सिर पर आए तो इस मुद्दे का शोर अब कुछ कम सुनाई दे रहा है।

गन्ना बकाया भुगतान एवं मूल्यः चुनावी शोर में गन्ना बकाया एवं मूल्य का मुद्दा कहीं दबता नजर आ रहा है। पहले गन्ने का मुद्दा खूब जोर-शोर से उठ रहा था। किसानों का पिछले सत्र का बकाया अब तक शत-प्रतिशत चुकाया नहीं गया है। किसान गन्ने का मूल्य कम बता रहे हैं। सरकार ने 25 रुपये की वृद्धि की पर किसानों ने इसे नाकाफी ही बताया।

> ओवैसी पर हमला पश्चिम में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की साजिश हो सकती है। पहले चरण में मतदान वाली सीटों पर इसका असर पड़ सकता है। पहले चरण की 58 में से 12 सीटों पर ओवैसी की पार्टी के उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। इनमें से मुजफ्फनगर और मेरठ की तीन-तीन, गाजियाबाद में दो, हापुड़ में दो सीटों पर ओवैसी की पार्टी के उम्मीदवार ताल ठोक रहे हैं। इनके अलावा बुलंदशहर और अलीगढ़ जिले में एक-एक सीट पर उनकी पार्टी का उम्मीदवार किस्मत आजमा रहा है।

आम बजट में एमएसएमई क्षेत्र पर दिया गया है विशेष ध्यान

भारत में एमएसएमई क्षेत्र कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा रोजगार उपलब्ध कराने वाला क्षेत्र माना जाता है। एमएसएमई क्षेत्र में करीब 11 करोड़ लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। एमएसएमई क्षेत्र का देश के सकल घरेलू उत्पाद में 30 प्रतिशत और देश के निर्यात में 48 प्रतिशत का योगदान रहता है। भारत में 6.3 करोड़ एमएसएमई इकाईयां कार्यरत हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में एमएसएमई क्षेत्र के महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए वित्तीय वर्ष 2022-23 के आम बजट में इस क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया गया है।

कोरोना महामारी के काल में लागू किए गए देशव्यापी लॉकडाउन के चलते बहुत विपरीत रूप से प्रभावित हुए छोटे छोटे व्यापारियों एवं एमएसएमई इकाईयों को बचाने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने एक आपात ऋण गारंटी योजना लागू की थी। इस योजना के अंतर्गत बैकों को यह निर्देश दिए गए थे कि छोटे व्यापारियों एवं एमएसएमई इकाईयों को उनका व्यापार पुनः खड़ा करने के उद्देश्य से उन्हें पूर्व में स्वीकृत ऋणराशि का 20 प्रतिशत, अतिरिक्त ऋण के रूप में प्रदान किया जाय एवं इस राशि की गारंटी केंद्र सरकार द्वारा उक्त योजना के अंतर्गत प्रदान की जाएगी। बैंकों को इस योजना के अंतर्गत 4.5 लाख करोड़ रुपए की राशि स्वीकृत करने का लक्ष्य प्रदान किया गया था। ऋण के रूप में प्रदान की गई अतिरिक्त सहायता की राशि से देश में लाखों उद्यमों को तबाह होने से बचा लिया गया है। भारतीय स्टेट बैंक द्वारा जारी एक प्रतिवेदन में यह बताया गया है कि उक्त योजना द्वारा न केवल 13.5 लाख एमएसएमई इकाईयों को कोरोना महामारी के दौर में बंद होने से बचाया गया है बल्कि 1.5 करोड़ लोगों को बेरोजगार होने से भी बचा लिया गया है। इसी प्रकार एमएसएमई के 1.8 लाख करोड़ रुपए की राशि के खातों को विभिन्न बैंकों में गैर निष्पादनकारी आस्तियों में परिवर्तिति होने से भी बचा लिया गया है। उक्त राशि एमएसएमई इकाईयों को प्रदान किए गए कुल ऋण का 14 प्रतिशत है। इस योजना के अंतर्गत बैंकों द्वारा प्रदान की गई कुल ऋणराशि में से 93.7 फीसदी राशि सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम इकाईयों को प्रदान की गई है।

> “कोरोना महामारी के काल में लागू किए गए देशव्यापी लॉकडाउन के चलते बहुत विपरीत रूप से प्रभावित हुए छोटे छोटे व्यापारियों एवं एमएसएमई इकाईयों को बचाने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने एक आपात ऋण गारंटी योजना लागू की थी। इस योजना के अंतर्गत बैकों को यह निर्देश दिए गए थे कि छोटे व्यापारियों एवं एमएसएमई इकाईयों को उनका व्यापार पुनः खड़ा करने के उद्देश्य से उन्हें पूर्व में स्वीकृत ऋणराशि का 20 प्रतिशत, अतिरिक्त ऋण के रूप में प्रदान किया जाय।

छोटे व्यवसायी (किराना दुकानदारों सहित), फुड प्रोसेसिंग इकाईयों एवं कपड़ा निर्माण इकाईयों को भी इस योजना का सबसे अधिक लाभ मिला है। गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु एवं उत्तर प्रदेश में कार्यरत एमएसएमई इकाईयों ने इस योजना का सबसे अधिक लाभ उठाया है।

उक्त योजना की अवधि 31 मार्च 2022 को समाप्त होने जा रही थी परंतु चूंकि एमएसएमई क्षेत्र में कार्यरत हासपीटलिटी उद्योग से सबंधित इकाईयां व्यापार के मामले में अभी भी कोरोना महामारी के पूर्व के स्तर को प्राप्त नहीं कर पाई हैं अतः आपात ऋण गारंटी योजना की अवधि को 31 मार्च 2023 की अवधि तक बढ़ा दिया गया है। साथ ही, वितीय वर्ष 2022-23 के आम बजट में यह घोषणा भी की गई है कि एमएसएमई क्षेत्र की इकाईयों को 50,000 करोड़ रुपए की राशि का अतिरिक्त ऋण भी उक्त योजना के अंतर्गत बैंकों द्वारा स्वीकृत किया जाएगा। इसके अलावा भी एमएसएमई इकाईयों की पूंजी सम्बंधी कमी को दूर करने के लिए इन इकाईयों को 2 लाख करोड़ रुपए का अतिरिक्त ऋण बैंकों द्वारा सीजीटीएमएसई गारंटी योजना के अंतर्गत उपलब्ध कराया जाएगा। अब छोटे व्यापारियों एवं एमएसएमई इकाईयों को उक्त योजना के अंतर्गत बैंकों से अतिरिक्त सहायता की राशि 31 मार्च 2023 की अवधि तक उपलब्ध होती रहेगी।

केंद्र सरकार द्वारा लागू की गई आपात ऋण गारंटी योजना चूंकि बहुत सफल रही है अतः इस योजना के अच्छे बिंदुओं को बैंकों में पिछले लगभग दो दशकों से चल रही इसी प्रकार की सीजीटीएमएसई योजना में शामिल किये जाने पर विचार किया जाएगा। वर्तमान में सीजीटीएमएसई योजना का लाभ विभिन्न बैंकों द्वारा अपने बहुत कम हितग्राहियों को दिया जा रहा है।

कुछ समय पूर्व तक भारत सुरक्षा उत्पादों का लगभग 100 प्रतिशत आयात करता था परंतु अब कई सुरक्षा उत्पादों का भारत में ही निर्माण किया जाने लगा है। इस वर्ष के बजट में यह प्रावधान किया गया है कि सुरक्षा उत्पादों की कुल जरूरत का 68 प्रतिशत भाग देश में ही निर्माण कर रही सुरक्षा उत्पादक इकाईयों से खरीदा जाय। इससे देश में नए नए उद्योगों को स्थापित करने में मदद मिलेगी, रोजगार के लाखों नए अवसर निर्मित होंगे एवं विदेशी मुद्रा की बचत भी की जा सकेगी। इस प्रकार भारत सुरक्षा उत्पादों के निर्माण के क्षेत्र में शीघ्र ही आत्म निर्भरता हासिल कर लेगा। केंद्र सरकार द्वारा आम बजट में की गई उक्त घोषणा का लाभ सुरक्षा उत्पाद के क्षेत्र में कार्यरत कई एमएसएमई इकाईयों को भी मिलेगा। एमएसएमई क्षेत्र में कार्यरत सेकंडरी स्टील उत्पादक इकाईयों को स्टील स्क्रैप पर लगाने वाली कस्टम ड्यूटी की छूट भी एक और वर्ष के लिए जारी रहेगी। इसका सीधा सीधा लाभ उक्त क्षेत्र में उत्पादन करने वाली एमएसएमई इकाईयों को मिलना जारी रहेगा।

31 जनवरी 2022 को जारी किए गए आर्थिक सर्वेक्षण में बताया गया है कि भारत में 61,400 स्टार्टअप स्थापित हो चुके हैं। वित्तीय वर्ष 2022 में देश में 14,000 नए स्टार्टअप प्रारम्भ हुए हैं। देश के 555 जिलों में कम से कम एक स्टार्टअप स्थापित कर लिया गया है। विशेष रूप से पिछले 6 वर्षों के दौरान देश में बड़ी संख्या में नए नए स्टार्टअप, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, स्थापित किए गए है। इनमें से कई स्टार्टअप एमएसएमई इकाईयों के रूप में प्रारम्भ किया जा रहे है। वित्तीय वर्ष 2022-23 के आम बजट के माध्यम से यह घोषणा की गई है कि इन स्टार्टअप को दी जाने वाली टैक्स सम्बंधी सुविधाएं एक और वर्ष के लिए जारी रहेंगी। साथ ही, ड्रोन शक्ति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नए स्टार्टअप एमएसएमई क्षेत्र में प्रारम्भ किए जाएंगे। इससे इस क्षेत्र में रोजगार के कई नए अवसर निर्मित होंगे।

“उक्त योजना की अवधि 31 मार्च 2022 को समाप्त होने जा रही थी परंतु चूंकि एमएसएमई क्षेत्र में कार्यरत हासपीटलिटी उद्योग से सबंधित इकाईयां व्यापार के मामले में अभी भी कोरोना महामारी के पूर्व के स्तर को प्राप्त नहीं कर पाई हैं अतः आपात ऋण गारंटी योजना की अवधि को 31 मार्च 2023 की अवधि तक बढ़ा दिया गया है। साथ ही, वितीय वर्ष 2022-23 के आम बजट में यह घोषणा भी की गई है कि एमएसएमई क्षेत्र की इकाईयों को 50,000 करोड़ रुपए की राशि का अतिरिक्त ऋण भी उक्त योजना के अंतर्गत बैंकों द्वारा स्वीकृत किया जाएगा।

नीति नहीं, देशहित का दूरगामी अमृत बजट

सशक्त एवं विकसित भारत निर्मित करने, उसे दुनिया की आर्थिक महाशक्ति बनाने और कोरोना महामारी से ध्वस्त हुई अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने की दृष्टि से वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा मंगलवार को लोकसभा में प्रस्तुत आम बजट इसलिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि मोदी सरकार ने देश के आर्थिक भविष्य को सुधारने पर ध्यान दिया, न कि लोकलुभावन योजनाओं के जरिये प्रशंसा पाने अथवा कोई राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश की है। यह कदम एक ऐसे समय उठाया गया जब राजनीतिक दृष्टि से सबसे अहम राज्य उत्तर प्रदेश समेत पांच राज्यों के चुनाव होने जा रहे हैं और उन्हें लघु आम चुनाव की भी संज्ञा दी जा रही है। राजनीतिक हितों से ज्यादा देशहित को सामने रखने की यह पहल अनूठी है, प्रेरक है।

कोरोना की संकटकालीन एवं चुनौतीभरी परिस्थितियों में लोककल्याणकारी एवं आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को बल देने वाला यह बजट अभिनन्दनीय एवं सराहनीय है। यह बजट भारत की अर्थव्यवस्था के उन्नयन एवं उम्मीदों को आकार देने की दृष्टि से मील का पत्थर साबित होगा। इसके माध्यम से समाज के भी वर्गों का सर्वांगीण एवं संतुलित विकास सुनिश्चित होगा। इस बजट से भले ही करदाताओं के हाथ में मायूसी लगी हो, टैक्स स्लैब में किसी तरह का बदलाव नहीं हुआ हो, लेकिन इससे देश की अर्थव्यवस्था का जो नक्शा सामने आया है वह इस मायने में उम्मीद की छांव देने वाला है। यह महत्वपूर्ण है कि सरकार ने पूंजीगत व्यय में भारी-भरकम व्यय करने की योजना बनाई उसके साकार होने से अंततः आम आदमी को ही लाभ मिलेगा। इसके साथ-साथ अर्थव्यवस्था को भी गति मिलेगी। अर्थव्यवस्था को गति देने का काम शहरीकरण की उन योजनाओं को आगे बढ़ाने से भी होगा जिनकी प्रावधान बजट में किया गया है। इस बजट में शहर एवं गांवों के संतुलित विकास पर बल दिया है, जो इस बजट की विशेषता है।

सरकार ने वित्त वर्ष 2023 में पूंजीगत खर्चों में 35.4 फीसदी की बढ़ोतरी का प्रस्ताव रखा है, इससे रोजगार में वृद्धि होगी। यह बहुत बड़ा फैसला है। वित्त मंत्री ने बजट में क्रिप्टोकरंसी पर भी निवेशकों की उलझन दूर कर दी। उन्होंने इससे हुए मुनाफे पर 30 फीसदी टैक्स लगाने का प्रस्ताव रखा। वित्त वर्ष 2023 में रिजर्व बैंक डिजिटल करंसी लाएगा, इसका ऐलान भी निर्मला सीतारमण ने किया। इन दोनों बातों से लगता है कि सरकार ने क्रिप्टोकरंसी को एक एसेट तो मान लिया है, लेकिन वह इन्हें बढ़ावा नहीं देना चाहती। यहां तक कि समृद्ध तबके को भी दीर्घकालीन पूंजीगत लाभ के टैक्स पर सरचार्ज घटाकर राहत दी गई है। अस्सी लाख सस्ते घरों के लिये 48 हजार करोड़ का प्रावधान करके निम्न-मध्यम आय वर्ग के लिए हाउसिंग सेक्टर में सौगात दी गई है।

भारत की अर्थव्यवस्था को तीव्र गति देने की दृष्टि से यह बजट कारगर साबित होगा, जिसके दूरगामी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे, रोजगार के नये अवसर सामने आयेंगे, उत्पाद एवं विकास को तीव्र गति मिलेगी। कोरोना महामारी के कारण चालू वित्त वर्ष में आर्थिक क्षेत्र में काफी उतार-चढ़ाव देखने को मिले, लेकिन इन सब स्थितियों के बावजूद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण इस बजट के माध्यम से देश को स्थिरता की तरफ ले जाते दिखाई पड़

> “कोरोना की संकटकालीन एवं चुनौतीभरी परिस्थितियों में लोककल्याणकारी एवं आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को बल देने वाला यह बजट अभिनन्दनीय एवं सराहनीय है। यह बजट भारत की अर्थव्यवस्था के उन्नयन एवं उम्मीदों को आकार देने की दृष्टि से मील का पत्थर साबित होगा। इसके माध्यम से समाज के भी वर्गों का सर्वांगीण एवं संतुलित विकास सुनिश्चित होगा। इस बजट से भले ही करदाताओं के हाथ में मायूसी लगी हो, टैक्स स्लैब में किसी तरह का बदलाव नहीं हुआ हो।

रहे हैं। बजट हर वर्ष आता है। अनेक विचारधाराओं वाले वित्तमंत्रियों ने विगत में कई बजट प्रस्तुत किए। पर हर बजट लोगों की मुसीबतें बढ़ाकर ही जाता रहा है। लेकिन इस बार बजट ने कोरोना महासंकट से बिगड़ी अर्थव्यवस्था में नयी परम्परा के साथ राहत की सांसें दी है तो नया भारत- सशक्त भारत के निर्माण का संकल्प भी व्यक्त किया है। इस बजट में कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास, रेलों का विकास, सड़कों और अन्य बुनियादी ढांचागत क्षेत्रों के विकास के साथ-साथ किसानों, गांवों और गरीबों को ज्यादा तवज्जो दी गयी है। सच्चाई यही है कि जब तक जमीनी विकास नहीं होगा, तब तक आर्थिक विकास की गति सुनिश्चित नहीं की जा सकेगी। इस बार के बजट से हर किसी ने काफी उम्मीदें लगा रखी थीं और उन उम्मीदों पर यह बजट खरा उतरा है। हर बार की तरह इस बार भी शहरों के मध्यमवर्ग एवं नौकरीपेशा लोगों को अवश्य निराशा हुई है। इस बार आम बजट को लेकर उत्सुकता इसलिए और अधिक थी, क्योंकि यह कोरोना महासंकट, पडौसी देशों के लगातार हो रहे हमलों, निस्तेज हुए व्यापार, रोजगार, उद्यम की स्थितियों के बीच प्रस्तुत हुआ है। संभवतः इस बजट को नया भारत निर्मित करने की दिशा में लोक-कल्याणकारी बजट कह सकते हैं। यह बजट वित्तीय अनुशासन स्थापित करने की दिशाओं को भी उद्घाटित करता है। आम बजट न केवल आम आदमी के सपने को साकार करने, आमजन की आकांक्षाओं को आकार देने और देशवासियों की आशाओं को पूर्ण करने वाला है बल्कि यह देश को समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र बनाने की दिशा में उठाया गया महत्वपूर्ण एवं दूरगामी सोच से जुड़ा कदम है। बजट के सभी प्रावधानों एवं प्रस्तावों में जहां हर हाथ को काम का संकल्प साकार होता हुआ दिखाई दे रहा है, वहीं ह्यसबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वासह्न का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से उजागर हो रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में प्रस्तुत यह बजट निश्चित ही अमृत बजट है। जिसमें भारत के आगामी 25 वर्षों के समग्र एवं बहुमुखी विकास को ध्यान में रखा गया है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आशा के अनुरूप ही बजट का फोकस किसानों, स्वास्थ्य, शिक्षा, शहरी विकास, रोजगार, युवाओं की अपेक्षाओं, विकास और ग्रामीण क्षेत्र पर रखा है। अपने ढांचे में यह पूरे देश का बजट है, एक आदर्श बजट है। इसका ज्यादा जोर सामाजिक विकास पर है। मुश्किल के इस वक्त में भी मोदी सरकार का फोकस किसानों की आय दोगुनी करने, विकास की रफ्तार को बढ़ाने और आम लोगों को सहायता पहुंचाने पर है। अक्सर बजट में राजनीति, वोटनीति तथा अपनी व अपनी सरकार की छवि-वृद्धि करने के प्रयास ही अधिक दिखाई देते है लेकिन इस बार का बजट चुनाव होने के बावजूद राजनीति प्रेरित नहीं है। स्पष्ट है कि सरकार ने चुनावी राजनीतिक हितों के आगे अर्थव्यवस्था को सशक्त करने के दूरगामी लक्ष्य पर न केवल ध्यान केंद्रित किया बल्कि यह भी रेखांकित किया कि उसका उद्देश्य 2047 तक भारत को एक समर्थ-सक्षम देश के रूप में सामने लाना है।

गरीब तबके और ग्रामीण आबादी की बढ़ती बेचैनी को दूर करने की कोशिश इसमें स्पष्ट दिखाई देती है जो इस बजट को सकारात्मकता प्रदान करती है। इस बजट में किसानों की बढ़ती परेशानियों को दूर करने के भी सार्थक प्रयत्न हुए हैं, जिसे मेहरबानी नहीं कहा जाना चाहिए। बजट भाषण में वित्त मंत्री ने न्यूनतम समर्थन मूल्य अर्थात एमएसपी जारी रहने का उल्लेख करते हुए जिस तरह यह रेखांकित किया कि इस मद में 2.37 लाख करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, वह यही बताता है कि सरकार ने उस दुष्प्रचार की हवा निकालना आवश्यक समझा जिसके तहत कुछ कथित किसान नेताओं के साथ कई विपक्षी नेता यह झूठ फैलाने में लगे हैं कि यह सरकार एमएसपी खत्म करने का इरादा रखती है। इस पर हैरानी नहीं कि विपक्ष को बजट रास नहीं आया। वह सदैव इसी तरह की नकारात्मक प्रतिक्रिया से लैस दिखता है और यही कारण है कि जनता उसकी आलोचना पर उतना ध्यान नहीं देती जितना उसे देना चाहिए। खेती और किसानों की दशा सुधारना सरकार की प्राथमिकता में होना ही चाहिए, क्योंकि हमारा देश किसान एवं ग्रामीण आबादी की आर्थिक सुदृढ़ता और उनकी क्रय शक्ति बढ़ने से ही आर्थिक महाशक्ति बन सकेगा। और तभी एक आदर्श एवं संतुलित अर्थव्यवस्था का पहिया सही तरह से घूम सकेगा। ग्रामीण अर्थव्यवस्था संवारने की दिशा में इस बजट को मील का पत्थर कहा जा सकता हैं।

इस बजट में जो नयी दिशाएं उद्घाटित हुई है और संतुलित विकास, भ्रष्टाचार उन्मूलन, वित्तीय अनुशासन एवं पारदर्शी शासन व्यवस्था का जो संकेत दिया गया है, सरकार को इन क्षेत्रों में अनुकूल नतीजे हासिल करने पर खासी मेहनत करनी होगी। देश में डिजिटल व्यवस्थाओं को सशक्त एवं प्रभावी बनाने का भी सरकार ने संकल्प व्यक्त किया है।

“बजट हर वर्ष आता है। अनेक विचारधाराओं वाले वित्तमंत्रियों ने विगत में कई बजट प्रस्तुत किए। पर हर बजट लोगों की मुसीबतें बढ़ाकर ही जाता रहा है। लेकिन इस बार बजट ने कोरोना महासंकट से बिगड़ी अर्थव्यवस्था में नयी परम्परा के साथ राहत की सांसें दी है तो नया भारत- सशक्त भारत के निर्माण का संकल्प भी व्यक्त किया है। इस बजट में कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास, रेलों का विकास, सड़कों और अन्य बुनियादी ढांचागत क्षेत्रों के विकास के साथ-साथ किसानों, गांवों और गरीबों को ज्यादा तवज्जो दी गयी है।

इंडिया नाम बदलकर भारत करने का उचित समय

देश के कई शहरों व प्रदेशों के नाम परिवर्तित कर पारम्परिक नामों में बदले जाने के पश्चात क्या ऐसा नहीं लगता कि अब देश का नाम भी इंडिया से बदलकर भारत कर देने का उचित समय आ गया है? विभाजित भारत का कोई हिस्सा अब ऐसा नहीं रह गया है, जो अब ब्रिटिश शासकों द्वारा दिए गए नाम अर्थात अंग्रेजों वाले समय के नाम से जाना जाता हो। ऐसे में क्या यह उचित नहीं कि देश का नाम भी सुधार के पारम्परिक कर लिया जाए? अपने अस्तित्व, अपनी सही पहचान और देश की गौरवमयी भावना को समझने, आत्मसात करने और सत्य को स्वीकार करने के लिए विदेशी आक्रांताओं और शासकों द्वारा जबरन थोपे अथवा दिए गए नामों को हटा कर अपने सहज नाम अपनाने की प्रक्रिया स्वागत योग्य है, परन्तु दुखद, खेदजनक व क्षोभनाक बात यह है कि स्वयं देश को अब तक इस तरह से संस्कारित नहीं किया जा सका है। और हम विगत सात दशक से इंडिया रूपी विजातीय नाम ढोये जा रहे हैं, जबकि कई राष्ट्रचिंतकों, साहित्यकारों, और राजनीतिज्ञों ने विभाजन पूर्व और विभजित भारत के शासकों को इसका उलाहना देते हुए देश का नाम परिवर्तित कर भारतवर्ष करने का सुझाव दिया है। देश के जिन नेताओं ने त्रिवेन्द्रम को तिरुअनंतपुरम, अथवा सेंट्रल असेंबली को लोक सभा, कर्जन रोड को कस्तूरबा गाँधी मार्ग, या फिर कनॉट प्लेस को बदल कर राजीव चौक नामांकित करना जरूरी समझा, उन्होंने भी देश के प्राचीन गौरवमयी नाम को स्वीकार करना जरुरी नहीं समझा, जबकि उन्हें सबसे पहले इंडिया शब्द को बदलकर भारतवर्ष करना चाहिए था। यह इसलिए भी आवश्यक था, क्योंकि भारत अथवा भारतवर्ष शब्द देश के सभी भाषाओं में प्रयोग में रहा है। अतः इसे पुनर्स्थापित करने में किसी क्षेत्र को कोई आपत्ति भी नहीं होगी। दासता के प्रतीक त्रिवेंद्रम, मद्रास, बोम्बे, कैलकटा, आदि का नाम बदलना देश के सही नामांकन के लिए एकदम उपयुक्त कदम है। इंडिया शब्द भी भारत पर ब्रिटेन के

> “विभाजित भारत का कोई हिस्सा अब ऐसा नहीं रह गया है, जो अब ब्रिटिश शासकों द्वारा दिए गए नाम अर्थात अंग्रेजों वाले समय के नाम से जाना जाता हो। ऐसे में क्या यह उचित नहीं कि देश का नाम भी सुधार के पारम्परिक कर लिया जाए? अपने अस्तित्व, अपनी सही पहचान और देश की गौरवमयी भावना को समझने, आत्मसात करने और सत्य को स्वीकार करने के लिए विदेशी आक्रांताओं और शासकों द्वारा जबरन थोपे अथवा दिए गए नामों को हटाया।

औपनिवेशिक शासन को स्मरण कराकर दिल को कचोटता है। यह भी सत्य है कि इंडिया शब्द का प्रथम प्रयोग किसी आधिकारिक नाम में व्यापार करने के उद्देश्य से भारत आई ईस्ट इंडिया कंपनी में हुआ था। उस समय यहाँ के लोग इसे भारतवर्ष या हिन्दुस्तान कहते थे। इसलिए उस विदेशी कंपनी और ब्रिटिश राज की समाप्ति के पश्चात देश का नाम पुनर्स्थापित करना आवश्यक था, लेकिन खेदजनक स्थिति यह है कि ऐसा न हो सका, और हम आज भी विदेशी दासता के प्रतीक को ढोए जा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि नाम अथवा शब्द का अत्यंत महत्व होता है । स्थानों, नगरों, राज्यों अथवा देश का नाम अथवा उनका नाम बदलना सांस्कृतिक, राजनीतिक और गौरवमयी महत्व रखता है। यही कारण है कि ब्रिटिश शासकों ने इस देश पर कब्जा करने के बाद यहाँ के लोगों को मानसिक दासता में बाँधने के लिए देश का नाम भारतवर्ष से बदलकर इंडिया कर दिया। अपने औपनिवेशिक देशों में कई जगह ब्रिटिश शासकों ने ऐसा किया। अन्य कारणों से भी कई स्थानों के नाम बदले गये, परन्तु वहां के लोगों ने स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद अपने पारम्परिक नामों को अपना लिया। कम्युनिस्ट राज के समाप्त होते ही रूस में लेनिनग्राड को पुनः पूर्ववत सेंट पीटर्सबर्ग, स्तालिनग्राड को वोल्गोग्राद आदि किया गया। पोलैंड ने अपना नाम बदल कर पोलस्का किया। ग्रेट ब्रिटेन ने भी अपनी संज्ञा बदलकर यूनाइटेड किंगडम कर लिया।इस प्रकार स्पष्ट है कि देश के नाम को पुनर्स्थापित करना सिर्फ भावना की बात नहीं, वरन इन परिवर्तनों में भावना से भी अधिक गहरे कारण रहे हैं। शब्द व नाम की महता को इस बात से समझा जा सकता है कि मुहम्मदी बनते अर्थात मुसलमान होते ही सबसे पहले उनका नाम बदला जाता है, और फिर नाम से ही पूरी पहचान बनती बदलती है।

भारतवासियों में अतिप्राचीन काल से ही प्रचलित नवजात शिशु के नामकरण संस्कार नामक महत्वपूर्ण विधान से नामकरण की महता का पता चलता है। सिर्फ व्यक्तियों की ही बात नहीं, वरण समुदाय और राष्ट्र के लिए भी नाम का अत्यंत विशिष्ट महत्व है। अगर ऐसा नही होता तो पचहतर वर्ष पूर्व मुस्लिम लीग के पृथक देश की मांग पर अलग होकर बने देश का नाम पाकिस्तान क्यूँ रखा गया? जिस तरह जर्मनी, कोरिया, यमन आदि देश के विभाजनों पर उनका नाम पूर्वी जर्मनी, पश्चिमी जर्मनी, उत्तरी कोरिया और दक्षिणी कोरिया आदि रखा गया, उसी तरह पश्चिनी भारत अथवा पश्चिमी हिन्दुस्तान रखा जा सकता था, लेकिन उन्होंने इससे भिन्न, बिलकुल अलग मजहबीय नाम पकिस्तान रखा। इस मजहबीय नाम रखे जाने की पीछे एक पहचान त्यागने और दूसरी को अपनाने की चाहत ही मुख्य थी । स्वयं को मुगलों का उतराधिकारी मानते हुए भी उन्होंने मुगलों के द्वारा प्रदत्त नाम अथवा शब्द हिन्दुस्तान को भी नहीं अपनाया। आखिर क्यों?

शब्द कोई निर्जीव वस्तु नहीं वरण यह सजीव है। प्रत्येक शब्द किसी भाषा, समाज और संस्कृति की थाती होती है। शब्द रुपी संग्रहालय में किसी समाज की हजारों वर्ष पुरानी परंपरा, स्मृति और ज्ञान संघनित रहता है। भारत वैसा ही एक गौरवशाली शब्द है। इसलिए जब कोई एक भाषा या शब्द त्यागता है, तो जाने-अनजाने उस के पीछे की पूरी परंपरा ही छोड़ देता है। यही कारण है कि श्रीलंका ने सीलोन को त्याग कर औपनिवेशिक दासता के अवशेष से मुक्ति पाई। हमारे देश भारत में ही मराठाओं ने बम्बई शब्द को त्याग मुंबई अपना कर मुंबा देवी से जुड़ी अपनी भूमि को पुनः संस्कारित कर लिया। इसमें कोई शक नहीं कि भारतवर्ष विभाजन के बाद हमारे राष्ट्रीय नेताओं के द्वारा देश का नाम इंडिया रहने देकर एक बड़ी भूल की गई है, जिससे स्वतंत्र भारत में भारी तबाही हुई है। यदि देश का नाम भारत या हिन्दुस्तान हो जाता तो यहाँ के मुसलमान भी स्वयं को भारतीय मुसलमान अथवा हिन्दुस्तानी मुसलमान कहते। इन्हें अरब देशों में अभी भी हिन्दवी या हिन्दू मुसलमान ही कहा जाता है। भारत से ही कटकर बने पाकिस्तान में तो इन्हें अर्थात भारतीय मुसलमानों को आज भी मुहाजिर अर्थात अपने देश को छोड़कर दूसरे देश में बसने वाले के रूप में ही समझा और संज्ञायित किया जाता है। यूरोपीय भी सदैव भारतवासियों को हिन्दू ही कहते रहे हैं और आज भी कहते हैं। यही हमारी वास्तविक पहचान है, जिस से मुसलमान भी जुड़े थे और जुड़े रहते, यदि हमने अपना नाम सही कर लिया होता। हिन्दू या हिन्दवी शब्द में कोई अंतर नहीं है। इसलिए अगर देश का नाम भारत अथवा हिन्दुस्तान कर दिया जाए तो यह इस भूमि की सभ्यता- संस्कृति में स्वतः ही लोगों को सम्बद्ध करता रहेगा। इस एक शब्द इंडिया ने भारत में बड़ी भयंकर तबाही मचाते हुए इंडियन और हिन्दू को अलग कर दिया। और आज स्थिति यह है कि इसने इंडियन को हिन्दू से बड़ा बना दिया है। यही कारण है कि आज सेक्यूलरिज्म, डाइवर्सिटी, इन्क्लूसिवनेस, आदि की लफ्फाजी करने वाले अपनी गाल बजाते हुए फूले नहीं समाते। और देश का नाम भारत या हिन्दुस्तान करने का प्रयास किये जाते अथवा नाम लेते ही ये छद्म धर्म निरपेक्षता के अलम्बरदार सेक्यूलर-वामपंथी बुद्धिजीवी, एक्टिविस्ट और पत्रकार कडा विरोध करने लगते हैं। उन्हें भारतीयता और हिन्दू शब्द और इनके भाव से पुरानी व स्थायी शत्रुता है। इसीलिए चाहे उन्होंने कैलकटा, बांबे, बैंगलोर, आदि बदलने का विरोध न किया, परन्तु इंडिया नाम बदलने के प्रस्ताव पर वे चुप नहीं बैठेंगे। यह इसका एक और प्रमाण होगा कि नामों के पीछे कितनी बड़ी सांस्कृतिक, राजनीतिक मनोभावनाएं रहती हैं?

भूख की व्याकुलता एवं खाद्य पदार्थों की बर्बादी

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम और साझेदार संगठन डब्ल्यूआरएपी की ओर से जारी खाद्यान्न बर्बादी सूचकांक रिपोर्ट 2021 में कहा गया है कि 2019 में 93 करोड़ 10 लाख टन खाना बर्बाद हुआ, जिसमें से 61 फीसद खाना घरों से, 26 फीसद भोजन विक्रेता के यहां से और 13 फीसद खुदरा क्षेत्र से बर्बाद हुआ। रिपोर्ट के अनुसार यह इशारा करता है कि कुल वैश्विक खाद्य उत्पादन का 17 फीसद भाग बर्बाद हुआ और करीब 69 करोड़ लोगों को खाली पेट सोना पड़ा है। भारत दक्षिण एशिया में सालाना प्रति व्यक्ति खाना बर्बाद करने वाले देशों की लिस्ट में अंतिम पायदान पर है। भारत में घरों में बर्बाद होने वाले खाद्य पदार्थ की मात्रा प्रति वर्ष प्रति व्यक्ति 50 किलोग्राम होने का अनुमान है। भारत 116 देशों में वैश्विक भुखमरी सूचकांक में 101वें स्थान से फिसलकर पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल से भी पीछे चला गया है। एक तरफ भारत को दुनिया में एक उभरती आर्थिक महाशक्ति के रूप में देखा जा रहा है और दूसरी तरफ सबसे ज्यादा भूखे लोगों के देश के रूप में इसकी गिनती होती है, यह विरोधाभास मोदी सरकार के विकास एवं संतुलित समाज की संरचना पर एक प्रश्न है।

किसी भी देश में आम नागरिकों का स्वास्थ्य वहां के विकास की सचाई को बयां करता है। लोगों की सेहत की स्थिति इस बात पर निर्भर है कि उन्हें भरपेट और संतुलित भोजन मिले। इस लिहाज से देखें तो विकास और अर्थव्यवस्था की रफ्तार बढ़ने के तमाम दावों के बीच भारत में अपेक्षित प्रगति संभव नहीं हो सकी है। गौरतलब है कि वैश्विक स्तर पर जारी हुए ताजा भुखमरी सूचकांक 2021 के आंकड़ों में भारत की स्थिति काफी दुखद, त्रासदीपूर्ण एवं चिंताजनक है। दुनिया के एक सौ सत्रह देशों की सूची में भारत को एक सौ दो नंबर पर जगह मिल सकी है। जबकि पड़ोसी देश नेपाल, पाकिस्तान और बांग्लादेश को इस सूची में बेहतर जगह मिली है। यह कैसा विकास है? यह कैसे आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर होते कदम है? भूख, अभाव, अशिक्षा, अस्वास्थ्य, बेरोजगारी की त्रासदी को जी रहा देश कैसे विकसित राष्ट्रों में शुमार होगा, कैसे विश्व की बड़ी आर्थिक ताकत बनेगा?

कहीं-ना-कहीं हमारे विकास के मॉडल में खामी है या वर्तमान सरकार की कथनी और करनी में फर्क है। ऐसा लगता है कि हमारे यहां विकास के लुभावने स्वरूप को मुख्यधारा की राजनीति का मुद्दा बनाने एवं चुनाव में वोटों को हासिल करने में तो कामयाबी मिली है, लेकिन इसके बुनियादी पहलुओं को केंद्र में रखकर जरूरी कदम नहीं उठाए गए या उन पर अमल नहीं किया गया। यह बेवजह नहीं

“किसी भी देश में आम नागरिकों का स्वास्थ्य वहां के विकास की सचाई को बयां करता है। लोगों की सेहत की स्थिति इस बात पर निर्भर है कि उन्हें भरपेट और संतुलित भोजन मिले। इस लिहाज से देखें तो विकास और अर्थव्यवस्था की रफ्तार बढ़ने के तमाम दावों के बीच भारत में अपेक्षित प्रगति संभव नहीं हो सकी है। गौरतलब है कि वैश्विक स्तर पर जारी हुए ताजा भुखमरी सूचकांक 2021 के आंकड़ों में भारत की स्थिति काफी दुखद, त्रासदीपूर्ण एवं चिंताजनक है।

है कि नेपाल, पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे पड़ोसी देश भी इस मामले में हमसे बेहतर स्थिति में पहुंच गए, जो अपनी बहुत सारी बुनियादी जरूरतों तक के लिए आमतौर पर भारत या दूसरे देशों पर निर्भर रहते हैं। साफ है कि हमारी प्रगति की तस्वीर काफी विसंगतिपूर्ण है और इससे उस सच्चाई की पुष्टि होती है जिसे अक्सर इंडिया बनाम भारत के मुहावरे में व्यक्त किया जाता है। ताजा रिपोर्ट भारत की एक बड़ी जनसंख्या की बदहाली का अकेला सबूत नहीं है। खुद देश में सरकार एवं अन्य एजेन्सियों की तरफ से कराए गए सर्वेक्षण और कई दूसरे अध्ययनों के जरिए कंगाली, भुखमरी और कुपोषण के दहलाने वाले आंकड़े समय-समय पर विकास की शर्मनाक तस्वीर प्रस्तुत करते रहे हैं।

यों ऐसे हालात लंबे समय से बने हुए हैं कि एक ओर रखरखाव के पर्याप्त इंतजाम और जरूरतमंदों तक पहुंच के अभाव में भारी पैमाने पर अनाज सड़क, खेतों एवं खुले स्थानों पर बर्बाद हो जाता है, दूसरी ओर देश में बड़ी तादाद ऐसे लोगों की है, जिन्हें पेट भरने लायक भोजन नहीं मिल पाता। इस मसले पर एक बार सुप्रीम कोर्ट को यहां तक कहना पड़ा था कि गोदामों में या उनके बाहर सड़कर अनाज के बर्बाद होने से अच्छा है कि उसे गरीबों में मुफ्त बांट दिया गया। लेकिन इस तल्ख रूख के बावजूद न सरकारों का रूख बदला, न इस मामले पर कोई नीतिगत कदम उठाये गये हैं। आज भी नीतियों और व्यवस्थागत कमियों की वजह से भारी पैमाने पर अनाज की बबार्दी होती है और कहीं बहुत सारे लोगों की थाली में जरूरत भर भी भोजन नहीं पहुंच पाता। अफसोस की बात है कि विकास के ब्योरों में इस समस्या को पर्याप्त जगह नहीं मिल पाती। यही वजह है कि जब विकास की संपूर्ण तस्वीर का आकलन होता है तो उसमें हमारा देश काफी पीछे खड़ा दिखता है, जबकि अर्थव्यवस्था के साथ-साथ अन्य कसौटियों पर अपेक्षकृत कमजोर माने वाले हमारे कुछ पड़ोसी देशों ने इस मसले पर एक निरंतरता की नीति अपनाई और अपनी स्थिति में सुधार किया। दुनिया में भुखमरी बढ़ रही है और भूखे लोगों की करीब 23 फीसदी आबादी भारत में रहती है।

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में भुखमरी के कारणों में युद्ध, संघर्ष, हिंसा, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदा आदि की तो बात करती है लेकिन नवसाम्राज्यवाद, नवउदारवाद, मुक्त अर्थव्यवस्था और बाजार का ढांचा भी एक बड़ा कारण है, अमीरी-गरीबी के बीच बढ़ता फासला आदि की चर्चा नहीं होती। भारत की अर्थव्यवस्था की एक बड़ी विसंगति यह रही है कि यहां एक तरफ गरीब है तो दूसरी तरफ अति-अमीर है। इन दोनों के बीच बड़ी खाई है। इस बढ़ती खाई पर ज्यादा शोरशराबा नहीं होता तो इसकी एक वजह यह भी है कि मान लिया गया है कि उच्च वर्गों की समृद्धि की रिसन या ऊंची विकास दर के जरिए गरीबी उन्मूलन का लक्ष्य अपने आप पा लिया जाएगा। यह उम्मीद पूरी तरह भ्रामक है और पूरी होती नहीं दिखती। उलटे विश्व खाद्य कार्यक्रम की रिपोर्ट बताती है कि सरकारों द्वारा निर्धारित अनाज की ऊंची कीमतों के चलते दुनिया में साढ़े सात करोड़ वैसे लोग भुखमरी की चपेट में आ गए हैं जो पहले इससे ऊपर थे। भूखे या अधपेट रह जाने वाली जनसंख्या में हुए इस इजाफे में तीन करोड़ लोग केवल भारत के हैं। इसमें पीने के पानी, कम से कम माध्यमिक स्तर तक शिक्षा और बुनियादी चिकित्सा सुविधाओं के अभाव को जोड़ लें तो हम देख सकते हैं कि भारत आजादी के सात दशक बाद भी असल में वंचितों की दुनिया है।

देश का एक बहुत बड़ा वर्ग आज भी गरीबी, अभाव, भूखमरी में घुटा-घुटा जीवन जीता है, जो परिस्थितियों के साथ संघर्ष नहीं, समझौता करवाता है। हर वक्त अपने आपको असुरक्षित-सा महसूस करता है। जिसमें आत्मविश्वास का अभाव अंधेरे में जीना सिखा देता है। जिसके लिए न्याय और अधिकार अर्थशून्य बन जाता है। एक तरफ भूखमरी तो दूसरी ओर महंगी दावतों और धनाढ्य वर्ग की विलासिताओं के अम्बार, बड़ी-बड़ी दावतों में जूठन की बहुतायत मानवीयता पर एक बदनुमा दाग है।

इस तरह व्यर्थ होने वाले भोजन पर अंकुश लगाया जाए, विज्ञापन कंपनियों को भी दिशा निर्देश दिए जाएं, होटलों और शैक्षिक संस्थानों, दफ्तरों, कैंटीनों, बैठकों, शादी और अन्य समारोहों और अन्य संस्थाओं में खाना बेकार न किया जाए। इस भोजन का हम अपने समाज की बदहाली, भूखमरी और कुपोषण से छुटकारे के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। सरकार के भरोसे ही नहीं, बल्कि जन-जागृति के माध्यम से ऐसा माहौल बनाना चाहिए। आखिर में खुद से पूछना चाहिए कि क्या हम अशांत, अस्थिर, हिंसक और अस्वस्थ समाज चाहते हैं या उसे बदलना चाहते हैं? क्या हम भूखमरी में अव्वल राष्ट्र के नागरिक होना चाहते है या खुशहाल एवं साधन-सम्पन्न नागरिकों के राष्ट्र के नागरिक?

भुखमरी और गरीबी मिटाने के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्वयं एवं उनकी सरकार ने व्यापक प्रयत्न किये हैं, जिनका असर कालांतर में देखने को मिलेगा। जनकल्याण की जो योजनाएं चलाई गई हैं, पर अनियमितता एवं भ्रष्टाचार से मुक्त हो, इसके लिये व्यापक प्रयत्न करने होंगे। आजादी के बाद से एवं आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए यह सिर्फ संयोग नहीं है कि देश में सबसे ज्यादा अनियमितताएं उन्हीं गरीबी उन्मूलन नीतियों, सेवाओं और योजनाओं में है जिनका वास्ता समाज में कमजोर तबकों से होता है। एक बड़ा तकाजा इस भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने का है। दूसरे, नीतिगत स्तर पर भी हमें नए सिरे से सोचना होगा। भुखमरी और गरीबी मिटाने के कार्यक्रम खैरात बांटने की तरह नहीं चलाए जाने चाहिए, बल्कि उनकी दिशा ऐसी हो कि गरीबी रेखा से नीचे जी रहे लोग स्थायी रूप से उससे ऊपर आ सकें। यह तभी हो सकता है जब इन योजनाओं का मेल ऐसी अर्थनीति से हो जो विकास प्रक्रिया में ज्यादा से ज्यादा लोगों को शामिल करने पर जोर देती है।

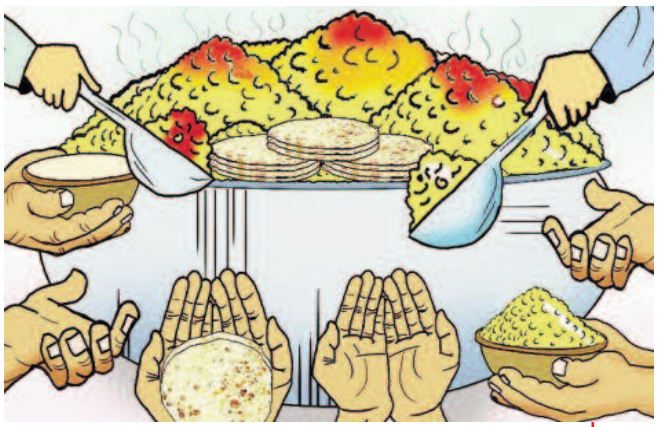

“यों ऐसे हालात लंबे समय से बने हुए हैं कि एक ओर रखरखाव के पर्याप्त इंतजाम और जरूरतमंदों तक पहुंच के अभाव में भारी पैमाने पर अनाज सड़क, खेतों एवं खुले स्थानों पर बर्बाद हो जाता है, दूसरी ओर देश में बड़ी तादाद ऐसे लोगों की है, जिन्हें पेट भरने लायक भोजन नहीं मिल पाता। इस मसले पर एक बार सुप्रीम कोर्ट को यहां तक कहना पड़ा था कि गोदामों में या उनके बाहर सड़कर अनाज के बर्बाद होने से अच्छा है कि उसे गरीबों में मुफ्त बांट दिया गया।

हिन्दु होने का आरोप लगा कर सुनील जाखड किए पंजाब की राजनीति से बाहर

यह सुविदित ही है कि लगभग चार महीना पहले जब पंजाब में सोनिया कांग्रेस अपने ही मुख्यमंत्री को अपदस्थ करने के षड्यंत्र में लगी हुई थी तो नया मुख्यमंत्री कौन हो , इस पर भी उत्तेजित बहस हो रही थी। मुख्यमंत्री के लिए सुनील जाखड का भी नाम कांग्रेस के भीतर से प्रमुखता से आने लगा था। वे पंजाब प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष रह चुके थे। राजनीति में लम्बे अरसे तक रहने के बावजूद उनका दामन पाक साफ माना जाता है। पंजाब में कुछ लोग कहते रहते हैं कि पंजाब का मुख्यमंत्री तो जाट ही बन सकता है। इस लिहाज से जाखड भी जाट हैं। मुख्यमंत्री की दौड़ में नवजोत सिंह सिद्धु और सुखजिंदर रंधावा भी दावेदार थे। चरनजीत सिंह चन्नी का नाम भी कहीं कहीं चर्चा में आ जाता था। ऐसी हालत देख कर सोनिया कांग्रेस ने अपने दल के 79 विधायकों से पूछा था कि मुख्यमंत्री किसको बनाया जाए ? राहुल गान्धी और उनकी बहन प्रियंका गान्धी ही इस काम में लगी हुई थी। इसलिए पंजाब के कांग्रेसी विधायक दिल्ली जाकर उनसे मिल भी रहे थे। यह काम निपटा कर उन्होंने घोषणा कर दी कि कांग्रेस के अधिकांश विधायक चन्नी को मुख्यमंत्री बनाने के पक्ष में हैं । जाहिर है सुनील जाखड इस दौड़ से बाहर कर दिए गए और राहुल गान्धी ने फोन पर चन्नी को बता दिया कि उनको मुख्यमंत्री बनाया गया है और कहा जाता है चन्नी इस अप्रत्याशित घोषणा से रोने लगे। अलबत्ता ये आँसू खुशी के थे। लेकिन जाखड को दरवाजे से बाहर क्यों किया गया , यह रहस्य बना रहा। आखिर उनकी सोनिया-राहुल-प्रियंका से क्या अदावत थी कि उन्हें मुख्यमंत्री नहीं बनने दिया ? क्या वे अपने चरित्र को लेकर या भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे थे ? पंजाब के लोग इतना तो जानते थे कि सुनील जाखड पर ऐसा कोई दाग नहीं है। वैसे तो सोनिया कांग्रेस की एक तथाकथित वरिष्ठ नेत्री , अम्बिका सोनी ने इशारों इशारों में स्पष्ट कर दिया था। अलबत्ता स्पष्ट करने का ढंग उनका अपना था। उन्होंने कहा कि सोनिया कांग्रेस तो मुझे मुख्यमंत्री बनाना चाहती थीं लेकिन मैंने साफ मना कर दिया कि मैं मुख्यमंत्री नहीं बन सकतीं क्योंकि पंजाब का मुख्यमंत्री कोई सिख ही बन सकता है। लेकिन तब किसी ने उनकी बात को गंभीरता से नहीं लिया था।वे जमीनी नेत्री नहीं हैं। अम्बिका गान्धी पंजाब की मुख्यमंत्री बनेंगी , इसे चुटकुला तो माना जा सकता है , गंभीर बयान नहीं। उस समय सुनील जाखड लगभग चुप ही रहे थे। शायद पार्टी का अनुशासन उन्हें चुप रहने के लिए विवश कर रहा होगा। वैसे भी अब क्या भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पहले से ही पाकिस्तान की गतिविधियों के चलते अस्थिर हो रहे पंजाब में हिन्दु-सिख के आधार पर राजनीति करेगी ?

उसके बाद जल्दी ही विधान सभा चुनावों की घोषणा हो गई। तब सोनिया कांग्रेस ने घोषणा की कि सुनील जाखड , नवजोत सिंह सिद्धु और चरनजीत सिंह चन्नी के संयुक्त नेतृत्व में चुनाव लड़ा जाएगा। सुनील जाखड को चुनाव समिति का अध्यक्ष भी बना दिया गया। लेकिन शुरू के एक दो पोस्टरों में जाखड की फोटो लगी , उसके बाद गायब हो गई। जैसे जैसे मतदान का दिन नजदीक आने लगा कांग्रेस के भीतर फिर बहस उठने लगी कि पार्टी की ओर से मुख्यमंत्री का चेहरा कौन होगा , इसकी घोषणा करनी चाहिए। एक बार फिर से सुनील जाखड , नवजोत सिंह सिद्धु और चरनजीत सिंह चन्नी के नाम की चर्चा पार्टी के भीतर और बाहर होने लगी। इस बार राहुल गान्धी ने कहा कि वे यह घोषणा पंजाब की जनता से पूछ कर करेंगे। पूछने की प्रक्रिया चालू हो गई। जब राहुल गान्धी पंजाब की जनता से पूछताछ का पाखंड कर रहे थे , तभी संकेत मिलने लगे थे कि सुनील जाखड को एक बार फिर मुख्यमंत्री के पाले से बाहर किया जा रहा था। धैर्य की भी हद होती है। उनके सब्र का बाँध टूट चुका था।

राहुल गान्धी अपने पूछताछ के परिणाम की घोषणा करें , उससे दो दिन पहले ही सुनील जाखड ने अबोहर की एक जनसभा में धमाका कर दिया। अबोहर की जनसभा में सुनील जाखड ने सार्वजनिक रूप से खुलासा किया की राहुल और उनकी बहन ने उन्हें मुख्यमंत्री क्यों नहीं बनने दिया और अब भी क्यों नहीं बनने देंगे । उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री का निर्णय करने के लिए विधायकों की राय पूछने की जो प्रकिया चलाई थी , उस प्रक्रिया में उन्हें 42 ,रंधावा को 16, प्रणीत कौर को 12 , नवजात सिंह सिद्धू को 6 और चरणजीत सिंह चन्नी को 2 विधायकों ने मत दिया था। जाखड का कहना है कि वे विधान सभा के सदस्य भी नहीं हैं , तब भी उन्हें 42 विधायकों ने मत दिया , लेकिन फिर भी उन्हें मुख्यमंत्री नहीं बनने दिया। वैसे तो कांग्रेस के लिए यह कोई नई बात नहीं है। अंग्रेजों के इस देश से जाने के अवसर पर देश का प्रधानमंत्री कौन बनेगा , इसको लेकर कांग्रेस के भीतर राय माँगी गई थी। उस समय पन्द्रह प्रदेश कांग्रेस समितियाँ थीं। उनमें सरदार पटेल को 12 और पंडित जवाहर लाल नेहरु को केवल दो वोट मिले थे। लेकिन प्रधानमंत्री नेहरु ही बने। सरदार पटेल को रास्ते से हट जाने का आदेश महात्मा गान्धी ने जय प्रकाश नारायण के हाथों गुप्त रूप से भिजवाया था। कांग्रेस के इस इतिहास को तो सुनील जाखड भी जानते होंगे। इसलिए उन्हें मुख्यमंत्री न बनाए जाने में आश्चर्य की क्या बात थी ? उस आश्चर्य की बात का खुलासा भी जाखड ने इस जनसभा में किया। महात्मा गान्धी के निर्णय का आधार मजहब या जाति नहीं थी। लेकिन सोनिया कांग्रेस के निर्णय का आधार शुद्ध रूप से मजहब ही था। जाखड का कहना है कि उन्हें हिन्दु होने का आरोप लगा कर पंजाब के मुख्यमंत्री की दौड़ से बाहर कर दिया गया। सुनील जाखड का कहना

“ राहुल गान्धी और उनकी बहन प्रियंका गान्धी ही इस काम में लगी हुई थी। इसलिए पंजाब के कांग्रेसी विधायक दिल्ली जाकर उनसे मिल भी रहे थे। यह काम निपटा कर उन्होंने घोषणा कर दी कि कांग्रेस के अधिकांश विधायक चन्नी को मुख्यमंत्री बनाने के पक्ष में हैं । जाहिर है सुनील जाखड इस दौड़ से बाहर कर दिए गए और राहुल गान्धी ने फोन पर चन्नी को बता दिया कि उनको मुख्यमंत्री बनाया गया है और कहा जाता है चन्नी इस अप्रत्याशित घोषणा से रोने लगे। अलबत्ता ये आँसू खुशी के थे।

है यदि सोनिया कांग्रेस उसे किसी आरोप के आधार पर मसलन भ्रष्टाचार , चरित्रहीनता , अनुशासनहीनता के कारण नकार देती तो मुझे कोई दुख न होता। लेकिन सोनिया गान्धी के पास ऐसा कोई आरोप नहीं था । लेकिन उन्हें हिन्दु होने का आरोप लगा कर बार बार इस दौड़ से बाहर किया जा रहा है , दुख इस बात का है। इतना ही नहीं ,सोनिया कांग्रेस ने हिन्दु होने का आरोप और उसके आधार पर मुख्यमंत्री के लिए अयोग्य होने का सन्देश सार्वजनिक रूप से अम्बिका सोनी के माध्यम से पंजाब और देश के लोगों तक पहुँचाया। सुनील जाखड का यह भी कहना है कि राहुल गान्धी ने उसे बुलाकर यह भी कहा कि तुम उप मुख्यमंत्री बन जाओ। लेकिन मुख्यमंत्री क्यों नहीं , जब 42 विधायक ऐसा कह रहे हैं ? उसका उत्तर शायद राहुल के पास एक ही था कि तुम हिन्दू हो। इसलिए राहुल गान्धी ने उस पर हिन्दु होने का आरोप लगा कर उसे मुख्यमंत्री के लिए अयोग्य ठहरा दिया। सुनील जाखड का दर्द समझा जा सकता है। पंजाब में वे साफ सुथरे आचरण के राजनीतिज्ञ माने जाते हैं। केवल हिन्दु होने के आरोप में किसी को खारिज कर दिया जाए तो कष्ट तो होगा ही। ताज्जुब है कि पंजाब के कांग्रेसी तो हिन्दु-सिख के आधार पर नहीं सोचते। यदि ऐसा होता तो 42 विधायक जाखड का समर्थन क्यों करते ?

यदि सोनिया गान्धी को लगता था कि सुनील जाखड उनको राजनैतिक नफा नुकसान के आधार पर अनुकूल नहीं लगते तो उनको नकारने का अधिकार उनके पास था ही। लेकिन उसको नकारने के लिए सोनिया कांग्रेस ने जो रास्ता अपनाया , वह पंजाब के लिए बहुत खतरनाक है। उनको नकारने का कारण उनका हिन्दु होना बताया गया। इस काम के लिए अम्बिका सोनी को मैदान में उतारा गया। उस महिला ने सार्वजनिक तौर पर कांग्रेस की ओर से घोषणा की कि पंजाब में कोई हिन्दू मुख्यमंत्री नहीं बन सकता यहाँ केवल सिख ही मुख्यमंत्री बन सकता है। सुनील जाखड को इस बयान के बिना भी मुख्यमंत्री की दौड़ से बाहर किया जा सकता था। लेकिन शायद कांग्रेस का मकसद जाखड को मुख्यमंत्री की दौड़ से बाहर करना इतना नहीं था जितना हिन्दु-सिखों के मनों में दरार पैदा करना। पंजाब के लोगों को सोनिया कांग्रेस का यह खतरनाक खेल इतना घटिया लगा कि अमृतसर स्थित अकाल तख़्त के जत्थेदार को भी कहना पड़ा कि मुख्यमंत्री के लिए योग्यता देखी जानी चाहिए मजहब कोई भी हो , वह महत्वपूर्ण नहीं है।

पंजाब में कांग्रेस जो खेल खेल रही है , वह सचमुच बहुत चिन्ताजनक है। पंजाब सीमान्त राज्य है और पाकिस्तान पिछले लम्बे अरसे से यहाँ हिन्दु-सिख में दरारें डालने की कोशिश कर रहा है। इतना ही नहीं वह यहाँ की आन्तरिक राजनीति में हस्तक्षेप कर अपने सैल बनाने के प्रयास में लगा हुआ है। पिछले दिनों कैप्टन अमरेन्द्र सिंह ने बहुत ही सधे हुए शब्दों में खुलासा किया था कि नवजोत सिंह सिद्धु को मंत्रिमंडल में लेने के लिए उन्हें पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान के नजदीकी मध्यस्थ का मैसेज आया था। मैसेज में यहाँ तक कहा गया था कि फि लहाल आप सिद्धु को मंत्री बना दें यदि बाद में वह आपके हिसाब से ठीक न रहे तो आप उसे हटा सकते हैं। कैप्टन का कहना है कि उन्होंने वे मैसेज सोनिया गान्धी को अग्रेषित कर दिए थे। सोनिया गान्धी ने रहस्यमय चुप्पी धारण किए रखी लेकिन उनकी बेटी ने जरुर उत्तर दिया कि सिद्धु पागल है , उसे ऐसे मैसेज नहीं करवाने चाहिए। इसके बाद मामला ठप्प हो गया। लेकिन शायद इन मैसजों के आदान प्रदान के बाद ही नवजोत सिंह सिद्धु पाकिस्तान गया था , जहाँ उसने एक सार्वजनिक सभा में इमरान खान की जम कर तारीफ ही नहीं की थी बल्कि पाकिस्तान के सेना प्रमुख बाजवा का आलिंगन भी किया था। कुछ पत्रकारों ने सिद्धु की इस पूरे घटनाक्रम पर टिप्पणी लेनी चाही तो उसका उत्तर था कि मरे को क्या मारना ? यानि मैं कैप्टन की किसी बात का उत्तर नहीं दूँगा क्योंकि अब उसकी कोई औकात नहीं है। सिद्धु की नजर में कैप्टन की अब कोई औकात नहीं हो सकती लेकिन यह घटना उस समय की है जब कैप्टन की औकात थी और सिद्धु की कोई औकात नहीं थी। जाहिर है सिद्धु या तो उत्तर देने से बचना चाहते थे या फिर उनके पास उत्तर था ही नहीं।

लेकिन अब यह मामला सिद्धु से ज्यादा सोनिया गान्धी के आसपास घूमना शुरू हो गया है क्योंकि कैप्टन ने यह भी बताया कि सोनिया गान्धी जब सिद्धु को कांग्रेस में लेना चाहती थी तो उन्होंने कैप्टन अमरेन्द्र सिंह को ही उसका मूल्याँकन कर रिपोर्ट देने के लिए कहा था। कैप्टन की रिपोर्ट सिद्धु के पक्ष में नहीं थी। लेकिन उसके बावजूद सोनिया गान्धी ने सिद्धु को पार्टी में शामिल कर लिया। तिथि क्रम से देखें तो सिद्धु के पक्ष में पाकिस्तान के दबाव की घटना इसके बाद हुई। उसके बाद सिद्धु ने पाकिस्तान में जाकर इमरान खान के पक्ष हमें भाषण दिया। इस भाषण के बाद कैप्टन अमरेन्द्र सिंह ने सार्वजनिक रूप से सिद्धु के इस कृत्य से अपनी असहमति जिताई। लेकिन उसके बाद से ही सोनिया गान्धी का दबाब कैप्टन अमरेन्द्र सिंह पर बढ़ने लगा कि नवजोत सिंह सिद्धु को पंजाब कांग्रेस का प्रधान बनाया जाए। जाहिर है कि पाकिस्तान को लेकर उक्त घटनाक्रम के रहते कैप्टन इस बात से कैसे सहमत हो सकते थे। उन्होंने परोक्ष रूप से एक दो बार सार्वजनिक ब्यान भी दिए कि पंजाब सीमान्त प्रदेश है और पाकिस्तान पंजाब में कुछ न कुछ शरारत करता रहता है , वह हिन्दू-सिख में विवाद करवाने के प्रयास भी करता रहता है। इसलिए पंजाब में कोई ऐसा राजनैतिक प्रयोग नहीं करना चाहिए जिससे यहाँ अस्थिरता फैले और पाकिस्तान अपनी चाल में सफल हो सके। लेकिन सोनिया गान्धी का दबाब बराबर बना रहा और कैप्टन को सिद्धू को पंजाब कांग्रेस के रूप में स्वीकार करना पड़ा। मामला यहाँ तक होता तब भी गनीमत थी। कैप्टन पाकिस्तान के विरोध में बयानबाजी बन्द नहीं कर रहे थे। जाहिर है नवजोत सिंह सिद्धू और उसके यार इमरान खान के बीच कैप्टन अमरेन्द्र सिंह ही रोड़ा था। इसलिए उसको हटाना जरुरी था। सोनिया गान्धी ने अन्ततः वह भी कर दिया। लेकिन रणनीति तो इससे भी आगे की थी। कैप्टन कह चुके थे कि पाकिस्तान पंजाब में हिन्दु-सिख के बीच दरारें डालने का काम कर रहा है। लेकिन उस काम को कैप्टन को हटाने के बाद सोनिया कांग्रेस ने या तो जानबूझकर कर या फिर अपने संकीर्ण राजनैतिक हितों के लिए सम्पन्न किया।

ताज्जुब है सोनिया गान्धी भी पाकिस्तान से आए मैसेजों की बात पर चुप्पी लगाकर बैठ गई हैं , जबकि कैप्टन का कहना है कि उन्होंने इस सारे घटना क्रम की सूचना उन्हें दे दी थी। सानिया गान्धी को स्पष्ट करना चाहिए , यह सूचना मिलने के बाद भी वे नवजोत सिंह सिद्धु के पक्ष हमें मोर्चा क्यों संभाले रही ? तकनालोजी के लोग कहते हैं कि सारे मैसेज पुनः निकाले जा सकते हैं। लगता है धीरे धीरे शिकंजा कसता जा रहा है।

पंजाब में हिन्दु-सिख में दरारें डालने का काम पाकिस्तान पिछले लम्बे अरसे से कर रहा है , इसमें कोई संशय नहीं है, लेकिन इस पूरे घटना क्रम से तो लगता है कि यह काम सोनिया कांग्रेस भी उसी गंभीरता से कर रही है।वह पंजाब में अपनी पूरी राजनीति ही हिन्दु सिख को बाँट कर चलाना चाहती है। कांग्रेस के पास इसका समुचित अनुभव भी है और उद्देष्य भी। दिल्ली में 1984 में हुआ नरसंहार इसका प्रमाण है। 1984 में दिल्ली में सिखों का कतले आम करके वह पंजाब के हिन्दुओं की वोट लेना चाहती थी और अब सुनील जाखड को हिन्दु होने के आरोप में दौड़ से बाहर कर सिखों का ध्रुवीकरण करना चाहती है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि पंजाब में हिन्दु सिख में अलगाव पैदा करने वाली इस रणनीति से सोनिया कांग्रेस को नुकसान होने की भी संभावना है। राजनीतिक नुकसान उठा कर भी सोनिया कांग्रेस पंजाब में हिन्दु सिख की चौसर क्यों बिछा रही है ? यह रहस्य अभी तक बरकरार है।

आखिर कांग्रेस पंजाब को हिन्दु और सिख के आधार पर विभाजित करने का राष्ट्र विरोधी कार्य क्यों कर रही है ? इसका उत्तर राहुल गान्धी ने लोक सभा में दिया। उन्होंने कहा कि भारत राज्यों का संघ है, भारत एक राष्ट्र है ही नहीं। भारत को लेकर यह दुविधा नेहरु-गान्धी परिवार में नई नहीं है। दुविधा पुरानी है , अलबत्ता इसमें इटली का छौंक लग जाने कारण यह दुविधा बढ़ गई है। पंडित जवाहर लाल नेहरू भी अपनेजमाने में भारत को समझने और पहचानने के प्रयास में लगे हुए थे। इस प्रयास में उन्होंने अंग्रेजी भाषा में एकमोटी किताब डिस्कवरी आफ इंडिया भी लिख दी थी।

> **“ यदि सोनिया गान्धी को लगता था कि सुनील जाखड उनको राजनैतिक नफा नुकसान के आधार पर अनुकूल नहीं लगते तो उनको नकारने का अधिकार उनके पास था ही। लेकिन उसको नकारने के लिए सोनिया कांग्रेस ने जो रास्ता अपनाया , वह पंजाब के लिए बहुत खतरनाक है। उनको नकारने का कारण उनका हिन्दु होना बताया गया। इस काम के लिए अम्बिका सोनी को मैदान में उतारा गया।**

लोकतंत्र दागी राजनीति से कब मुक्त होगा?

आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए भारतीय राजनीतिक की शुचिता, चारित्रिक उज्ज्वलता और स्वच्छता पर लगातार खतरा मंडराना गंभीर चिन्ता का विषय है। स्वतंत्र भारत के पचहतर वर्षों में भी हमारे राजनेता अपने आचरण, चरित्र, नैतिकता और काबिलीयत को एक स्तर तक भी नहीं उठा सके। हमारी आबादी पचहतर वर्षों में करीब चार गुना हो गई पर हम देश में 500 सुयोग्य और साफ छवि के राजनेता आगे नहीं ला सके, यह देश के लिये दुर्भाग्यपूर्ण होने के साथ-साथ विडम्बनापूर्ण भी है। कभी सार्वजनिक जीवन में बेदाग लोगों की वकालत की जाती थी, लेकिन अब यह आम धारणा है कि राजनेता और अपराधी एक-दूसरे के पर्याय हो चले हैं। ह्यएसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्सह्ल ने हाल ही में एक रिपोर्ट प्रस्तुत की है, जिसके तथ्य भारतीय राजनीति के दागी होने की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं, जो चौंकानेवाले एवं चिन्तनीय भी है।

एडीआर की इस ताजा अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार जिन पांच राज्य में विधानसभा चुनाव हो रहे हैं, उनमें उत्तर प्रदेश की जिन 58 विधानसभा सीटों पर मत डाले जाएंगे, वहां से कुल 623 प्रत्याशी अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। इसमें से 615 उम्मीदवारों के बारे में एडीआर को जो सूचनाएं मिली हैं, उनसे छनकर आते हुए तथ्यों के अनुसार 156 प्रत्याशी, यानी करीब 25 फीसदी उम्मीदवार दागी, भ्रष्टाचारी एवं अपराधी हैं। 121 पर तो गंभीर आपराधिक मुकदमे चल रहे हैं, जिनमें दोषसिद्ध होने पर पांच साल या इससे भी अधिक की सजा वाले गैर-जमानती जुर्म शामिल हैं। जैसे, हत्या-अपहरण-बलात्कार आदि।

हर बार सभी राजनीति दल अपराधी तत्वों को टिकट न देने पर सैद्धान्तिक रूप में सहमति जताते हैं, पर टिकट देने के समय उनकी सारी दलीलें एवं आदर्श की बातें काफूर हो जाती है। ऐसा ही इन पांच राज्यों के उम्मीदवारों के चयन में देखने को मिला है। एक-दूसरे के पैरों के नीचे से फट्टा खींचने का अभिनय तो सब करते हैं पर खींचता कोई भी नहीं। कोई भी जन-अदालत में जाने एवं जीत को सुनिश्चित करने के लिये जायज-नाजायज सभी तरीकें प्रयोग में लेने से नहीं हिचकता। रणनीति में सभी अपने को चाणक्य बताने का प्रयास करते हैं पर चन्द्रगुप्त किसी के पास नहीं है, आस-पास दिखाई नहीं देता। घोटालों और भ्रष्टाचार के लिए हल्ला उनके लिए राजनैतिक मुद्दा होता है, कोई नैतिक आग्रह नहीं। कारण अपने गिरेबार में तो सभी झांकते हैं।

एडीआर की ही रिपोर्ट बताती है कि विधानसभाओं में ही नहीं, बल्कि मौजूदा लोकसभा के लिए 2019 में जीतने वाले 539 सांसदों में से 233, यानी 43 प्रतिशत सदस्यों ने खुद पर आपराधिक मामले होने की जानकारी दी है, जबकि 2014 के लोकसभा चुनाव में 542 विजेताओं में से 185 दागी चुनकर आए थे। 2009 के लोकसभा चुनाव में यह आंकड़ा 30 प्रतिशत 543 सांसदों में से 162 था। यानी, 2009 से 2019 तक आपराधिक छवि वाले सदस्यों की लोकसभा में मौजूदगी 44 फीसदी बढ़ गई थी। इसी तरह, गंभीर आपराधिक मामलों में मुकदमों का सामना करने वाले सांसदों की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है, जो चिन्तनीय है। ऐसा प्रतीत होता है कि हम जमीन से आजाद हुए है, जमीर तो आज भी कहीं, किसी के पास गिरवी रखा हुआ है।

लोकतंत्र की कुर्सी का सम्मान करना हर नागरिक का आत्मधर्म और राष्ट्रधर्म है। क्योंकि इस कुर्सी पर व्यक्ति नहीं, चरित्र बैठता है। लेकिन हमारे लोकतंत्र की त्रासदी ही कही जायेगी कि इस पर स्वार्थता, महत्वाकांक्षा, बेईमानी, भ्रष्टाचारिता, अपराध आकर बैठती रही है। लोकतंत्र की टूटती सांसों को जीत की उम्मीदें देना जरूरी है और इसके लिये साफ-सुथरी छवि के राजनेताओं को आगे लाना समय की सबसे बड़ी जरूरत है। यह सत्य है कि नेता और नायक किसी कारखाने में

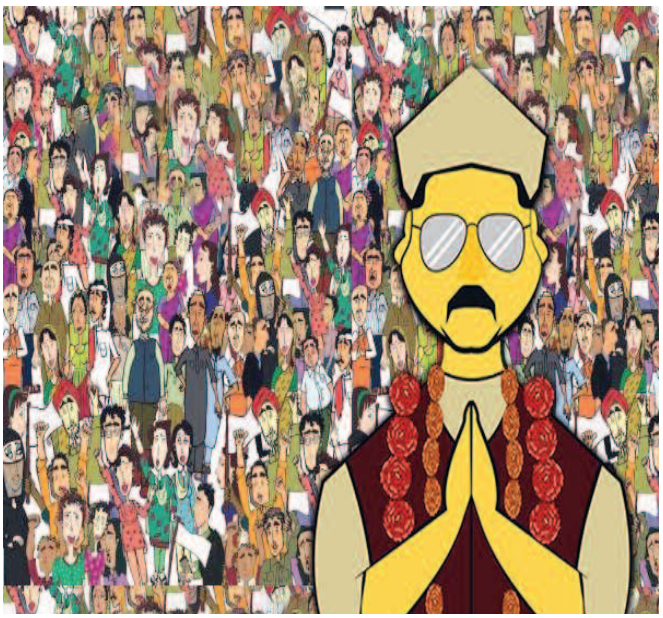

पैदा करने की चीज नहीं हैं, इन्हें समाज में ही खोजना होता है। काबिलीयत और चरित्र वाले लोग बहुत हैं पर परिवारवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार, बाहुबल व कालाधन उन्हें आगे नहीं आने देता।

आजादी के अमृत महोत्सव मनाते हुए राजनीति के शुद्धिकरण को लेकर देश के भीतर बहस हो रही है परन्तु कभी भी राजनीतिक दलों ने इस दिशा में गंभीर पहल नहीं की। पहल की होती तो संसद और विभिन्न विधानसभाओं में दागी, अपराधी सांसदों और विधायकों की तादाद बढ़ती नहीं। यह अच्छी बात है कि देश में चुनाव सुधार की दिशा में सोचने का रुझान बढ़ रहा है। चुनाव आयोग एवं सर्वोच्च न्यायालय इसमें पहल करते हुए दिखाई देते हैं, चुनाव एवं राजनीतिक शुद्धिकरण की यह स्वागतयोग्य पहल उस समय हो रही है जब चुनाव आयोग द्वारा पांच राज्यों उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, मणिपुर व गोवा का चुनावी कार्यक्रम घोषित हो गया है।

विडम्बनापूर्ण स्थिति तो यह है कि चुनाव-दर-चुनाव आपराधिक छवि वाले

> “एडीआर की इस ताजा अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार जिन पांच राज्य में विधानसभा चुनाव हो रहे हैं, उनमें उत्तर प्रदेश की जिन 58 विधानसभा सीटों पर मत डाले जाएंगे, वहां से कुल 623 प्रत्याशी अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। इसमें से 615 उम्मीदवारों के बारे में एडीआर को जो सूचनाएं मिली हैं, उनसे छनकर आते हुए तथ्यों के अनुसार 156 प्रत्याशी, यानी करीब 25 फीसदी उम्मीदवार दागी, भ्रष्टाचारी एवं अपराधी हैं।

उम्मीदवारों की जीत का ग्राफ ऊपर चढ़ रहा है, इसलिए राजनीतिक दल भी मानो अब यह मानने लगे हैं कि दागी छवि जीत की गारंटी है। वैसे भी, चुनावों में हर हाल में जीत हासिल करना ही राजनीतिक पार्टियों का मकसद होता है। इसके लिए वे हर वह जायज-नाजायज तरीका अपनाने को तैयार रहते हैं, जिनसे उनकी मौजदूगी सदन में हो। कुछ जन-प्रतिनिधि यह तर्क देते हैं कि राजनीति से प्रेरित मुकदमे उनके ऊपर जबरन लादे गए हैं। यह कुछ हद तक सही भी है। मगर चुनाव आयोग और अदालत, दोनों का यह मानना रहा है कि जिन उम्मीदवारों के खिलाफ गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं, उनको तो चुनाव लड़ने से रोका जाना चाहिए।

समय की दीर्घा जुल्मों को नये पंख देती है। यही कारण है कि राजनीति का अपराधीकरण और इसमें व्याप्त भ्रष्टाचार लोकतंत्र को भीतर ही भीतर खोखला करता जा रहा है। एक आम आदमी यदि चाहे कि वह चुनाव लड़कर संसद अथवा विधानसभा में पहुंचकर देश की ईमानदारी से सेवा करे तो यह आज की तारीख में संभव ही नहीं है। सम्पूर्ण तालाब में जहर घुला है, यही कारण है कि कोई भी पार्टी ऐसी नहीं है, जिसके टिकट पर कोई दागी चुनाव नहीं लड़ रहा हो। यह अपने आप में आश्चर्य का विषय है कि किसी भी राजनीतिक दल का कोई नेता अपने भाषणों में इस पर विचार तक जाहिर करना मुनासिब नहीं समझता।

सर्वोच्च अदालत ने दागियों को विधायिका से बाहर रखने के तकाजे से समय-समय पहल की है उसका लाभ इन पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में तो होता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है। एक समय था जब ऐसे किसी नियम-कानून की जरूरत महसूस नहीं की जाती थी, क्योंकि तब देश-सेवा और समाज-सेवा की भावना वाले लोग ही राजनीति में आते थे। पर अब हालत यह है कि हर चुनाव के साथ विधायिका में ऐसे लोगों की तादाद और बढ़ी हुई दिखती है जिन पर आपराधिक मामले चल रहे हों। हमारे लोकतंत्र के लिए इससे अधिक शोचनीय बात और क्या हो सकती है!

गांधीजी ने एक मुट्ठी नमक उठाया था, तब उसका वजन कुछ तोले ही नहीं था। उसने राष्ट्र के नमक को जगा दिया था। सुभाष ने जब दिल्ली चलो का घोष किया तो लाखों-करोड़ों पांवों में शक्ति का संचालन हो गया। नेहरू ने जब सतलज के किनारे सम्पूर्ण आजादी की मांग की तो सारी नदियों के किनारों पर इस घोष की प्रतिध्वनि सुनाई दी थी। पटेल ने जब रियासतों के एकीकरण के दृढ़ संकल्प की हुंकार भरी तो राजाओं के वे हाथ जो तलवार पकड़े रहते थे, हस्ताक्षरों के लिए कलम पर आ गये। आज वह तेज व आचरण नेतृत्व में लुप्त हो गया। आचरणहीनता कांच की तरह टूटती नहीं, उसे लोहे की तरह गलाना पड़ता है। विकास की उपलब्धियों से हम ताकतवर बन सकते हैं, महान नहीं। महान उस दिन बनेंगे जिस दिन हमारी नैतिकता एवं चरित्र की शिलाएं गलना बन्द हो जायेगी और उसी दिन लोकतंत्र को शुद्ध सांसें मिलेंगी।

सभी दल राजनीति नहीं, स्वार्थ नीति चला रहे हैं और इसके लिये अपराधों को पनपने का अवसर दे रहे हैं। इन दागी सांसदों और विधायकों के खिलाफ आपराधिक मामलों की सुनवाई के लिए विशेष अदालतों के गठन की बात लम्बे समय से सुनाई दे रही है, लेकिन इसके गठन का साहस किसी ने नहीं किया। ऐसे आरोपों का सामना कर रहे जनप्रतिनिधियों के खिलाफ एवं लोकतंत्र के सर्वकल्याणकारी विकास लिये भारतीय मतदाता संगठन एवं उसके संस्थापक अध्यक्ष डॉ. रिखबचन्द जैन लम्बे समय से प्रयास कर रहे हैं। आरोपी-दोषी जनप्रतिनिधियों के लंबित मामलों में सुनवाई तेजी से हो, यह अपेक्षित है। इसी से लोकतंत्र का नया सूरज उदित हो सकेगा।

“समय की दीर्घा जुल्मों को नये पंख देती है। यही कारण है कि राजनीति का अपराधीकरण और इसमें व्याप्त भ्रष्टाचार लोकतंत्र को भीतर ही भीतर खोखला करता जा रहा है। एक आम आदमी यदि चाहे कि वह चुनाव लड़कर संसद अथवा विधानसभा में पहुंचकर देश की ईमानदारी से सेवा करे तो यह आज की तारीख में संभव ही नहीं है। सम्पूर्ण तालाब में जहर घुला है, यही कारण है कि कोई भी पार्टी ऐसी नहीं है।

संघर्ष और पीड़ा का कालकूट पी महाप्राण बने निराला

हिन्दी साहित्य में सूर्य की भाँति अपनी कान्ति से राष्ट्रीय चेतना को आलोकित करने वाले सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला उन महानतम तपस्वियों में से एक हैं जिन्होंने आजीवन संघर्ष, पीड़ा,उपेक्षा,अपमान का विष पीकर उसे अपनी लेखनी की स्याही बनाते हुए सर्जन की महागाथा लिखी। उनके प्रारम्भिक जीवन के बाद पिता रामसहाय तेवारी की मृत्यु के साथ ही उनके जीवन का यह कटु एवं यथार्थ सत्य है कि -निराला के जीवन में दुःख व संघर्ष का चोली-दामन जैसा साथ रहा है। सुर्जकुमार तेवारी के साथ प्रारम्भ हुई उनकी साहित्यिक यात्रा मतवाला पत्र में सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के रुप में हुई । उनकी यह यात्रा हिन्दी साहित्य की उन रुढ़िवादी परम्पराओं को तोड़कर हुई जिनके पाश में साहित्य एक बन्धन में जकड़ा हुआ था।

निराला ने उन सभी को ध्वस्त कर, चुनौती देते हुए अपनी आक्रामकता के साथ साहित्य के अखाड़े में अपनी सशक्त भूमिका निभाई। वर्तमान के सन्दर्भ में निराला को एक महान साहित्यकार के रुप में पूजा तो जाता है,लेकिन उनके जीवन संघर्षों तथा उनके सम्पूर्ण जीवन में व्याप्त रही अन्तहीन वेदना की ओर दृष्टिपात करने की किसी में सामर्थ्य नहीं हो पाती है।

उनकी साहित्यिक अभिरुचि को जागृत करने का श्रेय निराला की पत्नी मनोहरा देवी की भक्ति भावना व उनके मुखारविन्द से बहने वाले मधुर गीतों को दिया जाना न्यायोचित होगा। तो ,वहीं दूसरी परिस्थितियों में बंगाल में हिन्दी भाषा की उपेक्षा तथा बंगालियों के अलावा अन्य को हेयदृष्टि के साथ देखने की भावना भी एक मुख्य कारण रहा है। निराला के अन्दर का वह प्रतिकार जागा और उनके हृदय में हिन्दी की प्राण! प्रतिष्ठा करने का वह लावा जागृत हुआ जो हिन्दी को शिखर पर सुशोभित करने के लिए अपना सर्वस्व खोकर निर्माण बनने वाला था।

यहाँ तक कि निराला स्वयं को मिटाने की सीमा से भी नहीं चूकने वाले थे।

निराला की अक्खड़ता,आक्रामकता, तीक्ष्णता व सत्य के प्रति आग्रह की भावना किसी को भी भस्मीभूत करने की सामर्थ्य रखती थी। उनके जीवन में अथार्भाव भले रहा,किन्तु उनके स्वाभिमान व आत्मसम्मान के समक्ष बड़े से बड़ा विद्वान, महारथी कहीं भी नहीं टिक पाया।

वे निराला जिनके लेखों को सन् 1937 तक हिन्दी की ख्यातिलब्ध पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों द्वारा प्रकाशित करने से मना किया जाता रहा । विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से उनकी रचनाएँ लगातार वापस आती रही आईं। सम्पादकों से लेकर आलोचकों ने उन्हें उपेक्षित करने का कोई भी हथकण्डा नहीं छोड़ा तथा उनकी रचनाओं को कमतर आँकते रहे आए। लेकिन निराला ने उपेक्षा,आलोचना व मान-अपमान, पीड़ा,लगातार मिल रही अस्वीकार्यता का गरल पीकर निरन्तर स्वयं को परिष्कृत, परिमार्जित किया।

सम्पादकों से वाद-प्रतिवाद का क्रम उनके जीवन में चलता रहा आया। अपने साहित्यिक विरोधियों की बखिया उधेड़ने तथा वे सदैव विसंगतियों पर प्रहार करते रहे आए। वे साहित्यिक रौबदारी के आगे कभी नहीं झुके बल्कि दृढ़ता के साथ उसका प्रतिकार कर आभामण्डल के पीछे की कुटिलताओं के मुखौटे को उतारकर उन्हें यथार्थ का बोध कराया।

निराला में जितनी प्रतिभा एवं साहित्यिक कौशल व जीवन के विशद् अध्ययन तथा साहित्य की मर्मज्ञता से परिष्कृत दृष्टि थी ।उसका अधिकांशतः हिस्सा निराला को स्वयं की स्थापना,विरोधियों को प्रत्युत्तर देने तथा हिन्दी की समृद्धि व उसकी जनस्वीकार्य प्राण! प्रतिष्ठा में लग गया। आर्थिक तंगी व उदारता की पराकाष्ठा को पार कर निराला ने साहित्य में जो लिखा,उसे जिया और जनाकांक्षाओं की पूर्ति में स्वयं का हवन करने से कभी नहीं हिचकिचाए।

प्रकाशकों से लेकर सम्पादकों तक ने उनका भरपूर शोषण किया। हिन्दी के

उस सूर्य को वक्त ने ताप में जलाकर उसकी आभा छीनने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी,किन्तु उसके हृदय से प्रवाहित अजस्र स्त्रोत ने उसे महाकाय बना दिया।

हिन्दी के लेखकों की जो दुर्गति आज है,वही तब भी थी निराला भी इससे अछूते नहीं रहे। नवांकुरों की उपेक्षा के साथ उनके शोषण व अथार्भाव के आगे साहित्यकार का प्रत्यर्पण कराकर उसके सर्जन को गिरवी रखने की परम्परा तब भी थी और आज भी है। जब निराला जैसा महान साहित्यकार उसका शिकार होने से नहीं बच पाया ,तो वर्तमान की बात करने का कोई भी औचित्य ही नहीं बचता है। निराला की विक्षिप्तता के पीछे यह सबसे महत्वपूर्ण कारण था कि प्रकाशकों, सम्पादकों ने उनकी लेखनी को गिरवी रख लिया तथा उनके सर्जन से उन्होंने भरपूर कमाई तो की ,किन्तु निराला को उनके अपार सर्जन के बदले वह धनराशि उपलब्ध नहीं करवाई ,जिसके वे हकदार थे। आर्थिक तंगी के कारण ही उन्हें छद्म नाम से लिखना पड़ा,अपनी कृतियों को औने-पौने दाम में प्रकाशकों को सौंप देना पड़ा। उनके हृदय में भी वह टीस सदा रही आई जो हर उस लेखक के अन्तस से तब उठती है,जब उसे अपना सर्जन अर्थ के लिए बेंच देना पड़े।

निराला की अपने जीवन काल में रविन्द्रनाथ टैगोर से रही आई प्रतिस्पर्धा के पीछे तथा स्वयं को उनसे श्रेष्ठतर समझने ,सिध्द करने के पीछे का कारण हिन्दी के प्रति उपेक्षा तथा तत्कालीन समय में रविन्द्रनाथ टैगोर की प्रतिष्ठा के सामने अन्य सभी को कमतर आँकने की प्रवृत्ति रही है। दूसरी, चीज यह कि निराला इस बात से सदैव क्षुब्ध रहते थे कि सभी के लिए टैगोर ही मानक क्यों हों? वो भी तब

“ निराला की अक्खड़ता,आक्रामकता, तीक्ष्णता व सत्य के प्रति आग्रह की भावना किसी को भी भस्मीभूत करने की सामर्थ्य रखती थी। उनके जीवन में अथार्भाव भले रहा,किन्तु उनके स्वाभिमान व आत्मसम्मान के समक्ष बड़े से बड़ा विद्वान, महारथी कहीं भी नहीं टिक पाया। वे निराला जिनके लेखों को सन 1937 तक हिन्दी की ख्यातिलब्ध पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों द्वारा प्रकाशित करने से मना किया जाता रहा ।

जब जिसकी तुलना याकि उसे कमतर आँकने का प्रयत्न किया जा रहा है ,उसके साहित्य का अवलोकन किए बिना कैसे किसी का भी निर्धारण कर दिया जाएगा?

हालांकि वे रविन्द्रनाथ टैगोर से प्रभावित भी दिखे ।उनके अन्दर का विद्रोही इतना प्रखर था कि रामकृष्ण मठ के सन्यासियों के समक्ष अपना विरोध जताने के लिए उनके कमरों में चप्पल पहन कर चले जाते। नियमों की अवहेलना करते । रामविलास शर्मा ने निराला की साहित्य साधना में लिखा है कि वे काव्य प्रतिभा की महत्ता बतलाते हुए कहते कि :—

ह्मेरी प्रतिभा रविन्द्रनाथ ठाकुर से घटकर नहीं है। सन्यासी हँसने लगते।इस पर सूर्यकान्त चिढ़कर कहते ,यदि मैं भी प्रिन्स द्वारकानाथ ठाकुर का नाती होता,तो आपलोग मानते कि मेरे अन्दर महाकवि की प्रतिभा है।ह्व

यदि वर्तमान सन्दर्भ में उनकी इस गर्वोक्ति को कसौटी पर रखकर देखा जाए तो क्या निराला अपने बारे में कुछ गलत कह रहे थे? यदि उनके जीवन में अथार्भाव से उपजी समस्याएँ न होतीं तो क्या उनकी साहित्य सृष्टि कहीं और ज्यादा विराट न होती ? रामकृष्ण वचनामृत से लेकर विवेकानन्द साहित्य का अनुवाद ,महाभारत टीका तथा अनेकों वे लेख जो पत्रिकाओं की चौखट से दुत्कार कर लौटा दिए गए। वे लेख जो उन्होंने छद्म नामों से लिखे तथा वे साहित्यिक कृतियाँ जिनको विपन्नता ने ग्रास बनाकर लील लिया तथा प्रकाशकों ने जिन पर से निराला का लोप कर दिया।क्या एक महान तपस्वी की तपस्या को खण्डित करने के ये सभी यत्न नहीं थे?

वह निराला जो हिन्दी व साहित्यकारों के अपमान पर महात्मा गाँधी से भिड़ जाता रहा हो । जो जवाहर लाल नेहरू के द्वारा झ बनारस के साहित्यकारों को दरबारी परम्परा का बोलबाला कहते हुए नसीहत देने पर आग से उबल उठता रहा हो। और नेहरू को घण्टों सुनाता रहा हो तथा इस बात की चुनौती भी देता हो कि आपको हिन्दी की समझ नहीं है। जो हिन्दी साहित्यकारों के अपमान ,टिप्पणियों पर अपने हिताहित की चिन्ता किए बगैर गाँधी, नेहरू,आचार्य नरेन्द्रदेव जैसे राजनेताओं से सीधी बहस कर उन्हें खरी-खोटी कहने का साहस रखता हो वह निराला ही हो सकता है। लेकिन निराला के जीते-जी उनकी दुर्गति झ दुर्दशा के जिम्मेदार साहित्यकारों , पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों ने अपनी श्रेष्ठता के अहं में निराला का समादर नहीं किया बल्कि उन्हें नारकीय जीवन जीने के लिए विवश किया।

नौ कविताओं के काव्य संग्रह -अनामिका से उनकी साहित्यिक प्रतिष्ठा एवं रचनाधर्मिता को स्वीकार्यता मिली। तत्पश्चात मतवाला में लेख,व्यंग्य बाण ।पहली कहानी देवी में दारागंज मुहल्ले की पगली लड़की की मृत्यु पर उसे जीवन्तता प्रदान की।चतुरी चमार,बिल्लेसुर बकरिहा,कुल्ली भाट जैसी मार्मिक ,सामाजिक-राजनैतिक विसंगतियों पर आधारित कहानियाँ लिखीं।

उन्होंने अपनी रचना तुलसीदास में अपने जीवन व पत्नी मनोहरा देवी की मंञ्जुलता ,राजनैतिक परिवेश ,मुगलों की निकृष्टता -बर्बरता के साथ ही भारतीय वीरों के शौर्य एवं साहस व भारतीय चेतना के स्वर को झंकृत किया। उन्होंने इसका भी आह्वान किया कि -राष्ट्र का सांस्कृतिक सूर्य दैदीप्यमान हो। जागो फिर एक बार ठीक ऐसी ही रचना है। सरोजस्मृति- पिता की करुणा व अपने दायित्व न निभा पाने का शोकगीत है जिसने उन्हें अन्दर -अन्दर ही तोड़ कर रख दिया था।

निराला का सम्पूर्ण जीवन एक प्रयोगशाला और साहित्य का विषय बना रहा जिसमें उन्होंने पीड़ा,अपमान, आत्मग्लानि के साथ साहचर्य बनाकर साहित्य के शिखर को छुआ। वर !दे वीणावादिनि वर दे ने सचमुच निराला का हेतु बनाकर साहित्यकाश को शुभ्रता प्रदान की। व्याधियों से जूझते निराला की अन्तिम विदा की पूर्व बेला पर शास्त्रीय विधि-विधान के साथ उनके द्वारा सर्जित राम की शक्ति पूजा का जयगोपाल मिश्र ने पाठ कर उन्हें विदाई दी:—

रवि हुआ अस्त, ज्योति के पत्र पर लिखा
अमर रह गया,राम-रावण का अपराजेय समर।

हमारे यहाँ की अनूठी व दुर्भाग्यपूर्ण परम्परा के अनुसार झ व्यक्ति के जीते जी उसकी ओर मुँह फेर न निहारना और मृत्यु पर आँसू बहाकर उसका हितैषी बनने की संस्कृति के अनुसार -निराला की मृत्यु के पश्चात उन पर केन्द्रित विशेषांकों की बाढ़ आ गई। निराला के प्रारम्भिक काल में जिस सरस्वती पत्रिका के सम्पादक ने उनकी रचना लौटी दी थी,उनकी मृत्यु के बाद उसी सरस्वती पत्रिका ने लिखा झ ह्महमारा मत है कि तुलसीदासजी के बाद से अब तक हिन्दी काव्य -जगत में निराला जी की काव्य प्रतिभा का कोई कवि नहीं हुआ।

राष्ट्रपति भवन में निराला जयन्ती समारोह हुआ जिसमें निराला पर फिल्म प्रदर्शन ,साहित्यिक प्रदर्शनी, निराला की वाणी में टेप रिकार्डिंग का प्रसारण किया गया।उनके साहित्यिक समर्थकों - विरोधियों से लेकर संसद भवन में डॉ.राधाकृष्णन की उपस्थिति में उनका पुण्यस्मरण किया गया। निराला के चित्र का अनावरण करते हुए झ निराला जी को ऋषि-मुनियों की परम्परा का एक सच्चा कवि,विद्रोही, क्रान्तिकारी तथा युगप्रवर्तक कहा।उनके नाम पर निराला विद्यापीठ की स्थापना का सुझाव साप्ताहिक हिन्दुस्तान ने दिया।

निराला सचमुच में निराला थे उनका अपने प्रति वह आत्मविश्वास या गर्वोक्ति अकारण नहीं थी जब वे स्वयं को महाकवि कहते थे।समय की चाकी ने उनका मूल्याकंन अवश्य किया किन्तु उनके मरणोपरांत। काश! यह क्रम पलटे और दूजे निराला को जीते जी वह सम्मान व प्रतिष्ठा मिल सके जिसका वह अधिकारी हो। उस महाप्राण निराला का अदम्य साहस ,हिन्दी के प्रति ममतामयी अपार अनुराग तथा रचनाधर्मिता का वैराट्य सदैव राष्ट्र को आलोकित करता रहेगा।

“निराला का सम्पूर्ण जीवन एक प्रयोगशाला और साहित्य का विषय बना रहा जिसमें उन्होंने पीड़ा,अपमान, आत्मग्लानि के साथ साहचर्य बनाकर साहित्य के शिखर को छुआ। वर !दे वीणावादिनि वर दे ने सचमुच निराला का हेतु बनाकर साहित्यकाश को शुभ्रता प्रदान की। व्याधियों से जूझते निराला की अन्तिम विदा की पूर्व बेला पर शास्त्रीय विधि-विधान के साथ उनके द्वारा सर्जित राम की शक्ति पूजा का जयगोपाल मिश्र ने पाठ कर उन्हें विदाई दी।

पाकिस्तान की इस नीति पर कैसे करें ऐतबार

पाकिस्तान ने 14 जनवरी को पहली बार अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा नीति की घोषणा की है। जब से पाकिस्तान बना है, ऐसी घोषणा पहले कभी नहीं की गई। इसका अर्थ यह नहीं है कि पाकिस्तान की कोई सुरक्षा नीति ही नहीं थी। यदि ऐसा होता तो वह अपने पड़ोसी भारत के साथ कई युद्ध कैसे लड़ता और आतंकवाद को अपनी स्थायी रणनीति क्यों बनाए रखता? परमाणु बम तो वैसी स्थिति में बन ही नहीं सकता था। अफगानिस्तान के साथ वह कई-कई बार युद्ध के कगार पर कैसे पहुंच जाता? अफगानिस्तान के सशस्त्र गिरोहों को पिछले 50 साल से वह शरण क्यों देता रहता? किसी सुरक्षा नीति के बिना अमेरिका के सैन्य-गुटों में वह शामिल क्यों हो गया था? पहले अमेरिका और अब चीन का पिछलग्गू बनने के पीछे उसका रहस्य क्या है? बस वही, सुरक्षा नीति! सुरक्षा किससे? भारत से।

डर से उपजी नीति

जब से पाकिस्तान बना है, उसके दिल में यह डर बैठा हुआ है कि भारत उसका वजूद मिटा देगा। भारत उसे खत्म करके ही दम लेगा। भारत ने 1971 में पूर्वी पाकिस्तान को तोड़कर बांग्लादेश बना दिया। उसे लगता है कि वह पाकिस्तान के कम से कम चार टुकड़े करना चाहता रहा है। एक पंजाब, दूसरा सिंध, तीसरा बलूचिस्तान और चौथा पख्तूनिस्तान। तो पाकिस्तान भी भारत के टुकड़े करने की कोशिश क्यों न करे? उसकी कोशिश कश्मीर, खालिस्तान, असम, नगालैंड और मिजोरम को खड़ा करने की रही है। तू डाल-डाल तो हम पात-पात! नहले पर दहला मारने की यही नीति पाकिस्तान की सुरक्षा नीति रही है। भारत ने परमाणु बम बनाया तो पाकिस्तान ने भी जवाबी बम बना लिया।

ऐसी सुरक्षा नीति की भला कोई सरकार घोषणा कैसे कर सकती थी? उसे जितना छिपाकर रखा जाए, उतना ही अच्छा। लेकिन उसके नतीजों को आप कैसे छिपा सकते हैं? पिछले 7-8 दशकों में वे नतीजे सारी दुनिया के सामने अपने आप आने लगे। अपने आप को तुर्रम खां बताने वाले पाकिस्तान के फौजी तानाशाहों, राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों को मालदार मुल्कों के आगे भीख का कटोरा फैलाए खड़े रहना पड़ता रहा है। मोहम्मद अली जिन्ना ने पाकिस्तान का जो गुब्बारा 1947 में फुलाया था, उसकी हवा आज तक निकली पड़ी है। जिन्ना के सपनों का पाकिस्तान एक आदर्श इस्लामी राष्ट्र क्या बनता, वह दक्षिण एशिया के सबसे पिछड़े राष्ट्रों में शुमार हो गया।

“पाकिस्तान ने 14 जनवरी को पहली बार अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा नीति की घोषणा की है। जब से पाकिस्तान बना है, ऐसी घोषणा पहले कभी नहीं की गई। इसका अर्थ यह नहीं है कि पाकिस्तान की कोई सुरक्षा नीति ही नहीं थी। यदि ऐसा होता तो वह अपने पड़ोसी भारत के साथ कई युद्ध कैसे लड़ता और आतंकवाद को अपनी स्थायी रणनीति क्यों बनाए रखता? परमाणु बम तो वैसी स्थिति में बन ही नहीं सकता था।

सुरक्षा नीति में आर्थिक हितों को सबसे ऊपर रखने की बात कही गई है, फिर रक्षा बजट इतना बड़ा क्यों?

अब इमरान सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा नीति की जो घोषणा की है, उसमें आर्थिक सुरक्षा का स्थान सबसे ऊंचा है। इसीलिए उसमें साफ-साफ कहा गया है कि पाकिस्तान अब सामरिक सुरक्षा के बजाय आर्थिक सुरक्षा पर अपना ध्यान केंद्रित करेगा। यदि वह सचमुच ऐसा करेगा तो बताए कि उसका रक्षा-बजट कुल बजट का 16 प्रतिशत क्यों है? यदि अपने इस 9 बिलियन डॉलर के फौजी बजट को वह आधा कर दे तो क्या बचे हुए पैसों का इस्तेमाल पाकिस्तानियों की शिक्षा, चिकित्सा और भोजन की कमियों को पूरा करने में नहीं किया जा सकता? इस नई सुरक्षा नीति की घोषणा के बाद देखना है कि अब उसका बजट कैसा आता है। यह नई सुरक्षा नीति कोई रातोरात बनकर तैयार नहीं हुई है। पिछले सात साल से इस पर काम चल रहा है, नवाज शरीफ के जमाने से। मियां नवाज के विदेश मंत्री और सुरक्षा सलाहकार रहे बुजुर्ग नेता सरताज अजीज ने इस नई नीति पर काम शुरू किया था। उन्हीं दिनों भारत में बीजेपी की नरेंद्र मोदी सरकार कायम हुई थी। मियां नवाज के घर मोदी अचानक जाकर उनकी नातिन की शादी में शामिल भी हुए थे। उसके पहले मोदी के शपथ-विधि समारोह में नवाज और अजीज ने शिरकत की थी। उन्हीं दिनों इस नई सुरक्षा नीति की नींव पड़ी थी, लेकिन अब जो दस्तावेज प्रकट हुआ है, उसमें मोदी और संघ की कटु आलोचना है। इस नीति की घोषणा करते समय कही गई इस बात पर कौन भरोसा करेगा कि पाकिस्तान अगले सौ साल तक भारत से अपने संबंध सहज बनाए रखेगा? सचमुच आपका यही इरादा है तो अभी भी आपने आधी नीति छिपाकर क्यों रखी है? भारत ने तो अफगानिस्तान के लिए 50 हजार टन अनाज और दवाइयां भिजवाने की घोषणा की थी, लेकिन पाकिस्तान ने अभी तक उसे काबुल पहुंचाने का रास्ता नहीं खोला है। भारत ने अफगानिस्तान पर बात करने के लिए पड़ोसी राष्ट्रों की बैठक में पाकिस्तान को भी बुलाया था। लेकिन उसने चीन के साथ मिलकर उसका बहिष्कार कर दिया। अफगान-संकट ने तो ऐसा मौका पैदा कर दिया था कि उसका मिल-जुलकर समाधान करते हुए भारत और पाकिस्तान के बीच दोस्ती हो सकती थी। यदि पाकिस्तान को आर्थिक रूप से समृद्ध होना है तो उसे दक्षिण और मध्य एशिया के बीच एक सेतु की भूमिका तुरंत स्वीकार करनी चाहिए। यदि वह एक सुरक्षित पुल बन जाए तो मध्य एशिया के गैस, तेल, लोहा, तांबा, यूरेनियम आदि से भारत और पाकिस्तान मालामाल हो सकते हैं। अभी तो भारत-पाक व्यापार पर भी तालाबंदी लगी हुई है।

संवाद पर हो जोर

नई नीति में यह ठीक कहा गया है कि अब पाकिस्तान कश्मीर के कारण भारत से बातचीत बंद नहीं करेगा। लेकिन तब भी वह राग कश्मीर अलापता ही रहेगा। अंतरराष्ट्रीय समुदाय की अब कश्मीर में कोई रुचि नहीं है। चीन भी उस पर चुप ही रहता है। लेकिन हर अंतरराष्ट्रीय मंच पर कश्मीर को घसीटने से पाकिस्तान बाज नहीं आता। अच्छा हो कि इमरान सरकार इस मुद्दे पर भारत सरकार से सीधे संवाद की पहल करे। पाकिस्तान के जितने भी राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों और बुद्धिजीवियों से पिछले 50 साल में मेरा संवाद हुआ है, उनसे मैंने यही कहा है कि जुल्फिकार अली भुट्टो का यह कथन आप भूल जाइए कि कश्मीर लेने के लिए आप हजार साल तक भारत से लड़ते रहेंगे। कश्मीर का हल लात से नहीं, बात से ही होगा। कश्मीर के बहाने पाकिस्तान ने सारी दुनिया से बदनामी मोल ले ली। वह आतंक और फौजी तानाशाही का गढ़ बन गया। भारत के साथ उसकी दुश्मनी खत्म हो जाए तो उसे अमेरिका या चीन जैसे राष्ट्रों का चरणदास नहीं बनना पड़ेगा और पाकिस्तान के लोग भारतीयों की तरह लोकतंत्र और खुशहाली में जी सकेंगे।

“अब इमरान सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा नीति की जो घोषणा की है, उसमें आर्थिक सुरक्षा का स्थान सबसे ऊंचा है। इसीलिए उसमें साफ-साफ कहा गया है कि पाकिस्तान अब सामरिक सुरक्षा के बजाय आर्थिक सुरक्षा पर अपना ध्यान केंद्रित करेगा। यदि वह सचमुच ऐसा करेगा तो बताए कि उसका रक्षा-बजट कुल बजट का 16 प्रतिशत क्यों है? यदि अपने इस 9 बिलियन डॉलर के फौजी बजट को वह आधा कर दे तो क्या बचे हुए पैसों का इस्तेमाल पाकिस्तानियों की शिक्षा, चिकित्सा और भोजन की कमियों को पूरा करने में नहीं किया जा सकता?

यूक्रेन संकट : भारत की दुविधा

इस समय यूक्रेन पर सारी दुनिया की नजर लगी हुई हैं, क्योंकि अमेरिका और रूस एक-दूसरे को युद्ध के धमकी दे रहे हैं। जैसे किसी जमाने में बर्लिन को लेकर शीतयुद्ध के उष्णयुद्ध में बदलने की आशंका पैदा होती रहती थी, वैसा ही आजकल यूक्रेन को लेकर हो रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन और विदेश मंत्री खुले-आम रूस को धमकी दे रहे हैं कि यदि रूस ने यूक्रेन पर हमला किया तो उसके नतीजे बहुत बुरे होंगे। सचमुच यदि यूरोप में युद्ध छिड़ गया तो इस बार वहां प्रथम और द्वितीय महायुद्ध से भी ज्यादा लोग मारे जा सकते हैं, क्योंकि इन युद्धरत राष्ट्रों के पास अब परमाणु शस्त्रास्त्रों और प्रक्षेपास्त्रों का अंबार लगा हुआ है। रूस ने यूक्रेन की सीमा पर लगभग एक लाख फौजियों को अड़ा रखा है। यूक्रेन के दोनबास क्षेत्र पर पहले से रुस-समर्थक बागियों का कब्जा है। यूक्रेन पर लंबे समय तक रूस का राज रहा है।

वह अभी लगभग दो-दशक पहले तक रुस का ही एक प्रांत भर था। सोवियत रुस के विश्व-प्रसिद्ध नेता निकिता ख्रुश्चौफ यूक्रेन में ही पैदा हुए थे। इस समय यूरोप में यूक्रेन ही रूस के बाद सबसे बड़ा देश है। लगभग सवा चार करोड़ की आबादीवाला यह पूर्वी यूरोपीय देश पश्चिमी यूरोप के अमेरिका-समर्थक देशों के साथ घनिष्ट संबंध बनाने की कोशिश करता रहा है। वह रूस के शिकंजे से उसी तरह बाहर निकलना चाहता है, जिस तरह से सोवियत खेमे के अन्य 10 देश निकल चुके हैं। उसने यूरोपीय संघ के कई संगठनों के साथ सहयोग के कई समझौते भी कर लिये हैं। रूस के नेता व्लादिमीर पुतिन को डर है कि कहीं यूक्रेन भी अमेरिका के सैन्य संगठन ह्यनाटोह्न का सदस्य न बन जाए। यदि ऐसा हो गया तो नाटो रूस की सीमाओं के बहुत नजदीक पहुंच जाएगा। यों भी एस्तोनिया, लेटविया और लिथुवानिया नाटो के सदस्य बन चुके हैं, जो रूस के सीमांत पर स्थित हैं। यूक्रेन और जार्जिया जैसे देशों को रूस अपने प्रभाव-क्षेत्र से बाहर नहीं खिसकने देना चाहता है। लेनिन के बाद सबसे अधिक विख्यात नेता जोजफ स्तालिन का जन्म जार्जिया में ही हुआ था। इन दोनों देशों के साथ-साथ अभी भी मध्य एशिया के पूर्व-सोवियत देशों में रूस का वर्चस्व बना हुआ है। अफगानिस्तान से अमेरिकी पलायन के कारण रूस की हिम्मत बढ़ी है। यों भी यूक्रेन पर बाइडन और पुतिन के बीच सीधा संवाद भी हो चुका है और दोनों देशों के विदेश मंत्री भी आपस में बातचीत कर रहे हैं। मुझे नहीं लगता कि यूक्रेन को लेकर दोनों महाशक्तियों के बीच युद्ध छिड़ेगा, क्योंकि वैसा होगा तो यूरोप के नाटो देशों को मिलनेवाली रूसी गैस बंद हो जाएगी। उनका सारा कारोबार ठप्प हो जाएगा और उधर रूस की लड़खड़ाती हुई अर्थ-व्यवस्था पैंदे में बैठ जाएगी। खुद यूक्रेन भी युद्ध नहीं चाहेगा, क्योंकि लगभग एक करोड़ रूसी लोग वहां रहते हैं। इस संकट में भारत की दुविधा बढ़ गई है। इस समय भारत तो अमेरिका के चीन-विरोधी मोर्चे का सदस्य है और वह रूस का भी पुराना मित्र है। उसे बहुत फूंक-फूंककर कदम रखना होगा।

“वह अभी लगभग दो-दशक पहले तक रुस का ही एक प्रांत भर था। सोवियत रुस के विश्व-प्रसिद्ध नेता निकिता ख्रुश्चौफ यूक्रेन में ही पैदा हुए थे। इस समय यूरोप में यूक्रेन ही रूस के बाद सबसे बड़ा देश है। लगभग सवा चार करोड़ की आबादीवाला यह पूर्वी यूरोपीय देश पश्चिमी यूरोप के अमेरिका-समर्थक देशों के साथ घनिष्ट संबंध बनाने की कोशिश करता रहा है। वह रूस के शिकंजे से उसी तरह बाहर निकलना चाहता है, जिस तरह से सोवियत खेमे के अन्य 10 देश निकल चुके हैं।

पर्यटन विकास के क्षेत्र में मंदार से जुड़ा एक और अध्याय

पर्यटक ऊंचाई से मंदार की वादियों का मजा ले सकेंगे।काफी लंबे अरसे से इसकी घोषणा होती रही।अब चिरलंवित सपना साकार हो रहा है।मंदार में रज्जू मार्ग का सपना बांका के पूर्व सांसद पूर्व रेल राज्य मंत्री स्वर्गीय दिग्विजय सिंह ने देखा था। जिसके लिए उन्होंने अपने स्तर से काफी प्रयास भी किया था। यही वजह थी कि 2004 में तत्कालीन उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत को वह मंदार लेकर आए थे। इसके बाद मंदार में रोपवे की चर्चा काफी गंभीर हो गयी। 2007 में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंदार पहुंचकर रोपवे निर्माण के बारे में बताया था और कहा था कि मंदार में रोपवे का निर्माण होना चाहिए।इसके बाद बांका के तत्कालीन पर्यटन मंत्री डॉक्टर जावेद इकबाल के प्रयास से 20 जनवरी 2014 को तत्कालीन मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी के द्वारा मंदार में रोपवे निर्माण का शिलान्यास किया गया।1 सितंबर 2015 को उन्होंने मंदार तराई के नजदीक रज्जू मार्ग निर्माण के लिए भूमि पूजन किया।लेकिन इसके पूर्ण होने में छह साल लग गए।चार सीटर रोप-वे में आठ केबिन हैं। इससे मंदार पहाड़ की उचाई 786 मीटर जाने में पांच मिनट लगेगा।एक बार में 16 यात्री सवार हो सकेंगे केबिन में 500 किलोग्राम तक के चार यात्रियों को आसानी से ले जाया जा सकता है। 90 बिजली पोल के सहारे विद्युत पर्वत शिखर तक पहुंचाई गई है।सबसे पहला रोपवे बिहार के नालंदा जिले के राजगीर में 1969 में बनाया गया था।जबकि रोहतास किला पर जाने के लिए भी रोपवे का निर्माण किया गया है। यह बिहार का दूसरा रज्जू मार्ग था। अब मंदार में रोपवे बिहार का तीसरा रोपवे है, जो यहां के लोगों के लिए सपना था।बिहार के बांका जिला स्थित यह वही क्षेत्र है, जहां ह्यमधुह्ल का संहार कर भगवान विष्णु ह्यमधुसूदनह्ल कहलाए। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान विष्णु ने मधुकैटभ राक्षस को पराजित कर उसका वध किया और उसे यह कहकर विशाल मंदार के नीचे दबा दिया कि वह पुनः विश्व को आतंकित न करे। दूसरी तरफ महाभारत में वर्णित है कि समुद्र मंथन में देव और दानवों के पराजय के प्रतीक के रूप में ही हर साल मकर संक्रांति के अवसर पर यह मेला लगता है।इसके विपरीत पापहरणी से जुड़ी किंवदंती के मुताबिक कर्नाटक के एक कुष्ठ पीड़ित चोलवंशीय राजा ने मकर संक्रांति के दिन इस तालाब में स्नान कर स्वास्थ्य लाभ किया था और तभी से उसे पापहरणी के रूप में प्रसिद्धि मिली। इसके पूर्व पापहरणी ह्यमनोहर कुंडह्ल के नाम से जानी जाती थी। एक अन्य किंवदंती है कि मौत से पहले ही मधुकैटभ ने अपने संहारक भगवान विष्णु से यह वायदा लिया था कि हर साल मकर संक्रांति के दिन वह उसे दर्शन देने मंदार आया करेंगे। समुद्र मंथन के प्रतीक मंदार पर्वत की हकीकत क्या है? क्या वास्तव में देवासुर संग्राम में इसे मथानी बनाया गया था? और उस क्रिया में जिस नाग को रस्सी की तरह प्रयोग में लाया गया था, पहाड़ पर अंकित लकीरें क्या उसी का साक्ष्य हैं या कि यह पर्वत एक प्रतीक है आर्य-अनार्य टकराव का? इस पहाड़ से जुड़े सिर्फ धार्मिक पक्ष को ही स्वीकार करें, तब भी इस सच्चाई की तीव्रता जरा भी कम नहीं होती। समुद्र मंथन से निकले गरल का पान भगवान शंकर ने किया। वह भगवान शंकर आज भले ही सर्वत्र पूजनीय हों लेकिन समुद्र मंथन तक वे अनार्यों (असुरों) के देवता के रूप में ही मान्य थे। यही नहीं, आज भले ही मंदार की भौगोलिक सीमा में मधुसूदन की जय-जयकार लगती हो, समुद्र मंथन के वक्त तक वहां भगवान शिव के ही त्रिशूल चमकते थे। इसका प्रमाण भगवान पुराण में वर्णित तथ्य में भी है कि मंदरांचल की गोद में देवताओं के आम्रवृक्ष हैं, जिसमें गिरिशिखर के समान बड़े-बड़े आम फलते हैं। आमों के फटने से लाल रस बहता है तथा यह रस अरूणोदा नामक नदी में परिणत हो जाता है। यह नदी मंदरांचल शिखर से निकलकर अपने जल से पूर्वी भाग को सींचती है। पार्वती जी की अनुचरी यक्ष पुत्रियां इस जल का सेवन करती हैं। इससे उनके अंगों से ऐसी अद्भुत सुगंध निकलती है कि उन्हें स्पर्श कर बहने वाली हवा चारों ओर दस-दस योजन तक सारे देश को सुगंध से भर देती है। गौरतलब है कि पार्वती की मौजूदगी शिव की उपस्थिति का संकेत देती है। फिर

मंदार के भूगोल पर वैष्णव मत का परचम क्यों और कैसे लहराया? प्रारंभ में शिव अनार्यों के देवता के रूप में ही मान्य थे जबकि विष्णु आर्यों के देवता के रूप में। सभ्यता के श्रृंगार का श्रेय भले ही आर्यों को जाता हो, उसे विनाश से बचाने में अनार्यों का त्याग काफी सराहनीय रहा है। यदि समुद्र मंथन के ही दृष्टांत को लें तो विषपान भगवान शंकर ने ही किया। किसी अन्य देवता ने वही साहस क्यों नहीं किया? इसका मतलब है कि विश्व रक्षा और मानव कल्याणार्थ वह कदम भी अनार्यों के प्रतिनिधि देवता शंकर ने उठाया और उसी सर-जमीन पर आगे चलकर आर्य सभ्यता का विकास हुआ। मधुकैटभ की मौत के साथ ही मंदार पर शैव मत का प्रभाव भी खत्म हो गया। असुर का तात्पर्य अनार्य से है। यही अनार्य आज की भाषा में आदिवासी कहकर पुकारे जाते हैं। आदिम सभ्यता इतिहास की मोटी परतों तले दफन होकर रह गई है। वैष्णव मत के प्रचार-प्रसार से पूर्व यहां शैव मत का ही बोलबाला था। यह सच्चाई सिर्फ अंग जनपद की ही नहीं है बल्कि विश्व की प्राचीन सिंधु सभ्यता भी कुछ यही जाहिर करती है। सिंधु सभ्यता के मूल निवासी आर्य थे या अनार्य, इस पर भले ही विद्वानों में मतभेद हों लेकिन वहां के लोग शिव के उपासक थे, यह बात आईने की तरह साफ हो चुकी है। कुछ विद्वानों के मुताबिक आर्य निश्चित रूप से शिवलिंग की पूजा नहीं करते थे जबकि मूर्ति पूजा सिंधु की तराई में प्रचलित थी। यह भी पता चलता है कि धीरे-धीरे आर्य सभ्यता का विस्तार उन क्षेत्रों में भी हुआ, जहां अनार्य सभ्यता का बोलबाला था। जहां तक मंदार का सवाल है, मिलने वाले प्रमाणों से जाहिर है कि वहां भी कभी आसुरों का साम्राज्य कायम था, जो शिव के उपासक थे और आर्यों के यज्ञ प्रधान धर्म से सहमत नहीं थे। जहां तक आर्यों के यहां आगमन का प्रश्न है, यह काल

> “ यही वजह थी कि 2004 में तत्कालीन उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत को वह मंदार लेकर आए थे। इसके बाद मंदार में रोपवे की चर्चा काफी गंभीर हो गयी। 2007 में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंदार पहुंचकर रोपवे निर्माण के बारे में बताया था और कहा था कि मंदार में रोपवे का निर्माण होना चाहिए।इसके बाद बांका के तत्कालीन पर्यटन मंत्री डॉक्टर जावेद इकबाल के प्रयास से 20 जनवरी 2014 को तत्कालीन मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी के द्वारा मंदार में रोपवे निर्माण का शिलान्यास किया गया।

अथर्ववेद की रचना के पूर्व का ही होने का संकेत मिलता है क्योंकि अथर्ववेद में मगध की चर्चा मिलती है। उस समय इस क्षेत्र में आर्य सभ्यता फैल रही थी। आर्य सभ्यता के इस फैलाव में निश्चित ही अनार्यों की पराजय हुई होगी उसके बाद वहां वैष्णव मत का प्रचार-प्रसार भी हुआ होगा। तब जो अनार्य थे, वही आज आदिवासी हैं और बदली हुई सच्चाई यह है कि शिव और विष्णु दोनों ही देवता आज हिन्दुओं के पूज्य है जबकि आदिवासियों की आसक्ति आज भी शिव के प्रति है। खामोश खड़ा मंदार पर्वत आज भी सांस्कृतिक गरिमा बिखेर रहा है। पोर-पोर में उकेरी हुई कलाकृतियां अपने अतीत से रूबरू करा रही हैं। मंदार भागलपुर प्रमंडल के बांका जिला के बौसी में है। मंदार पर्वत के मध्य में शंखकुंड अवस्थित है। कुछ वर्ष पूर्व इस कुंड में करीब बीस मन का शंख देखा गया था। मान्यता है कि शंख की ध्वनि से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं। मंदार पर्वत पर चढने के लिए करीने से पत्थर की सीढियां तराशी हुई हैं। कहते हैं कि ये सीढियां उग्र भैरव नामक राजा ने बनवायी थीं। मंदार पर्वत पर चढने के साथ ही सीताकुंड मिलता है। पर्वत के ऊपर एक बहुत बड़ी मूर्ति है, जिसकी पहचान लोग विभिन्न रूपों में करते हैं। थोड़ा आगे आने पर एक स्तंभ पर छोटी-मोटी मूर्तियां हैं, जो सूर्य देवता की हैं। थोड़ा ऊपर जाने पर एक काफी बड़ी मूर्ति है, जिसके तीन मुख और एक हाथ है। यह मूर्ति महाकाल भैरव की बतायी जाती है, यहीं पर एक छोटी मूर्ति गणेश की तथा दूसरी सरस्वती की थी। ये मूर्तियां भागलपुर के संग्रहालय में रखी हुई हैं। अभी भी गुफा में कुछ मूर्तियां रखी हुई हैं। मध्य में नरसिंह भगवान का एक मंदिर है। पहाड़ के बीचों-बीच 6 फुट की दूरी पर दो समानान्तर गहरे दाग हैं। मान्यता है कि समुद्र मंथन के दौरान नागनाथ और सांपनाथ के लपेटे जाने का यह प्रतीक है। मंदार की तलहटी में स्थित पापहरणी सरोवर के मध्य में अष्टकमल मंदिर है, जो सरोवर को भव्यता प्रदान करते हैं। इस मंदिर में विष्णु, महालक्ष्मी, ब्रह्मा की आकर्षक मूर्तियां विराजमान हैं। पद्मश्री चित्तू टुडू बताते थे कि संथाली गीतों में भी मंदार की महिमा का जिक्र है। वहीं मंदार में जैन धर्म के बारहवें भगवान वासुपूज्य ने कैवल्य प्राप्त किया। तदुपरांत संसार के समस्त जीवों को घूम-घूमकर धर्मोपदेश देते हुए मंदार शिखर पर ही इन्हें निर्वाण प्राप्त हो गया। आज भी भगवान वासुपूज्य के तपकल्याणक की प्रतीक गुफा मंदार पर्वत पर विराजमान है, जिसकी प्राकृतिक छटा मनमोहक है। यहां साल भर जैन धर्मावलंबियों, तीर्थयात्रियों और पर्यटकों की भीड़ रहती है। वेदव्यास, वाल्मीकि, तुलसीदास, जयदेव, कालिदास जैसे साहित्य सृष्टाओं ने अपनी लेखनी से मंदार या मंदरांचल को चिर अमरत्व प्रदान किया है तो फ्रांसिस बुकानन, शेरविल, सर जॉन फेथफल, फ्लीट, मौटगोमेरी मार्टिन जैसे पाश्चात्य विद्वानों को भी मंदार ने आकर्षित किया। बिहार के बांका जिला स्थित यह वही क्षेत्र है, जहां ह्यमधुह्ल का संहार कर भगवान विष्णु ह्यमधुसूदनह्ल कहलाए। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान विष्णु ने मधुकैटभ राक्षस को पराजित कर उसका वध किया और उसे यह कहकर विशाल मंदार के नीचे दबा दिया कि वह पुनः विश्व को आतंकित न करे। दूसरी तरफ महाभारत में वर्णित है कि समुद्र मंथन में देव और दानवों के पराजय के प्रतीक के रूप में ही हर साल मकर संक्रांति के अवसर पर यह मेला लगता है।इसके विपरीत पापहरणी से जुड़ी किंवदंती के मुताबिक कर्नाटक के एक कुष्ठ पीड़ित चोलवंशीय राजा ने मकर संक्रांति के दिन इस तालाब में स्नान कर स्वास्थ्य लाभ किया था और तभी से उसे पापहरणी के रूप में प्रसिद्धि मिली। इसके पूर्व पापहरणी ह्यमनोहर कुंडह्ल के नाम से जानी जाती थी। एक अन्य किंवदंती है कि मौत से पहले ही मधुकैटभ ने अपने संहारक भगवान विष्णु से यह वायदा लिया था कि हर साल मकर संक्रांति के दिन वह उसे दर्शन देने मंदार आया करेंगे। समुद्र मंथन के प्रतीक मंदार पर्वत की हकीकत क्या है? क्या वास्तव में देवासुर संग्राम में इसे मथानी बनाया गया था? और उस क्रिया में जिस नाग को रस्सी की तरह प्रयोग में लाया गया था, पहाड़ पर अंकित लकीरें क्या उसी का साक्ष्य हैं या कि यह पर्वत एक प्रतीक है आर्य-अनार्य टकराव का? इस पहाड़ से जुड़े सिर्फ धार्मिक पक्ष को ही स्वीकार करें, तब भी इस सच्चाई की तीव्रता जरा भी कम नहीं होती। समुद्र मंथन से निकले गरल का पान भगवान शंकर ने किया। वह भगवान शंकर आज भले ही सर्वत्र पूजनीय हों लेकिन समुद्र मंथन तक वे अनार्यों (असुरों) के देवता के रूप में ही मान्य थे। यही नहीं, आज भले ही मंदार की भौगोलिक सीमा में मधुसूदन की जय-जयकार लगती हो, समुद्र मंथन के वक्त तक वहां भगवान शिव के ही त्रिशूल चमकते थे। इसका प्रमाण भगवान पुराण में वर्णित तथ्य में भी है कि मंदरांचल की गोद में देवताओं के आम्रवृक्ष हैं, जिसमें गिरिशिखर के समान बड़े-बड़े आम फलते हैं। आमों के फटने से लाल रस बहता है तथा यह रस अरूणोदा नामक नदी में परिणत हो जाता है। यह नदी मंदरांचल शिखर से निकलकर अपने जल से पूर्वी भाग को सींचती है। पार्वती जी की अनुचरी यक्ष पुत्रियां इस जल का सेवन करती हैं। इससे उनके अंगों से ऐसी अद्भुत सुगंध निकलती है कि उन्हें स्पर्श कर बहने वाली हवा चारों ओर दस-दस योजन तक सारे देश को सुगंध से भर देती है। गौरतलब है कि पार्वती की मौजूदगी शिव की उपस्थिति का संकेत देती है। फिर मंदार के भूगोल पर वैष्णव मत का परचम क्यों और कैसे लहराया? प्रारंभ में शिव अनार्यों के देवता के रूप में ही मान्य थे जबकि विष्णु आर्यों के देवता के रूप में। सभ्यता के श्रृंगार का श्रेय भले ही आर्यों को जाता हो, उसे विनाश से बचाने में अनार्यों का त्याग काफी सराहनीय रहा है। यदि समुद्र मंथन के ही दृष्टांत को लें तो विषपान भगवान शंकर ने ही किया। किसी अन्य देवता ने वही साहस क्यों नहीं किया? इसका मतलब है कि विश्व रक्षा और मानव कल्याणार्थ वह कदम भी अनार्यों के प्रतिनिधि देवता शंकर ने उठाया और उसी सर-जमीन पर आगे चलकर आर्य सभ्यता का विकास हुआ। मधुकैटभ की मौत के साथ ही मंदार पर शैव मत का प्रभाव भी खत्म हो गया। असुर का तात्पर्य अनार्य से है। यही अनार्य आज की भाषा में आदिवासी कहकर पुकारे जाते हैं। आदिम सभ्यता इतिहास की मोटी परतों तले दफन होकर रह गई है। वैष्णव मत के प्रचार-प्रसार से पूर्व यहां शैव मत का ही बोलबाला था। यह सच्चाई सिर्फ अंग जनपद की ही नहीं है बल्कि विश्व की प्राचीन सिंधु सभ्यता भी कुछ यही जाहिर करती है। सिंधु सभ्यता के मूल निवासी आर्य थे या अनार्य, इस पर भले ही विद्वानों में मतभेद हों लेकिन वहां के लोग शिव के उपासक थे, यह बात आईने की तरह साफ हो चुकी है। कुछ विद्वानों के मुताबिक आर्य निश्चित रूप से शिवलिंग की पूजा नहीं करते थे जबकि मूर्ति पूजा सिंधु की तराई में प्रचलित थी। यह भी पता चलता है कि धीरे-धीरे आर्य सभ्यता का विस्तार उन क्षेत्रों में भी हुआ, जहां अनार्य सभ्यता का बोलबाला था। जहां तक मंदार का सवाल है, मिलने वाले प्रमाणों से जाहिर है कि वहां भी कभी आसुरों का साम्राज्य कायम था, जो शिव के उपासक थे और आर्यों के यज्ञ प्रधान धर्म से सहमत नहीं थे। जहां तक आर्यों के यहां आगमन का प्रश्न है, यह काल अथर्ववेद की रचना के पूर्व का ही होने का संकेत मिलता है क्योंकि अथर्ववेद में मगध की चर्चा मिलती है। उस समय इस क्षेत्र में आर्य सभ्यता फैल रही थी। आर्य सभ्यता के इस फैलाव में निश्चित ही अनार्यों की पराजय हुई होगी उसके बाद वहां वैष्णव मत का प्रचार-प्रसार भी हुआ होगा। तब जो अनार्य थे, वही आज आदिवासी हैं और बदली हुई सच्चाई यह है कि शिव और विष्णु दोनों ही देवता आज हिन्दुओं के पूज्य है जबकि आदिवासियों की आसक्ति आज भी शिव के प्रति है। खामोश खड़ा मंदार पर्वत आज भी सांस्कृतिक गरिमा बिखेर रहा है। पोर-पोर में उकेरी हुई कलाकृतियां अपने अतीत से रूबरू करा रही हैं। मंदार भागलपुर प्रमंडल के बांका जिला के बौसी में है। मंदार पर्वत के मध्य में शंखकुंड अवस्थित है। कुछ वर्ष पूर्व इस कुंड में करीब बीस मन का शंख देखा गया था। मान्यता है कि शंख की ध्वनि से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं। मंदार पर्वत पर चढने के लिए करीने से पत्थर की सीढियां तराशी हुई हैं। कहते हैं कि ये सीढियां उग्र भैरव नामक राजा ने बनवायी थीं। मंदार पर्वत पर चढने के साथ ही सीताकुंड मिलता है। पर्वत के ऊपर एक बहुत बड़ी मूर्ति है, जिसकी पहचान लोग विभिन्न रूपों में करते हैं। थोड़ा आगे आने पर एक स्तंभ पर छोटी-मोटी मूर्तियां हैं, जो सूर्य देवता की हैं। थोड़ा ऊपर जाने पर एक काफी बड़ी मूर्ति है, जिसके तीन मुख और एक हाथ है। यह मूर्ति महाकाल भैरव की बतायी जाती है, यहीं पर एक छोटी मूर्ति गणेश की तथा दूसरी सरस्वती की थी।

“मंदार पर्वत पर चढने के साथ ही सीताकुंड मिलता है। पर्वत के ऊपर एक बहुत बड़ी मूर्ति है, जिसकी पहचान लोग विभिन्न रूपों में करते हैं। थोड़ा आगे आने पर एक स्तंभ पर छोटी-मोटी मूर्तियां हैं, जो सूर्य देवता की हैं। थोड़ा ऊपर जाने पर एक काफी बड़ी मूर्ति है, जिसके तीन मुख और एक हाथ है। यह मूर्ति महाकाल भैरव की बतायी जाती है, यहीं पर एक छोटी मूर्ति गणेश की तथा दूसरी सरस्वती की थी। ये मूर्तियां भागलपुर के संग्रहालय में रखी हुई हैं।

जानलेवा कैंसर का उपचार कठिन, पर बचाव आसान

कैंसर का नाम किसी भी व्यक्ति में खौफ भरने के लिए काफी है। भला क्यों नहीं, जो इसके लपेटे में आया, बिरले ही उबर पाएं। उसमें युवराज सिंह, मनीषा कोईराला, लीजा रे, मुमताज, अनुराग बसु, सोनाली बेंद्रे, ताहिरा कश्यप जैसे ऐसे नाम है, जिन्होंने कैंसर को मात दी है। इसकी बड़ी वजह समय पर जानकारी व इलाज रहा। मतलब साफ है कैंसर बीमारी का पता अगर जल्दी लग जाए तो इससे बचा जा सकता है। या यूं कहे कैंसर का उपचार कठिन है परंतु बचाव आसान है इसलिए कुछ सावधनियां अपनाकर इससे बचा जा सकता है। अर्ली स्टेज में कैंसर को मात दिया जा सकता है। कैंसर बीमारी इतनी घातक है कि इन बीमारी के नाम मात्र से ही इंसान टूट जाता है। सिर्फ अकेला कैंसर पीड़ित ही नही बल्कि पूरा परिवार पीड़ित के साथ दुख और तकलीफें सहता है। इसकी गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगा सकते हैं कि दुनियाभर में हर साल इस बीमारी से करोड़ों लोग ग्रसित होते हैं और लगभग एक करोड़ लोगों की असमय मौत हो जाती है। भारत मे इसकी गंभीरता का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि प्रतिवर्ष लगभग आठ लाख महिलाएं और सात लाख पुरुष इससे ग्रसित हो जाते हैं जिसमें से लगभग आधे मौत का शिकार हो जाते हैं। इस साल यानी 2022 में वर्ल्ड कैंसर डे की थीम ब्लक्लोज द केयर गैपब्ल है, जो दुनियाभर के लोगों के लिए अपने आप में एक महत्वपूर्ण संदेश भी है

सुरेश गांधी

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी ऐसी हो गई है कि इंसान को कब कौन सी बीमारी लग जाए कहा नहीं जा सकता। बदलते समय में एक के बाद एक बीमारियां सामने आ रही हैं जो लोगों को डरा रही हैं। साल 2020 व 21 में कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया था। इन्हीं भयंकर बीमारी में से एक है कैंसर। दुनिया कि सभी बीमारियों में कैंसर सबसे खतरनाक है। कहते हैं इस बीमारी का नाम सुनते ही आधे लोग पहले ही मर जाते हैं। कैंसर एक खौफनाक शब्द है, जिसका असर केवल मरीज पर ही नहीं होता है बल्कि ये मरीज के परिवारों वालों को भी तहस-नहस कर देता है। आज भी बीमारियों से होने वाली मौत का सबसे बड़ा कारण कैंसर है। हर साल 4 फरवरी को इस जानलेवा बीमारी के खिलाफ जागरुकता के लिए ब्लविश्व कैंसर दिवसब्ल बनाया जाता है। मकसद है इस जानलेवा बीमारी के प्रति लोगों को जागरुक करना। क्योंकि अगर बीमारी से पहले इसके गंभीरता को जो समझ गए वे बच सकते है। युवराज सिंह, मनीषा कोईराला, लीजा रे, मुमताज, अनुराग बसु, सोनाली बेंद्रे, ताहिरा कश्यप जैसे ऐसे नाम है, जिन्होंने अपने दम पर न सिर्फ कैंसर जैसी बीमारी पर जीत दर्ज की बल्कि मौत को भी मात दी और लोगों के सामने मिसाल पेश की है कि अगर आपकी इच्छाशक्ति मजबूत हो तो आप हर मुसीबत का सामना कर सकते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक पिछले दो दशकों में कैंसर डायग्नोस होने वाले लोगों की तादाद में लगभग दोगुनी

बढ़ोतरी हुई है। साल 2000 में कैंसर के अनुमानित एक करोड़ मामले सामने आए थे, जो साल 2021 में 1 करोड़ 99 लाख हो गए। आज ऐसा अनुमान है कि दुनिया भर में हर 5 में से 1 व्यक्ति को कैंसर होगा। अनुमान ये भी बताते हैं कि कैंसर से पीड़ित लोगों की संख्या आने वाले वर्षों में और बढ़ेगी, और 2020 की तुलना में 2040 में लगभग 50 फीसदी अधिक होगी। नेशनल हेल्थ प्रोफाइल 2019 के मुताबिक, साल 2017 से 2018 के बीच कैंसर के मामले 324 फीसदी बढ़ गए। इसमें मुंह का कैंसर, सर्वाइकल कैंसर और ब्रेस्ट कैंसर जैसे मामले शामिल हैं। नेशनल कैंसर रेजिस्ट्री प्रोग्राम के अनुसार भारत में हर दिन कैंसर की वजह से करीब 1300 लोगों की मौत हो जाती है। पुरुषों की तुलना में महिलाएं इस बीमारी से ज्यादा ग्रसित होती है। एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में हर सातवीं महिला कैंसर की वजह से मौत को गले लगा रही है। रिसर्च के आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2030 तक कैंसर की वजह से तकरीबन 55 लाख महिलाओं की मौत हो जाएंगी। रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान में इंडिया, दक्षिण अफ्रीका और मंगोलिया जैसे देशों में स्तन कैंसर का पता लगने के बाद भी 50 फीसदी महिलाएं मौत की शिकार हो जाती हैं। जबकि अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस और जर्मनी जैसे 34 विकसित देशों में कैंसर की पहचान के बाद 80 फीसदी महिलाओं का सफल इलाज हो जाता है।

फर्स्ट स्टेज से पहले शरीर देता है संकेत

कैंसर के लक्षण इस बात पर निर्भर करते हैं कि कैंसर कहां है, कितना बड़ा

> साल 2000 में कैंसर के अनुमानित एक करोड़ मामले सामने आए थे, जो साल 2021 में 1 करोड़ 99 लाख हो गए। आज ऐसा अनुमान है कि दुनिया भर में हर 5 में से 1 व्यक्ति को कैंसर होगा। अनुमान ये भी बताते हैं कि कैंसर से पीड़ित लोगों की संख्या आने वाले वर्षों में और बढ़ेगी, और 2020 की तुलना में 2040 में लगभग 50 फीसदी अधिक होगी।

है और यह आस-पास के अंगों या ऊतकों को कितना प्रभावित करता है। यदि कैंसर फैल गया है, तो शरीर के विभिन्न हिस्सों में लक्षण या लक्षण दिखाई दे सकते हैं। होपकिंस मेडिसिन की रिपोर्ट के अनुसार, कैंसर कई तरह के होते हैं और कोई भी कैंसर जब बढ़ता है, तो वो आसपास के अंगों, रक्त वाहिकाओं और तंत्रिकाओं पर जोर देना शुरू कर सकता है। यह दबाव कैंसर के कुछ लक्षणों और संकेतों का कारण बनता है। कैंसर की शुरूआत लक्षण पहचानकर आप जल्दी और सफल इलाज करा सकते हैं। ध्यान रहे कि इन लक्षणों का मतलब यह नहीं है कि आपको कैंसर ही हो। लेकिन सुरक्षित रहने के लिए इन पांच लक्षणों और संकेतों के बारे में अपने डॉक्टर से बात करें।

कैंसर के लक्षण

अचानक से वजन घटना
लंबे समय तक थकान या कमजोरी महसूस होना
शरीर के किसी भी हिस्से पर गांठ बनना
सीने में दर्द रहना
लंबे समय तक खांसी होना और खांसने पर थूक में खून आना
कूल्हे या पेट की नीचे वाले भाग में दर्द रहना
शरीर के किसी भी पार्ट से से खून बहना
पीरियड्स के समय अत्याधिक दर्द और ब्लीडिंग होना या पीरियड खत्म होने के बाद भी ब्लीडिंग होना
गला बैठना या घोंटने में दिक्कत होना
एनीमिया या खून की कमी हो जाना
बार-बार बुखार आना और दवा करने के बाद भी बुखार ठीक ना होना
पेशाब में खून आना
त्वचा में किसी तरह का बदलाव

कैंसर से बचाव

लक्षणों पर ध्यान दें और नियमित रूप से जांच करवाएं। किसी भी प्रकार की तंबाकू का उपयोग करने से कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। तंबाकू के सेवन से बचना या रोकना कैंसर की रोकथाम में सबसे महत्वपूर्ण कदम है। नल के पानी को अच्छी तरह से छान लें, क्योंकि यह संभव कार्सिनोजेन्स और हार्मोन-विघटनकारी रसायनों के आपके जोखिम को कम कर सकता है। बहुत सारा पानी और अन्य तरल पदार्थ पीने से मूत्राशय के कैंसर के खतरे को कम करने में मदद मिल सकती है, जिससे मूत्र में कैंसर पैदा करने वाले एजेंटों की एकाग्रता कम हो जाती है और मूत्राशय के माध्यम से उन्हें तेजी से प्रवाहित करने में मदद मिलती है। सबसे महत्वपूर्ण है कि जीवनशैली में बदलाव करें, जैसे कि स्वस्थ आहार लेना और नियमित व्यायाम करना। फल और सब्जियां एंटीऑक्सिडेंट से भरपूर होती हैं जो बीमारियों को दूर करने में मदद कर सकती हैं।

कैंसर दूर भगाने के उपाय

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार 30-50 प्रतिशत कैंसर अगर समय रहते पता चल जाए और उसका पर्याप्त उपचार किया जाए तो उसे ठीक किया जा सकता है। पैक्ड फूड में एंटीऑक्सिडेंट काफी कम होते हैं। ताजे फल, सब्जियों और दालों में इनकी मात्रा ज्यादा होती है। इसलिए डॉक्टर भी खाने में ज्यादा एंटीऑक्सिडेंट्स के इस्तेमाल की सलाह देते है। इसलिए पैक्ड फूड से करें परहेज करे। लाल मांस या रेड मीट के सेवन से कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। रेड मीट में मौजूद आयरन उन यौगिकों का उत्पादन कर सकता है जो कोशिकाओं को नुकसान पहुंचा सकते हैं, जिससे कैंसर हो सकता है। हाई ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) वाले खाद्य पदार्थों के सेवन से कैंसर बढ़ता है। इसलिए रिफाइंड आटे, फलों के रस, कोल्ड ड्रिंक्स आदि से बचना सबसे अच्छा है। एसिडिक ऐसिड की मात्रा बढ़ने से कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। आहार में फलों और सब्जियों का प्रयोग का बढ़ाकर इस खतरे को कम किया जा सकता है। शराब का सेवन न करें, रेडिएशन के संपर्क में आने से बचें, फाइबर युक्त डाइट लें, धूम्रपान करने से बचें, डाइट में अधिक फैट न लें, शरीर का सामान्य वजन बनाए रखें।

“होपकिंस मेडिसिन की रिपोर्ट के अनुसार, कैंसर कई तरह के होते हैं और कोई भी कैंसर जब बढ़ता है, तो वो आसपास के अंगों, रक्त वाहिकाओं और तंत्रिकाओं पर जोर देना शुरू कर सकता है। यह दबाव कैंसर के कुछ लक्षणों और संकेतों का कारण बनता है। कैंसर की शुरूआत लक्षण पहचानकर आप जल्दी और सफल इलाज करा सकते हैं। ध्यान रहे कि इन लक्षणों का मतलब यह नहीं है कि आपको कैंसर ही हो।

तीन लाख बच्चों की हर साल कैंसर से मौत

कैंसर बच्चों में बहुत बड़ा मृत्यु कारक है। गौरतलब है कि निम्न व माध्यम वर्गीय देशों में कैंसर से पीड़ित बच्चों की मृत्यु दर 80 प्रतिशत है। जबकि विकसित देशों में कैंसर से पीड़ित 80 प्रतिशत बच्चों का जीवन बच जाता है। इसलिए इस असमानता को कम करने की जरूरत है।लिवर कैंसर का खतरा ज्यादा दुनिया भर में लिवर कैंसर की वजह से सबसे ज्यादा मौत होती है। वैसे तो इस कैंसर के पीछे कई वजहें जिम्मेदार होती हैं लेकिन गलत खानपान की वजह से ये बीमारी तेजी से बढ़ती है। आमतौर पर इसकी शुरूआत बहुत ज्यादा जंक फूड की वजह से होती है। जंक फूड सेहत के लिए अच्छा नहीं माना जाता है क्योंकि इसमें कोई भी पोषक तत्व नहीं होते हैं। बेंगलुरु के मणिपाल हॉस्पिटल के लीड कंसल्टेंट डॉक्टर राजीव लोचन के मुताबिक ह्लिवर कैंसर का सबसे आम रूप हेपैटोसेलुलर कार्सिनोमा और इंट्राहेपेटिक कोलेंजियोकार्सिनोमा (पित्त नली का कैंसर) है और इसकी वजह से हेपेटिक एडेनोमा और फोकल नोड्यूलर हाइपरप्लासिया जैसे लिवर ट्यूमर हो सकते हैं। इसके प्रमुख कारणों में हेपेटाइटिस ठ और ब वायरल संक्रमण, सिरोसिस, आर्सेनिक से दूषित पानी, मोटापा, डायबिटीज और अधिक शराब का सेवन शामिल हैं।ह्ल ये सारी चीजें फैटी लीवर भी बनाती हैं जिससे आगे चलकर कैंसर हो जाता है। फैटी लीवर आमतौर पर मोटे लोगों, डायबिटीज की बीमारी और हाई लिपिड प्रोफाइल वाले लोगों में होता है। खाने की खराब आदतें, खासतौर से फैट और शुगर से भरपूर आहार फैटी लीवर को बढ़ावा देता है। जिन लोगों का मेटाबॉलिज्म खराब होता है, उनमें ये ट्यूमर में बदल सकता है।

जंक फूड से लिवर कैंसर का खतरा

आजकल जंक फूड लोगों के लाइफस्टाइल का एक नियमित हिस्सा बन गया है। ये सभी फास्ट फूड न केवल मोटापे ढ़ाते हैं बल्कि आपके लीवर को भी नुकसान पहुंचाते हैं। इससे सिरोसिस हो सकता है और लीवर कैंसर होने का खतरा बढ़ जाता है। एक्सपर्ट्स का कहना है कि जंक फूड का मतलब है आप जो कुछ खा रहे हैं वो ठीक से पकाया नहीं गया है या फिर इसमें हाइड्रोकार्बन है। इसमें कुछ ऐसे केमिकल होते हैं जो कार्सिनोजेनिक यानी कैंसरकारक पदार्थ होते हैं। हमारी आंत में अच्छे और खराब दोनों तरह के बैक्टीरिया होते हैं। ज्यादा जंक फूड खराब बैक्टीरिया को बढ़ाने का काम करते हैं और इसकी वजह से कैंसर भी हो सकता है। डॉक्टर्स का कहना है कि खराब लाइफस्टाइल, ज्यादा कैलोरी वाले फूड, हाई काबोर्हाइड्रेट वाले फूड, सोडा ड्रिंक्स और एक्सरसाइज की कमी से लोगों को लिवर से जुड़ी दिक्कतें हो रही हैं। एक्सपर्ट्स के अनुसार किसी भी रूप में जंक फूड लेने से बचना चाहिए और स्वस्थ रहने के लिए पर्याप्त मात्रा में ज्यादा प्रोटीन काबोर्हाइड्रेट फैट वाली हेल्दी चीजें लेनी चाहिए। इसके अलावा अपने कोलेस्ट्रॉल लेवल को हमेशा ठीक रखने की कोशिश करें।

कई तरह के होते हैं कैंसर

आमतौर पर कैंसर कई तरह के होते हैं। कैंसर के प्रकार की बात करें तो ये 100 से ज्यादा होते हैं। लेकिन सबसे आम स्किन कैंसर, ब्रेस्ट कैंसर, लंग कैंसर, प्रोस्टेट कैंसर, कोलोरेक्टल कैंसर, ब्लैडर कैंसर, मेलानोमा, लिम्फोमा, किडनी कैंसर स्तन कैंसर, सर्वाइकल कैंसर, पेट का कैंसर, ब्लड कैंसर, गले का कैंसर, गर्भाशय का कैंसर, अंडाशय का कैंसर, प्रोस्टेट (पौरुष ग्रंथि) कैंसर, मस्तिष्क का कैंसर, लिवर (यकृत) कैंसर, बोन कैंसर, मुंह का कैंसर और फेफड़ों का कैंसर शामिल है। रिपोर्ट के मुताबिक भारत में प्रमुख तीन प्रकार के कैंसर सर्वाधिक है। इसमें मुंह, बच्चेदानी और स्तन कैंसर प्रमुख हैं।

कैंसर की स्टेज

आमतौर पर कैंसर की चार मुख्य स्टेज होती हैं। पहली और दूसरी स्टेज में कैंसर का ट्यूमर छोटा होता है या कैंसर सीमित जगह पर होता है। इस स्टेज में कैंसर गहराई में नहीं फैलता। तीसरी स्टेज में कैंसर फैलने लगता है। ट्यूमर का आकार भी बढ़ सकता है या फिर कई ट्यूमर हो सकते हैं। शरीर के बाकी के अंगों में इसके फैलने की संभावना बढ़ जाती है। चैथी और आखिरी स्टेज में कैंसर अपने शुरूआती हिस्से से अन्य अंगों में फैल जाता है, जिसे मेटास्टेटिक कैंसर कहा जाता है।

लंबा चलता है इलाज

किसी को भी कैंसर की बीमारी होती है, उसका इलाज काफी लंबा चलता है। इसके लिए कई लोगों को तो विदेश तक जाना पड़ता है. बड़े-बड़े अस्पतालों की महंगी फीस देने के बाद भी कई लोग बच नहीं पाते. कई दवाओं से लेकर लंबा इलाज इस बीमारी में चलता है.

कैंसर होने की वजह

लम्बे समय तक तंबाकू या गुटखे का सेवन करना, सिगरेट पीना, शराब पीना, लंबे समय तक रेडिएशन के संपर्क में रहना, आनुवंशिक दोष होना, शारीरिक निष्क्रियता, खराब पोषण एवं कभी-कभी मोटापा भी कैंसर होने की वजह बन सकता है।

बेहतर हो रही इलाज व्यवस्था

पिछले कुछ सालों में कैंसर के इलाज में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। आज के समय में कैंसर के लिए बेहतर जांच और इलाज उपलब्ध हैं, जिनकी बदौलत मरीज पहले से कहीं अधिक समय तक जीवित रह रहे हैं। डॉक्टरों का मानना है कि नियमित जांच कराने से बीमारियां जल्दी पकड़ में आती हैं और उनका इलाज आसान हो जाता है।

कैसे होता ब्रेन ट्यूमर

ब्रेन ट्यूमर का सही कारण बता पाना मुश्किल है. हालांकि ब्रेन ट्यूमर के अधिकांस मरीजों में जान का जोखिम नहीं होता है. केवल कुछ घटनाओं में ही यह खतरनाक होता है. -ब्रेन ट्यूमर को लेकर ऐसा देखा गया है कि यह बढ़ती उम्र के साथ बढ़ता जाता है. - रेडिएशन के साथ ब्रेन ट्यूमर का खतरा बढ़ जाता है. विशेष रूप से बच्चों में इस बीमारी का खतरा बढ़ने की संभावना अधिक होती है. -ब्रेन ट्यूमर का खतरा अनुवांशिक होता है. परिवार में किसी व्यक्ति को अगर यह बीमारी हुई है तो आने वाले लोगों में इस बीमारी का खतरा अधिक होता है. -ब्रेन ट्यूमर होने के अन्य कारणों में मोबाइल फोन रेडिएशन, हार्मोनल फैक्टर, कम फ्रीक्वेंसी वाली चंबकीय क्षेत्र और औद्योगिक इलाकों में इसका खतरा अधिक रहता है.

महामना टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल, वाराणसी

होमी भाभा कैंसर अस्पताल, वाराणसी साल 2018 से अपनी सेवाएं दे रहा है, इस अस्पताल की 179 बेड की कैपेसिटी है। जबकि वाराणसी में दूसरे कैंसर अस्पताल का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 19 फरवरी 2019 को किया। महामना पंडित मदन मोहन मालवीय कैंसर सेंटर की बेड कैपेसिटी 350 है। कैंसर के इलाज के लिए टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल, मुंबई में लगभग 25 फीसदी कैंसर रोगी उत्तर प्रदेश के हैं। अनुमान है कि उत्तर प्रदेश में हर साल लगभग 1.5 लाख नए कैंसर के मामले होंगे। इस प्रकार यूपी के वाराणसी में अत्याधुनिक कैंसर केंद्रों की आवश्यकता थी। ये कैंसर केंद्र मध्य प्रदेश, झारखंड और बिहार के आसपास के क्षेत्रों को भी पूरा करेंगे। यहां पूर्वांचल के कोने कोने से कैंसर पेशेंट्स अपना इलाज कराने के लिए आते हैं।

आजकल जंक फूड लोगों के लाइफस्टाइल का एक नियमित हिस्सा बन गया है। ये सभी फास्ट फूड न केवल मोटापे ढ़ाते हैं बल्कि आपके लीवर को भी नुकसान पहुंचाते हैं। इससे सिरोसिस हो सकता है और लीवर कैंसर होने का खतरा बढ़ जाता है। एक्सपर्ट्स का कहना है कि जंक फूड का मतलब है आप जो कुछ खा रहे हैं वो ठीक से पकाया नहीं गया है या फिर इसमें हाइड्रोकार्बन है। इसमें कुछ ऐसे केमिकल होते हैं जो कार्सिनोजेनिक यानी कैंसरकारक पदार्थ होते हैं।

संसार ने सर्वप्रथम वेदों से ही जाना ईश्वर व जीवात्मा का अस्तित्व

आज विश्व का अधिकांश भाग ईश्वर एवं जीवात्मा के अस्तित्व को स्वीकार करता है। प्रश्न होता है कि ईश्वर व जीवात्मा का ज्ञान संसार को कब व कैसे प्राप्त हुआ? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों की परिस्थितियों पर विचार करना पड़ता है। हम जानते हैं कि यह सृष्टि सूक्ष्म परमाणुओं से बनी है। विज्ञान बताता है कि भौतिक पदार्थ अणुओं व परमाणुओं से बने हैं। अणु परमाणुओं से मिलकर बनता है। परमाणु किसी भौतिक पदार्थ की सबसे छोटी ईकाई है। इन सभी परमाणुओं में इलेक्ट्रोन, प्रोटोन और न्यूट्रोन कण होते हैं। इन सूक्ष्म कणों से बना परमाणु कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है अपितु यह भी विभाज्य है। परमाणु के इन सूक्ष्म कणों से भी सूक्ष्म सृष्टि रचना का मूल पदार्थ है जिसे शास्त्रीय भाषा में ह्यप्रकृतिह्व कहा गया है। सृष्टि निर्माण के इस उपादान कारण प्रकृति से ही परमात्मा ने परमाणु बनाये और उन परमाणुओं से अणु तथा विज्ञान के नियमों के अनुसार इस सृष्टि को बनाया है। जब मनुष्य पहली बार उत्पन्न हुआ तो उस समय न तो उसके माता, पिता थे, न उनको ज्ञान देने व पढ़ाने वाला कोई आचार्य व गुरु था। उनके पास आंख, नाक, कान, मुह, त्वचा आदि इन्द्रियां होने पर भी भाषा व ज्ञान से शून्य वह सब मनुष्य बोल नहीं सकते थे। ऐसी अवस्था में उनका जीवन निर्वाह सर्वथा असम्भव था। उन्हें तत्काल ज्ञान व भाषा की आवश्यकता थी। ज्ञान भाषा में ही निहित होता है। भाषा से पृथक ज्ञान का कोई अस्तित्व नहीं होता।

अतः यह मानना पड़ता है कि कोई चेतन, ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वदेशी, निराकार, सर्वशक्तिमान सत्ता थी जिसने पहले इस सृष्टि की रचना की और फिर इस सृष्टि में मनुष्य आदि प्राणियों को उत्पन्न किया। यदि वह निराकार सत्ता इस सृष्टि की रचना और मनुष्यादि प्राणियों को उत्पन्न कर सकती है तो स्वाभाविक है कि वह ज्ञानवान सत्ता है और वह मनुष्यों को ज्ञान भी दे सकती है। लोग प्रश्न करते हैं कि मनुष्यों के समान ईश्वर की मुंह व कान आदि इन्द्रियां नहीं हैं, तब ईश्वर ज्ञान कैसे दे सकता है? इसका उत्तर है कि बोलने की आवश्यकता अपने से भिन्न मनुष्यों से संवाद कर ज्ञान कराने के लिए होती है। स्वयं से बातचीत व विचार एवं चिन्तन आदि किया जाये तो बोलने की आवश्यकता नहीं होती। ईश्वर नामी सत्ता मनुष्य के हृदय, मन, मस्तिष्क, बुद्धि, अन्तःकरण एवं आत्मा सहित पूरे शरीर में विद्यमान है। उसी ने शरीर के सभी अंग, प्रत्यंग वा अवयव ज्ञान प्राप्ति व उनके व्यवहार करने के उद्देश्य से ही बनाये हैं। आदि सृष्टि में ऐसा कोई साधन नहीं था कि जिससे मनुष्यों को स्वतः ज्ञान हो जाता। अतः ईश्वर ने स्वयं ही सृष्टि के आदि में मनुष्यों को परस्पर व्यवहार करने हेतु भाषा एवं सभी विषयों का आवश्यक ज्ञान दिया था। उस ज्ञान का नाम ही वेद है। यह ज्ञान ईश्वर ने जीवात्मा की आत्मा के भीतर प्रेरणा देकर स्थापित किया था। ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तयार्मी एवं कण-कण में विद्यमान है। वह जीवात्मा के भीतर व बाहर दोनों जगह है। ईश्वर आत्मा में ओतप्रोत है, ऐसा माना जाता है। विश्व वा ब्रह्माण्ड का कोई स्थान ऐसा नहीं है कि जहां ईश्वर विद्यमान वा व्यापक न हो। अतः ज्ञानस्वरूप परमात्मा जीवात्मा की आत्मा में अपने जीवस्थ-स्वरूप व सत्ता से आदि मनुष्यों में से चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान देता है। परम्परा से उनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा थे। इन चार ऋषियों को एक-एक वेद का ज्ञान दिया गया था। इनको यह प्रेरणा भी की गई थी कि वह यह ज्ञान पांचवें ऋषि ब्रह्मा जी को प्रदान करें। ब्रह्मा जी ने उन चार ऋषियों से वेद ज्ञान प्राप्त किया और उसके बाद इन ऋषियों ने अन्य सभी मनुष्यों को चारों वेदों का ज्ञान वैदिक संस्कृत भाषा सहित उनकी ज्ञान ग्रहण करने की सामर्थ्य के अनुरूप कराया। यह सिद्धान्त वा मान्यता तर्क व युक्तियों सहित आप्त प्रमाणों से सिद्ध होती है। इस सिद्धान्त के विपरीत जितने विचार व मान्यतायें हैं, वह तर्कसंगत एवं व्यवहारिक सिद्ध नहीं होते। मनुष्यों को वेदों का ज्ञान मिला तो वह जान गये कि इस संसार व समस्त प्राणियों का रचयिता एकमात्र परमात्मा है। वेदों में एक नहीं सहस्रों मन्त्र हैं जिनमें ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप सहित मनुष्यों के कर्तव्य आदि की शिक्षा का ज्ञान दिया गया है। हमें लगता है कि ब्रह्मा जी सहित अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषियों ने सभी मनुष्यों को वेद ज्ञान से परिचित कराया और वह सब ईश्वर व जीवात्मा के यथार्थ स्वरूप को जैसा कि वेदों

में वर्णित है, जान गये थे। इस प्रथम पीढ़ी के बाद इन्हीं सक्षम व समर्थ लोगों ने इसके बाद की सन्ततियों में वेदों का प्रचार व प्रकाश जारी रखा। लोग वेदों को स्मरण व कण्ठाग्र करने लगे जिससे आरम्भ परम्परा अद्यावधि तक चली आयी है। आज भी आर्यसमाज के गुरुकुलों के अनेक विद्यार्थियों को वेद स्मरण व कण्ठ हैं। किसी को एक वेद स्मरण है तो किसी को दो भी स्मरण हैं। वेदों को स्मरण व कण्ठ करने के कारण ही वेदों का एक नाम श्रुति भी है। श्रुति का अर्थ होता है कि जिसे सुनकर स्मरण किया जाये व दूसरों को बोलकर बताया या स्मरण कराया जाये। इस प्रकार परम्परा से वेदों का ज्ञान हम सब तक पहुंचा है। हमारा सौभाग्य है कि आज हमारे घर पर चारों वेद उनके हिन्दी व अंग्रेजी अर्थों, भाष्य व टीकाओं के साथ उपलब्ध हैं। हिन्दी में तो हमारे पास अनेक विद्वानों के भाष्य है। इन भाष्यों वा टीकाओं की विशेषता यह है कि इन भाष्यों में ऋषि दयानन्द जी व विद्वानों ने वेदमन्त्र के प्रत्येक पद व शब्द का हिन्दी भाषा में अर्थ दिया है। ऋषि दयानन्द द्वारा किये गये वेदभाष्य में मन्त्रों के सभी पदों के संस्कृत व हिन्दी दोनों अर्थ प्राप्त होते हैं। महर्षि दयानन्द ने ही महाभारत काल के बाद पहली बार गायत्री व अन्य अनेक मन्त्रों का सत्य व व्यवहारिक अर्थ किया है। वैदिक विद्वान सायण ने चारों का संस्कृत भाषा किया व अपने अनुचर विद्वानों से कराया। उनके अर्थ केवल यज्ञपरक हैं। उन्होंने वेदमन्त्रों के व्यवहारिक अर्थों की उपेक्षा की। ऋषि दयानन्द का वेदभाष्य महाभारतपूर्व ऋषि परम्परा के अनुकूल हाने सहित वेदमन्त्रों के व्यवहारिक एवं उपयोगी अर्थों से युक्त होने के कारण अधिक उपयोगी एवं प्रासंगिक है। ऋषि दयानन्द ने ऋषि परम्परा का निर्वहन करते हुए वेद प्रचार की दृष्टि से महत्वपूर्ण अनेक ज्ञान विज्ञान विषयक सत्य रहस्यों का उद्घाटन करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु आदि अनेक ग्रन्थों की रचना व प्रकाश किया है।

अतः यह मानना पड़ता है कि कोई चेतन, ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वदेशी, निराकार, सर्वशक्तिमान सत्ता थी जिसने पहले इस सृष्टि की रचना की और फिर इस सृष्टि में मनुष्य आदि प्राणियों को उत्पन्न किया। यदि वह निराकार सत्ता इस सृष्टि की रचना और मनुष्यादि प्राणियों को उत्पन्न कर सकती है तो स्वाभाविक है कि वह ज्ञानवान सत्ता है और वह मनुष्यों को ज्ञान भी दे सकती है।

17 से 21 सितंबर ' रंग जलसा- 2021

निर्माण कला मंच का नाट्य महोत्सव ' रंग जलसा '-2021

मालिनी अवस्थी तथा हिमानी शिवपुरी सम्मानित

बिंदेश्वर प्रसाद गुप्ता

पिछले वर्षों की तरह विगत 17 से 21 सितंबर को निर्माण कला मंच , (पटना) के द्वारा नाट्य महोत्सव ' रंग जलसा ' - 2021 का भव्य आयोजन स्थानीय प्रेमचंद रंगशाला में किया गया ।

जलसा के पूर्व , प्रथम दिन 17 सितंबर को प्रेमचंद रंगशाला के वाह्य परिसर में 'आजादी का अमृत महोत्सव ' रंग जलसा के पूर्व रंग ' का शुभारंभ हुआ , जिसके अंतर्गत ' कबीर नामा म्यूजिक बैंड ' , पटना की ओर से ' कबीर के दोहे और देशभक्ति गीतों ' की प्रस्तुति की गई । महोत्सव के दूसरे दिन 18 सितंबर को ' रंग जलसा ' का शुभारंभ , बिहार सरकार के मुख्य सचिव त्रिपुरारी शरण, संस्था की अध्यक्षा पद्मश्री उषा किरण खान , सचिव संजय उपाध्याय ने किया ।

संस्था ने सन 2015 से प्रत्येक वर्ष ' रंग शांति स्मृति सम्मान ' का प्रारंभ किया है, जिसके अंतर्गत देश की ख्याति महिला कलाकारों को पचीस हजार रुपए की नगद राशि, प्रशस्ति पत्र, अंग वस्त्र , स्मृति चिन्ह आदि प्रदान किए जाते हैं।

वर्ष 2020 का ' रंग शांति स्मृति सम्मान पद्मश्री मालिनी अवस्थी को त्रिपुरारी शरण, मुख्य सचिव ,बिहार सरकार के हाथों द्वारा प्रदान किया गया। मंच का संचालन डॉक्टर ध्रुव कुमार ने किया ।

सम्मान समारोह के पश्चात निर्माण कला मंच के द्वारा डॉ. उषा किरण खान लिखित तथा संजय उपाध्याय परिकल्पित व निर्देशित ' कहाँ गए मेरे उगना ' का सशक्त नाट्य मंचन किया गया । मुख्य भूमिका में , सुमन कुमार (विद्यापति), शारदा सिंह (लखीमा), स्वरम उपाध्याय (नागार्जुन /ग्रामीण 3) , आदर्श रंजन (राजकमल /ग्रामीण दो) , संजू कुमार (पद्म सिंह) , कुमार उदय सिंह (नटी /नर्तक) , विनीता सिंह (कवि पत्नी) आदि थें।

सम्मान समारोह के पूर्व , 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत प्रेमचंद रंगशाला के वाह्य परिसर में 'रंगदर्शन आर्ट ग्रुप ' , बेगूसराय के द्वारा ' रंग संगीत ' तथा ' आशा रिपट्री ' , छपरा के द्वारा ' भोलाराम का जीव ' का , मोहम्मद जहाँगीर के निर्देशन में , नाट्य मंचन हुआ ।

19 सितंबर को, आज सम्मान समारोह के अंतर्गत , वर्ष - 2021 का ' रंग शांति स्मृति सम्मान ' पद्मश्री हिमानी शिवपुरी को एन.एस.डी. के निर्देशक दिनेश खन्ना के हाथों दिया गया ।

सम्मान समारोह के पश्चात, ' निर्माण कला मंच ' के द्वारा भिखारी ठाकुर लिखित नाटक - ' विदेशिया' का मंचन किया गया। संगीत ,परिकल्पना एवं निर्देशन संजय उपाध्याय का था ।नाटक में , मुख्य भूमिका में सुमन कुमार (विदेशी), शारदा सिंह (प्यारी सुंदरी), सुमन कुमार, पप्पू ठाकुर (सूत्रधार), रूबी खातून (रखेलिन), पप्पू ठाकुर (बटोही), धीरज दास (जोकर), बृजेश शर्मा (देवर) , कुमार उदय सिंह (गुड़िया), अभिषेक राज ड्रामेबाज , रूपाली (बेटा) आदि थें । गायन मंडली में शारदा सिंह, कृष्ण कुमार , मुकेश कुमार, रोहित कुमार , उत्तम कुमार आदि थें। प्रस्तुति संयोजक डॉक्टर शैलेंद्र तथा प्रकाश जय कुमार भारती का था । आज ' आजादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत आयोजित ' पूर्व रंग ' में नाद , (नौबतपुर) का मोहम्मद जॉनी के संयोजन में - ' रंग संगीत ' तथा एचएमटी , पटना का भारतेंदु हरिश्चंद्र लिखित ' अंधेरी नगरी ' सुरेश कुमार हज्जू के निर्देशन में मंचन किया गया।

20 सितंबर को ' परिवर्तन रंग मंडली ' , सिवान का आशुतोष मिश्रा निर्देशित नाटक ' अश्लीलता , कोरोना, व लॉक डाउन ' का मुख्य मंच पर मंचन हुआ । इसके पूर्व , ' पूर्व रंग ' पर आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत, शारदा सिंह के संयोजन में ' 'रंग- संगीत ' तथा ' ओ वुमनिया ' (पटना) का रूबी खातून निर्देशित ओ री चिरैया ' का मंचन किया गया । 21 सितंबर को प्रेमचंद रंगशाला के वाह्य परिसर में 'आजादी का अमृत महोत्सव ' के अंतर्गत' रंग जलसा '- 2021 का ' पूर्व रंग ' का समापन ' रंग उर्वशी- (आरा) का साधना श्रीवास्तव के संयोजन में देश राग - ' रंग संगीत ' की प्रस्तुति की गई ।

> औरंगजेब समर्थक, पंजाब के पर्वतीय नरेशों को, भंगाणी के युध्द में पराजित किया और 1703 में उन्होंने चमकौर के युध्द में केवल 40 सिखों की सहायता से मुगलों की विशाल सेना के छक्के छुड़ा दिए थे। इसमें गुरू गोविन्द सिंह के दो बड़े पुत्रों अजीत सिंह व जुझार सिंह के साथ पांच प्यारों में से तीन प्यारे शहीद हो गये। सन 1703 में सरहिन्द के नवाब वजीर खाँ ने उनके दो छोटे पुत्रों जोरावर सिंह और फतेह सिंह को, इस्लाम स्वीकार न करने के कारण दीवार में जीवित चिनवा दिया।

जंजीरों को तोड़ना जानती हैं लड़कियां

देश के इतिहास में पहली बार एक हजार से अधिक लड़कियों ने राष्ट्रीय रक्षा अकादमी यानि एनडीए की परीक्षा पास कर अपने जज्बे और हुनर को साबित कर दिया है. उन्होंने यह संदेश भी दे दिया कि यदि अवसर मिले तो वह हर उस क्षेत्र में अपना लोहा मनवा सकती हैं जिसे केवल पुरुषों के लिए खास समझा जाता है. हालांकि एनडीए में उनका प्रवेश इतना आसान नहीं था. पिछले कई वर्षों से लंबी कानूनी लड़ाई के बाद उन्हें यह अवसर प्राप्त हुआ है. वैसे अभी भी देश के इस प्रतिष्ठित रक्षा अकादमी में उन्हें बराबरी की संख्या में अवसर नहीं मिले हैं, लेकिन अभी यह शुरूआत है और बहुत जल्द उन्हें यहां भी लड़कों की तरह पर्याप्त संख्या में प्रवेश के अवसर प्राप्त हो जायेंगे. अपने संघर्ष और क्षमता से लड़कियों ने यह साबित कर दिया है कि जमीन की गहराइयों से लेकर आसमान की ऊंचाइयों तक ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जिसे वह संभाल नहीं सकती हैं.

लेकिन सवाल यह उठता है कि आखिर क्या कारण है कि लड़कियों को बार बार अपनी क्षमता साबित करने के लिए लंबी जद्दोजहद करनी पड़ रही है? उन्हें बराबरी का दर्जा पाने के लिए कभी आवाजें बुलंद करनी होती है तो कभी कानून का सहारा लेना पड़ता है? 21 वीं सदी के इस दौर में हम खुद को वैज्ञानिक रूप से विकसित कहते हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि अभी भी हमारा समाज मानसिक रूप से पूरी तरह विकसित नहीं हुआ है. उसे यह समझने में कठिनाई होती है कि लड़के और लड़कियों के बीच केवल शारीरिक अंतर है. आज भी समाज का एक वर्ग ऐसा है जो लड़के और लड़कियों के बीच के अंतर को खत्म करना स्वीकार नहीं कर पा रहा है. उसे महिलाएं घर की चारदीवारी में कैद रहना और अधिकारों से वंचित रहना ही स्वीकार है. जबकि केवल वर्तमान में ही नहीं बल्कि इतिहास में ऐसे कई दौर गुजरें हैं जहां महिलाओं ने घर से लेकर बाहर तक के समाज को सफलतापूर्वक संचालित कर अपनी योग्यता का परिचय दिया है.

दरअसल हमारा समाज जेंडर भेदभाव यानी लैंगिक असमानता को सच मानता है. यह वह सोच है जहां लड़के और लड़कियों के बीच केवल शारीरिक ही नहीं बल्कि उसके पहनावे और जीवन गुजारने की पद्धति के आधार पर भी असमानता की एक लकीर खींच दी जाती है. शहरों की अपेक्षा देश के दूर दराज ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रकार की विचारधारा बहुत अधिक गहरी है. बात चाहे शिक्षा के क्षेत्र में हो या किसी भी अन्य फील्ड में, लड़कियों की तुलना में लड़कों को अधिक प्राथमिकता दी जाती है. उत्तराखंड के बागेश्वर जिला स्थित गरूड़ ब्लॉक का जखेड़ा गांव भी लैंगिक समानता में पिछड़ा नजर आता है. पहाड़ी क्षेत्रों से घिरे इस गांव की आबादी लगभग 600 के करीब है. आर्थिक रूप से पिछड़ा यह गांव शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत अधिक समृद्ध नहीं है. गांव की अधिकतर आबादी कृषि पर निर्भर है. सरकारी सेवा में उपस्थिति लगभग नगण्य है. किसानी के अलावा अधिकतर युवा सेना में कार्यरत हैं. वहीं 12 वीं के बाद ज्यादातर लड़कियों की शादी कर दी जाती है. ऐसे में उच्च शिक्षा के क्षेत्र इस गांव की बहुत कम लड़कियां पहुंच पाती हैं. ऐसा नहीं है कि इस गांव की लड़कियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने और आगे बढ़ने में कोई दिलचस्पी नहीं है. गांव की ऐसी बहुत लड़कियां हैं जो न केवल पढ़ने में तेज हैं बल्कि कविता और चित्रकारी में भी गजब की महारत रखती हैं. लेकिन उन्हें वह अवसर प्रदान नहीं किया जाता है जिसकी वह वास्तविक हकदार हैं. बल्कि इसके विपरीत उन्हें बचपन से मानसिक रूप से इस बात के लिए तैयार किया जाता है कि वह पराई हैं और उन्हें दूसरों के घर जाना है. जहां उन्हें स्वयं को एक आदर्श बहू साबित करने के लिए अच्छा खाना पकाना आना चाहिए. बच्चों की ज़िम्मेदारी उठाने के लिए तैयार रहनी चाहिए. ऐसे में 12 वीं तक की पढ़ाई काफी है. माता पिता उसके लिए उच्च शिक्षा पर पैसे खर्च करने की जगह उसके लिए दहेज का सामान जुटाने को प्राथमिकता देते हैं.

अलबत्ता जो लड़कियां इन संकीर्ण मानसिकता को तोड़ कर आगे बढ़ने का प्रयास करती हैं, उसकी मदद करने की जगह पूरा समाज उसे बागी और कई लांछनों से नवाज देता है. गांव का अन्य परिवार अपनी लड़कियों को उससे दूर रहने की सलाह देना शुरू कर देता है. उसके संघर्ष और क्षमता को बिगड़ी हुई लड़की के रूप में पहचान दी जाती है. हालांकि कुछ परिवार ऐसा भी है जो शिक्षा के महत्त्व को प्राथमिकता देता है और घर की लड़कियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने और उन्हें अपने सपनों को साकार करने में मदद करता है, लेकिन अक्सर ऐसे परिवार को समाज द्वारा प्रताड़ना सहनी पड़ती है. कुछ परिवार टूट जाता है और समाज के दबाव में 12वीं या स्नातक के बाद अपनी बेटी की शादी करने पर मजबूर हो जाता है.

बात केवल शिक्षा तक ही सीमित नहीं है बल्कि संस्कृति के नाम पर भी लड़कियों पर जुल्म किया जाता है. किशोरावस्था में पहुंचने के बाद माहवारी के दिनों में उसे छुआछूत के नाम पर परिवार से अलग गौशाला में डाल दिया जाता है. जहां सवेरे उठकर उसे नदी में स्नान करने पर मजबूर किया जाता है. यह प्रक्रिया उसे दिसंबर जैसे कड़ाके की ठंड में भी निभानी होती है. अफसोस की बात यह है कि पूर्वजों से चली आ रही इस कुसंस्कृति को श्रद्धा के साथ पीढ़ी दर पीढ़ी महिलाएं ही आगे बढ़ा रही हैं. दरअसल जागरूकता की कमी के कारण लड़कियां इस परंपरा को निभाने पर मजबूर हैं. लड़की को पराई समझने और उसके साथ पराया जैसा व्यवहार करना ही, समाज में लैंगिक विषमता का जीता जागता उदाहरण है, जिसे हर हाल में समाप्त करने की जरूरत है. यह वह सोच है जो समाज के साथ साथ लड़कियों की क्षमता को भी आगे बढ़ने से रोक रहा है. बहरहाल घर की दहलीज से आगे निकल कर और सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाकर लड़कियों ने यह साबित कर दिया है कि अब समाज को अपनी सोच बदलने की जरूरत है. पराई के नाम पर उसके पैरों में जंजीर डालने की बजाए उसके हौसले को उड़ान देने की जरूरत है. अब वह दौर आ चुका है जहां रूढ़िवादी संस्कृति की दुहाई देकर ग्रामीण क्षेत्रों की लड़कियों की प्रतिभा को भी रोकना नामुमकिन है क्योंकि वह ऊंची उड़ान भरना सीख गई है. कलम और स्केच के माध्यम से भी अपने जज्बात को उबारना सीख गई है. अपने सपनों को साकार करने की राह पर चल पड़ी है. अब लड़कियां घिसी पिटी सोच और सदियों से चली आ रही रूढ़िवादी परंपरा से आगे निकल कर जंजीरों को तोड़ना जानती हैं. यही है बदलते भारत की असली तस्वीर.

> हमारा समाज जेंडर भेदभाव यानी लैंगिक असमानता को सच मानता है. यह वह सोच है जहां लड़के और लड़कियों के बीच केवल शारीरिक ही नहीं बल्कि उसके पहनावे और जीवन गुजारने की पद्धति के आधार पर भी असमानता की एक लकीर खींच दी जाती है. शहरों की अपेक्षा देश के दूर दराज ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रकार की विचारधारा बहुत अधिक गहरी है.

दुनिया का फर्स्ट रोबोमैन

यकीनन, दुनिया में टेक्नोलॉजी ने विस्मित छलांग लगाई है। 13.8 अरब सालों से इतिहास में पहली बार कोई इंसान सबसे ज्यादा एडवांस्ड रोबोट के रूप में आपके सामने है। विज्ञान और तकनीक के साथ जुड़ी मानवीय जज्बे ही यह कहानी हम सबको चौंकाती है। यह अद्भुत, अविश्वसनीय और अतुल्नीय कहानी आत्मविश्वास से लबरेज तो है ही, साथ ही इस नकारात्मक सोच को भी ठेंगा दिखाती है, इंसान और रोबोट एक-दूसरे के दुश्मन है। रोबोमैन की सच्चाई तो यह सकारात्मक संदेश देती है, मानव और रोबोट एक दूसरे के टूली फ्रेंड्स हैं। यह कड़वा सच है, वैज्ञानिक तकनीक के सहारे पूरी तरह इंसान तो नहीं बना सकते, लेकिन आधा इंसान, आधा रोबोट तो बना ही लिया हैं। ब्रिटेन के वैज्ञानिक डॉक्टर पीटर स्कॉट मॉर्गन ने खुद को ह्यरोबोमैनह्ल के रूप में बदल लिया है। उन्हें दुनिया का पहला रोबोमैन कहा जा रहा है। यह शख्स अब आधा इंसान और आधा मशीन है। डॉ. पीटर 62 साल के हैं। खुद को जिंदा रखने के लिए उन्होंने दुनिया के सामने एक हैरतअंगेज मिसाल पेश की है। दरअसल, डॉ. पीटर मोटर न्यूरॉन नाम की एक घातक बीमारी थी, जिसके कारण उनकी मांसपेशियां भी बर्बाद हो रही थीं। शरीर के कई अंग काम करना बंद करने लगे थे। इसके बाद उन्होंने विज्ञान का सहारा लिया। रोबोटिक्स का उपयोग करके अपने जीवन को एक नया आयाम दिया। अब डॉ. पीटर मशीनों की मदद से वे सभी काम आसानी से कर लेते हैं, जिन्हें कोई सेहतमंद व्यक्ति करता है। डॉ. मॉर्गन को 2017 में मांसपेशियों को बर्बाद करने वाली इस दुर्लभ बीमारी ह्यमोटर न्यूरॉनह्ल का पता चला। इसके बाद 2019 में वह खुद को आधा इंसान और आधा रोबोट में ढालने में लग गए। आज वह न सिर्फ जिंदा हैं बल्कि दुनिया के लिए एक बेमिसाल उदाहरण बन गए हैं। वह कहते हैं, मैं हमेशा से ऐसा मानता रहा हूं, जीवन में ज्ञान और तकनीक के सहारे बहुत-सी खराब चीजों को बदला जा सकता है।

आधा इंसान और आधा मशीन बनाने या यूं कहें कि बनने की प्रेरणा उन्हें साइंस फिक्शन कॉमिक के कैरेक्टर साइबोर्ग से मिली है। साइबोर्ग दरअसल एक साइंस फिक्शन कॉमिक का ऐसा कैरेक्टर है, जो आधा इंसान और आधा मशीन होता है। डॉ. मॉर्गन कहते हैं- आधा मशीन होने के बाद भी मेरे पास प्यार है। मैं मस्ती करता हूँ। मुझे उम्मीद है, मेरे पास सपने हैं। मेरे पास उद्देश्य हैं। वह आत्मविश्वास से लबरेज हैं। कहते हैं, अगर मेरे से कोई चार साल की सबसे

“ आधा इंसान और आधा मशीन बनाने या यूं कहें कि बनने की प्रेरणा उन्हें साइंस फिक्शन कॉमिक के कैरेक्टर साइबोर्ग से मिली है। साइबोर्ग दरअसल एक साइंस फिक्शन कॉमिक का ऐसा कैरेक्टर है, जो आधा इंसान और आधा मशीन होता है। डॉ. मॉर्गन कहते हैं- आधा मशीन होने के बाद भी मेरे पास प्यार है। मैं मस्ती करता हूँ। मुझे उम्मीद है, मेरे पास सपने हैं। मेरे पास उद्देश्य हैं। वह आत्मविश्वास से लबरेज हैं। कहते हैं, अगर मेरे से कोई चार साल की सबसे अच्छी बात पूछता है ।

अच्छी बात पूछता है तो मेरा जवाब यह है कि मैं अभी भी जिंदा हूं। इस विश्व-प्रसिद्ध रोबोटिस्ट को इंसान से आधे मशीन में ट्रांसफॉर्म होने के दौरान अविश्वसनीय रूप से जटिल और जोखिम भरे रास्तों से गुजरना पड़ा है। बीमारी के दौरान उनके चेहरे पर भाव भंगिमाएं बताने वाली कई मांसपेशियां खत्म होने लगी थीं। इसके बाद उन्होंने ऑर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से बॉडी लैंग्वेज को बताने की तकनीक की खोज की है। डॉ. स्कॉट-मॉर्गन ने केवल अपनी आंखों का उपयोग करके कई कंप्यूटरों को नियंत्रित करने में सक्षम करने के लिए आई-ट्रैकिंग तकनीक का भी आविष्कार किया है। वे वेंटिलेटर से ही सांस ले सकते हैं। उन्होंने रोबोट में फाइनल ट्रांसफॉर्म होने के दौरान अपनी आवाज को भी खो दिया था। उन्होंने एक लेरिंजेक्टॉमी करवाई। उनकी निजी जिंदगी की बात करें तो वह अपनी पार्टनर फ्रांसिस के साथ रहते हैं जो डॉ. पीटर से तीन बरस बड़ी हैं।

ब्रिटेन के इस अलबेले वैज्ञानिक डॉ. पीटर स्कॉट मॉर्गन की रोमांचक कहानी उनकी लास्ट पोस्ट की चुनिंदा पंक्तियों से बताता हूँ पीटर 1.0 के तौर पर यह मेरी लास्ट पोस्ट है मैं मर नहीं रहा, पूरी तरह बदल रहा हूं। ओह! विज्ञान से मुझे कितना प्यार है। डॉ. पीटर की चाह है, उनके चार साल के सफर को पीटर 1.0 और पीटर 2.0 के तौर पर दुनिया जाने। पीटर 2.0 की कहानी रोबोमैन के तौर पर बता चुका हूँ, लेकिन पीटर 1.0 की कहानी फ्लैशबैक की मानिंद है। डॉ. पीटर दुनिया और मानव इतिहास के पहले पूरे साइबोर्ग बनने जा रहे हैं। यानी वह मनुष्य से पूरी तरह रोबोट बनने की तरफ हैं। यह बात चौंकाने वाली जरूर लगती है, लेकिन यह सच होने जा रहा है। एक जानलेवा बीमारी से जूझने वाले पीटर की मानें तो उन्होंने विज्ञान की मदद से अपनी ज़िंदगी बढ़ाने के लिए पूरे रोबोट में तब्दील होने का फैसला लिया है, जिसे वह पीटर 2.0 कह रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की दुनिया में यह घटना वाकई एक इतिहास के तौर पर दर्ज की जाने वाली है। एक वैज्ञानिक तकनीकी तौर पर मरने के बाद एक रोबोट के तौर पर ज़िंदा रहेगा यानी कहा जा सकता है कि वह आधा इंसान और आधा रोबोट होगा। यह सब कैसे मुमकिन हो रहा है? साइबोर्ग क्या है और पीटर मोटर न्यूरॉन नामक जिस जानलेवा बीमारी के शिकार रहे, वह क्या है? सवाल यह है, क्यों डॉ. पीटर साइबोर्ग बनने जा रहे हैं? डॉ. पीटर के हवाले से दुनिया जानती है, वह मोटर न्यूरॉन यानी एमएनडी या एएलस नाम की बीमारी के शिकार हो गए थे। इसके बाद उनके बचने की कोई सूरत नहीं थी। उन्होंने मौत स्वीकार करने के बजाए इसे चुनौती के तौर पर कबूल करना चाहा और खुद को एक पूरे रोबोट में बदलने का फैसला किया। विज्ञान और अत्याधुनिक तकनीकों की मदद से उन्होंने अपने इस फैसले को साकार करने की राह पकड़ी।

2019-2020 में यह सवाल सभी के दिलों दिमाग में कौंधता रहा है, कितने बदल चुके हैं डॉ. पीटर? डॉ. पीटर को पूरे रोबोट में बदलने के लिए डॉक्टरों और वैज्ञानिकों ने कई तरह की सर्जरी की हैं। उनके शरीर के फूड पाइप को सीधे पेट से, कैथेटर को ब्लैडर से जोड़ने के साथ ही एक वेस्ट बैग भी जोड़ा गया है ताकि मल मूत्र साफ हो सके। चेहरे को रोबोटिक बनाने वाली सर्जरी की जा चुकी है, जिसमें कई आर्टिफिशियल मांसपेशियां हैं। आखिरी सर्जरी में उनके दिमाग को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से जोड़कर उनकी आवाज भी बदल दी गई। सवाल-दर-सवाल वैज्ञानिकों के भी सामने हमेशा कौंधते रहे- कैसे काम करेगा आधा इंसान आधा रोबोट? मनुष्य और एआई के सामंजस्य की बेहतरीन मिसाल बनने जा रहे पीटर एक साइबोर्ग आर्टिस्ट के तौर पर कैसे काम करेंगे? डीएक्ससी टेक्नोलॉजी की रपट की मानें तो एआई वो डेटा इस्तेमाल करेगा जो पीटर का डिजिटल फुटप्रिंट यानी लेख, वीडियो, इमेज और सोशल मीडिया आदि तैयार करेगा। कुल मिलाकर होगा यह कि एआई की मदद से पीटर का रोबोटिक हिस्सा विचार, अनुभव और तस्वीरों को पहचानेगा। डॉ. पीटर एक थीम देंगे तो एआई उसका स्वरूप बताएगा।

कैसे हुआ यह कायापलट? डॉ. पीटर ने खुद इसे कायापलट ही कहा है। संग में यह भी कहा कि वह इंसान से जब रोबोट बन जाएं तब उन्हें पीटर 2.0 के नाम से पुकारा जाए। डॉ. पीटर के इस कायापलट के लिए दुनिया की बेहतरीन टेक्नोलॉजी कंपनियों ने अलग-अलग काम किए। जैसे डीएक्ससी ने डॉ. पीटर के शरीर में लीड सिस्टम इंटिग्रेटर, साइबोर्ग आर्टिस्ट और एक होस्ट लगाया। इंटेल ने वर्बल स्पॉन्टिनिटी सॉफ्टवेयर, माइक्रोसॉफ्ट ने होलोलेंस, एफजोर्ड ने यूजर इंटरफेस डिजाइन और ह्यूमन सेंट्रिक एप्रोच जैसे काम किए। किसी कंपनी ने डिजिटल अवतार तैयार किया तो किसी ने वॉइस सिंथेसाइजर और ऐसे बना आधा इंसान आधा रोबोट। आंखें हैं खास, कई कंप्यूटरों के लिए असल में जो बीमारी

डॉ. पीटर को हुई थी, वह धीरे-धीरे उनके पूरे शरीर को खत्म कर देती, लेकिन आंखें नहीं। इस बात को समझते हुए वैज्ञानिकों ने आंखों को रोबोटिक काबिलियत के लिए इस्तेमाल करने का फैसला किया। चेहरे में जो आई कंट्रोलिंग सिस्टम लगाया गया है, उसकी मदद से अब डॉ. पीटर 2.0 कई कंप्यूटरों को आंखों के इशारे से एक साथ चला सकेंगे। क्या है यह जानलेवा बीमारी? ये भी जानें कि मोटर न्यूरॉन बीमारी क्या होती है। यह एक ऐसी बीमारी है यानी धीरे-धीरे पूरे शरीर की मांसपेशियों को निष्क्रिय करते हुए पीड़ित को एक तरह से पूरा लकवाग्रस्त कर देती है यानी उसके शरीर में कोई हरकत नहीं रह जाती, सिवाय आंखों के। 2017 में डॉ. पीटर को जब इस बीमारी का शिकार पाया तो बजाए इस तरह मरने के रोबो साइंटिस्ट डॉ. पीटर ने अपना कायापलट करने का फैसला किया और दुनिया की बेहतरीन संस्थाओं और विशेषज्ञों के साथ मिलकर पूरा साइबोर्ग बना देने की ठानी।

क्या होता है साइबोर्ग? बायोनिक, बायोरोबोट और एंड्रॉयड अलग बात है, साइबोर्ग अलग। किसी हिस्से को जब आर्टिफिशियल उपकरण या तकनीक के जरिए जोड़कर क्षमता बढ़ा दी जाती है, तो ऐसे शरीर को साइबोर्ग कहा जाता है। अब तक ये स्तनधारी ही होते हैं लेकिन वैज्ञानिकों का मानना है कि और प्रजातियों में भी यह संभव हो सकता है। बहरहाल, अब तक के इतिहास में कोई मनुष्य पूरा साइबोर्ग नहीं बना है यानी किसी के शरीर का एक या कुछ अंग ही एआई तकनीक के साथ जोड़े गए हैं। यकीनन डॉ. पीटर इतिहास के पहले पूरे फर्स्ट रोबोमैन या कहिएगा साइबोर्ग बन गए हैं। बहुत-बहुत शुक्रिया डॉ. पीटर।

2019-2020 में यह सवाल सभी के दिलों दिमाग में कौंधता रहा है, कितने बदल चुके हैं डॉ. पीटर? डॉ. पीटर को पूरे रोबोट में बदलने के लिए डॉक्टरों और वैज्ञानिकों ने कई तरह की सर्जरी की हैं। उनके शरीर के फूड पाइप को सीधे पेट से, कैथेटर को ब्लैडर से जोड़ने के साथ ही एक वेस्ट बैग भी जोड़ा गया है ताकि मल मूत्र साफ हो सके। चेहरे को रोबोटिक बनाने वाली सर्जरी की जा चुकी है।

नव सृजन एवं सर्वांगीण विकास संस्थान, पटना के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय शिखर सम्मान एवं अंतर्राष्ट्रीय गौरव सम्मान समारोह आयोजित

वरिष्ठ पत्रकार बिन्देश्वर प्रसाद गुप्ता (पटना) को '' 'अंतर्राष्ट्रीय मगध शिखर सम्मान ' से सम्मानित

बिन्देश्वर प्रसाद गुप्ता

हिंदी मगही के वरिष्ठ गीतकार , रंगकर्मी नरेंद्र प्रसाद सिंह, हिंदी मगही के साहित्यकार राजेश मंझवेकर को अंतर्राष्ट्रीय मगही शिखर सम्मान , तथा मगही मगध नागरिक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पारस कुमार सिंह को ' ' 'अन्तर्राष्ट्रीय मगध गौरव सम्मान ' (सभी नवादा , बिहार) को अमेरिका के डॉक्टर रामानंद, नेपाल के वीर बहादुर महतो, मारीशस के स्वामी आलोक , मगध विश्वविद्यालय , बोधगया के मगही विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डा. भरत सिंह और संस्था के सचिव पूजा ऋतुराज ने उन्हें ' अंतर्राष्ट्रीय मगही शिखर सम्मान ' से प्रशस्ति पत्र और अंगवस्त्रम अपने हाथों से देकर सम्मानित किया । पटना के वरिष्ठ कवि, लेखक व स्वतंत्र पत्रकार बिंदेश्वर प्रसाद गुप्ता को भी पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु ' अंतर्राष्ट्रीय मगध शिखर सम्मान ' से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सुप्रसिद्ध व लब्ध प्रतिष्ठित संगीतकार गायक सत्येंद्र नारायण सिंहा तथा डॉ. भरत सिंह ने प्रशस्ति पत्र देकर अपने हाथों से सम्मानित किया ।

साहित्यिक और सामाजिक संस्था ' नवसृजन एवं सर्वांगीण विकास संस्थान ' , कदम कुआँ , पटना (बिहार) द्वारा स्थानीय ज्ञान भवन में बिहार के प्रखर मगही सेवी और समाजसेवी स्वर्गीय राम रतन प्रसाद सिंह और धर्म परायण महिला सिया मणि देवी की पुण्य स्मृति में आयोजित समारोह में देश-विदेश के पचास से अधिक मगही सेवियों , साहित्यकारों, पत्रकारों को सम्मानित किया गया।

सम्मान समारोह की अध्यक्षता वयोवृद्ध साहित्यकार संपादक प्रो. रामनंदन प्रसाद सिन्हा ने की।

कार्यक्रम का शुभारंभ मगही के साहित्यकार प्रोफेसर रामनंदन प्रसाद सिन्हा, विश्वविद्यालय आयोग के सदस्य उपेंद्र नाथ वर्मा, दूरदर्शन , पटना की पूर्व वरीय प्रशासनिक अधिकारी डॉ.रत्ना पुरकायस्था, सुप्रसिद्ध गायक सत्येंद्र कुमार संगीत, गौ- मानव सेवा संस्थान, छोटी पटन देवी के महंत विवेक द्विवेदी के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया ।

साथ ही , दिवंगतों को अपनी श्रद्धा सुमन निवेदित करते हुए सीडीएस विपिन रावत, उनकी धर्मपत्नी मधुलिका रावत और अन्य 13 वीर शहीदों की स्मृति में दो मिनट का मौन रख कर श्रद्धांजलि दी गई। अध्यक्षीय भाषण में प्रो. राम नंदन प्रसाद सिन्हा ने पुण्य आत्माओं का स्मरण करते हुए कहा कि स्वर्गीय राम रतन प्रसाद सिंह और स्वर्गीय सिया मणि देवी ने समाज को एक नई दिशा देने का काम किया था। उनके देखे गए सपनों को साकार करने के प्रयोजनार्थ ही साहित्यसेवियों, समाजसेवियों और जमीन से जुड़ी मगही भाषा के उन्नयन में प्रयासरत सभी मगही सेवियों का सम्मान किया गया। अपने-अपने क्षेत्र के महारथियों को दो वर्गों में ' अंतर्राष्ट्रीय मगध शिखर सम्मान ' और ' अंतर्राष्ट्रीय मगध गौरव सम्मान 'से सम्मानित किया गया। ' नव सृजन एवं सर्वांगीण विकास संस्थान ' की सचिव पूजा ऋतुराज की देखरेख में आयोजित समारोह में विशिष्ट अतिथि हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ.अनिल सुलभ ने दिवंगत पुण्य आत्माओं का स्मरण करते हुए कहा कि दोनों आजीवन समाज के लिए जीते रहे। समाज के पथ प्रदर्शक बने रहे। .आज उनकी परंपराओं को अक्षुण्ण रखते हुए उनकी पुत्री पूजा ऋतुराज ने अपने बड़े चाचा 94 वर्ष के प्रोफेसर रामनंदन सिन्हा जी के द्वारा किए गए कार्यों को आगे बढ़ाया है। प्रोफेसर सिन्हा ने मगही भाषा पर 70 सालों से मेहनत की है और कई किताबें भी प्रकाशित की है। एक पत्रिका बिहार मगही मंडल " बिहान " के नाम से छपती है , जिसमें सभी मगही परिवार के साहित्यकार जुड़े हैं ।प्रोफेसर राम नंदन जी के द्वारा आरंभ की गई अपनी भाषा के प्रति स्नेह और नींव को मजबूत करने में लगी ' नवसृजन ' की सचिव पूजा ऋतुराज ने कहा कि, वह बड़े चाचा के सपनों को पूरा कर रही है और आगे भी ऐसे ही मगध के गौरव मान- सम्मान , बढ़ाने वाले को मेरी संस्था सम्मान करती रहेगी ।

उल्लेखनीय है कि पूजा ऋतुराज ने हर साल भव्य सम्मान समारोह का कार्य करती आयी है। इस महती कार्य के लिए इनकी जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है। कार्यक्रम का मंच संचालन मगही मगध नागरिक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पारस कुमार सिंह ने किया। सम्मानित होने वालों में मगही की सेवा में जुटे भारत और नेपाल समेत विभिन्न देशों में मगही का परचम लहरा रहे लोग शामिल रहे।

सम्मानित होने वालों में मगध विश्वविद्यालय के मगही विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ.भरत सिंह, वरीय पत्रकार प्रशांत झा, मगही आंदोलन के प्रणेता पारस कुमार सिंह, गीतकार नरेंद्र प्रसाद सिंह, वरिष्ठ पत्रकार-साहित्यकार राजेश मंझवेकर (सभी नवादा) तथा बिन्देश्वर प्रसाद गुप्ता , पटना , फिल्मकार प्रभात वर्मा , पटना तथा नेपाल से आए मगही के सेवक वीर बहादुर महतो, संत सत्यनारायण आलोक, फुलगेन मगही, मगही लोक गायक विजय कुमार दास, श्याम यादव , पटना से प्रभात कुमार धवन , ब्रजेश पांडे ,गौतम दत्ता, समाजसेवी अशोक वर्मा, चेतन थीरानी , धीरेंद्र गुप्ता , अनीता गुप्ता ,देवी कुमारी ,चंद्रकांत मिश्रा , मगध की धरती से शहनाई वादक मोहम्मद अबरोज आलम, मोहम्मद रिजवान ,मोहम्मद गोल्डन , मोहम्मद साजन बाबू , आशुतोष कुमार, राजेंद्र कुमार राणा, मनोज कुमार , रंजन कुमार राम जी, राजकुमार प्रसाद, ज्ञानवती देवी, राज कुमार ,उपेंद्र कुमार ,कुमार उदय सिंह, , सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह , रविंद्र रंजन , अरविंद कुमार साहू , संगीता मिश्रा , अनुभव रंजन ,पूनम तिवारी, विकास कुमार ,रवि कुमार , विनोद कुमार, डॉ. लक्ष्मी नारायण सिंह , गायक अरुण कुमार गौतम, अमरेंद्र कुमार राज , किशोर शर्मा, मंटू सागर ,अनिल शर्मा , कौशल्या देवी ,वंदना किशोरी ,बिंदु किशोरी , उषा दुबे, इत्यादि पचास से अधिक मगही सेवियों थें ।

विश्व मगही परिषद , नई दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय महासचिव प्रोफेसर नागेंद्र नारायण , विश्वविद्यालय आयोग के अध्यक्ष उपेंद्र नाथ वर्मा , नेपाल के मगही साहित्यकार संत नारायण आलोक , वरीय पत्रकार प्रशांत झा ने भी संस्था को बधाई दी। इस अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में सभी कलाकारों ने अपनी माता-पिता पर आधारित कविता और गीत से सबका मन मोह लिया एवं समारोह का समापन वरिष्ठ लकगीत मगही के गायक सत्येंद्र संगीत के निर्गुण गीत - " कैसे चुकाऊँ इन साँसों के मोल रे, जन्म देने वाले तू इतना तो बोल रे.. " गीतों से हुआ । कार्यक्रम के दरम्यान जरूरतमंदों के बीच भोजन के पैकेट और कम्बल का वितरण किया गया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का विधिवत समापन हुआ। कहना न होगा कि, अपने माता-पिता की पुण्यतिथि के अवसर पर मगही भाषा के उन्नयन व विकास के लिये कृत- संकल्प अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के नवसृजन एवं सर्वांगीण विकास संस्थान की संस्थापिका सचिव पूजा ऋतुराज द्वारा आयोजित इस समारोह में नेपाल तथा देश के कोने-कोने से आए साहित्यकारों पत्रकारों तथा गणमान्य प्रतिनिधियों की सहभागिता ने सम्मान समारोह को एक नई ऊँचाई देने में कोई कसर नहीं छोड़ी , जो अमिट यादगार पलों के रूप में दर्शकों के दिल में समा गई ।

डिजिटल करंसी से देश को लाभ होगा

जितेन्द्र कुमार सिन्हा

दुनियाँ के कई देशों में केन्द्रीय बैंक डिजिटल करंसी को लेकर प्रयोग कर रहे हैं। इनमें चीन, जापान और स्वीडन जैसे देश शामिल है। नाइजीरिया ने तो अपने सीबीडीसी लॉन्च भी कर दिया हैं। वैश्विक स्तर पर सीबीडीसी के होने वाले फायदे और इससे होने वाले नुकसान को लेकर बहस चल रही है। भारत के प्रधानमंत्री ने कहा है कि डिजिटल रुपए से फाइनेंशियल टेक्नोलॉजी की दुनियाँ में बड़े बदलाव आयेंगे। कोई भी व्यक्ति ई-रुपया के बदले कैश यानि नकदी प्राप्त कर सकेगा। डिजिटल करंसी से रुपयों की छपाई, उसके प्रबंधन और उसे लाने ले जाने पर जो व्यय होता है, उसमें भी बचत होगी। इससे पहले वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट भाषण में कहा था कि अगले वित्तीय वर्ष में रिजर्व बैंक डिजिटल रुपया लायेगा। वैसे, यह कोई नया प्रस्ताव नहीं है। वर्ष 2017 में सरकार की एक उच्चस्तरीय समिति ने भी रिजर्व बैंक को सेंट्रल बैंक डिजिटल करंसी (सीबीडीसी) लाने का सुझाव दिया था। चीन, जापान और नाइजीरिया ने अपने सीबीडीसी लॉच भी कर दिया हैं। इसके साथ स्वीडन जैसे देश भी शामिल हो गया है। वैश्विक स्तर पर सीबीडीसी के फायदे और नुकसान को लेकर बहस भी चल रही है। बताया जा रहा है कि करंसी से सबसे बड़ा फायदा यह है कि लोगों को पेमेंट का सस्ता जरिया मिलेगा। उन लोगों को खासतौर पर फायदा होगा, जिनकी पहुंच बैंकों तक नहीं है।

दूसरा लाभ यह बताया जा रहा है कि इससे काले धन पर रोक लगेगी। डिजिट पेमेंट को ट्रैक किया जा सकता है। इसलिए इससे टैक्स के दायरे में लाने में मदद मिलेगी। सरकार सीबीडीसी डिजिटल वॉलेट का इस्तेमाल डायरेक्ट ट्रांसफर के लिए भी कर सकती है। इन फायदों के साथ ही डिजिटल रुपये को लेकर कई सवाल भी उठ रहा है। सवाल यह उठता रहा है कि अगर रिजर्व बैंक ऐसी करेंसी लाता है तो क्या निजी क्षेत्र की पेमेंट कंपनियाँ उससे मुकाबला कर पायेगी? क्योकि लोग सीबीडीसी पर अधिक भरोसा जतायेंगे, भारत में इधर निजी क्षेत्र में पेमेंट इनोवेशन तेजी से हुआ हैं। सरकार यूपीआई के जरिये उन्हें एक अहम प्लैटफॉर्म मुहैया कराया है। डिजिटल रुपये को लेकर रिजर्व बैंक को यह सुनिश्चित करना होगा कि निजी फाइनेंशियल टेक्नोलॉजी सेगमेंट पर असर ना हो। दूसरा सवाल यह उठा है कि अगर सीबीडीसी एकाउंट्स को बैंक खातों से सुरक्षित माना गया तो बैंक में डिपॉजिट पर खराब असर पड़ेगा। इससे मौद्रिक नीति भी प्रभावित हो सकता है, जो केन्द्रीय बैंक का मुख्य काम है। सरकार और रिजर्व बैंक को इसका जवाब भी तलाशना होगा।

देश में अभी ऐसा डिजिटल रिटेल पेमेट सिस्टम है, जो दिन रात काम करता है। आरबीआई ने दिसम्बर 2018 से जनवरी 2019 के बीच 6 शहरों में रिटेल पेमेंट को लेकर सर्वे किया था। इसे पता लगा कि 500 रुपये तक का भुगतान लोग नकद में करना पसंद करते हैं।, वहीं ऊँची रकम के लिए डिजिटल माध्यम को तेजी से अपनाया जा रहा है। पिछले पांच साल में डिजिटल पेंमेंट में 50 फीसदी से अधिक की रफ्तार से बढ़ोतरी हो रही है। ऐसी स्थिति में सीबीडीसी लाने का मकसद क्या है, यह स्पष्ट किया जाना चाहिए । साथ ही, इसे लाने से पहले सारे पहलुओं पर गौर करना चाहिए। मुझे लगता है कि इसमें कोई जल्दबाजी नहीं होनी चाहिए।

> “ भारत के प्रधानमंत्री ने कहा है कि डिजिटल रुपए से फाइनेंशियल टेक्नोलॉजी की दुनियाँ में बड़े बदलाव आयेंगे। कोई भी व्यक्ति ई-रुपया के बदले कैश यानि नकदी प्राप्त कर सकेगा। डिजिटल करंसी से रुपयों की छपाई, उसके प्रबंधन और उसे लाने ले जाने पर जो व्यय होता है, उसमें भी बचत होगी। इससे पहले वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट भाषण में कहा था कि अगले वित्तीय वर्ष में रिजर्व बैंक डिजिटल रुपया लायेगा।

संकट की दौर में अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने वाला बजट

जितेन्द्र कुमार सिन्हा

लोकसभा में वित्तीय वर्ष 2022-23 का प्रस्तावित बजट पेश कर वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने स्पष्ट संदेश दिया है कि सरकार रियायतों के रास्ते पर नहीं चल कर, सुधार के रास्ते पर चलेगी। प्रस्तावित बजट देश की अर्थव्यवस्था की तात्कालिक जरूरतों से ज्यादा आने वाले पच्चीस वर्ष को ध्यान में रखकर बनाया गया प्रतीत होता है। देखा जाय तो बजट में पूरी ताकत देश के हित में ऐसे सुधारों और उपायों पर केन्द्रित है जो परिणाम दूरगामी और स्थायी नतीजा देने वाला है। इसके लिए ढांचागत विकास परियोजनाओं को रफ्तार देने की बात वित्त मंत्री ने की है। देश की सड़क, रेलवे, हवाई अड्डा, बंदरगाह, सार्वजनिक परिवहन, जलमार्ग और आपूर्ति श्रृखला को मजबूत बनाने पर भी काम होगा। इसके अतिरिक्त पच्चीस हजार किलोमीटर तक राष्ट्रीय सड़कें बनाने, नदियों को जोड़ने और चार सौ बंदे भारत ट्रेन तैयार करने का काम इस बजट सत्र में शामिल है। ऐसा करने से ही यह निश्चित होगा कि रोजगार के मौके भी बनेंगे। लेकिन बजट में इससे समस्या का कोई तत्काल समाधान नजर होता नहीं आ रहा कि ताकि मौजूदा बेरोजगारी से कैसे निपटा जा सके। जबकि बजट में इन सारे कामों के लिए पूंजीगत खर्च में 35 फीसद की बढ़ोतरी कर इसे साढ़े सात लाख रुपये करने का प्रस्ताव है। ढांचागत क्षेत्रों के विकास में भारत की स्थिति अभी वैसी नहीं है, जिसके लिए यह कहा जाय कि इन सब पर खर्च की जरूरत नहीं। देश ऐसे संकट की दौर से गुजर रहे है जिसमें अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए न सिर्फ दूरगामी उपायों, बल्कि तात्कालिक उपायों की जरूरत ज्यादा महसूस हो रही है। इस दृष्टिकोण से देखा जाय तो जनता को तुरंत राहत देने वाले बंदोबस्त नही है। बजट प्रस्ताव में आयकर में कोई राहत नहीं दे कर सरकार ने नौकरी पेशा तबके को और मध्यवर्ग को निराश किया है। इससे यह स्पष्ट हो गया है कि सुधार की दीर्घकालीन कोशिशों में कड़वी गोली तो मध्यमवर्ग को ही खानी पड़ेगी। बजट में बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र के डिजिटलकरण की दिशा में तेजी से बढ़ने की बात साफ है। डिजिटल करेंसी शुरू होगी। इसके अलावा देश के 75 जिलों में डिजिटल बैंकिंग इकाइयां शुरू की जायेगी। आभासी मुद्रा को कानूनी वैधता प्रदान भले ही न की गई हो, लेकिन उससे होने वाली आमदनी पर 30 फीसद कर लगा कर सरकार ने अपनी मंशा साफ कर दी है। बजट किसानों को भी उतना ही निराश करने वाला है जितना मध्यवर्ग को। कहने का तात्पर्य है कि बजट में कृषि क्षेत्र के लिए योजनाओं का अंबार है,किसानों को हाइटेक बनाने पर जोर है, लेकिन अस्सी फीसद से ज्यादा किसान इतने छोटे और निर्धन है कि खेतों में ड्रोन से छिड़काव करने की तकनीक की बात उनके लिए बेमानी लगती है। इस समस्या पर कोई गौर किया जा रहा है कि किसानों को उनका बकाया कैसे दिलवाया जाय। अभी भी पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गन्ना किसानों का पिछले सत्र का लगभग डेढ़ हजार करोड़ और चालू सत्र का करीब सात हजार करोड़ रुपये बकाया है। ऐसे में किसान बजट से कैसे खुश हो पायेगा। रक्षा क्षेत्र को आत्मनिर्भर और मजबूत बनाने के लिए सरकार ने रक्षा बजट बढ़ा कर सवा पांच लाख करोड़ रुपये कर दिया है।

विशेषज्ञों का अनुमान था कि सरकार इस बजट में जिनराज्यों में चुनाव है उन राज्यों में लोगों के लिए सौगात देगी। खासकर उन किसानों को जो तीन कृषि कानूनों को लेकर सरकार पर निशाना साधते रहे हैं। एक साल से ज्यादा वर्षों तक चले किसान आन्दोलन से सरकार पहले ही बैकफुट पर है। ऐसे में सरकार ने बजट में किसानों के लिए कई योजनाओं का पिटारा खोला है।

किसानों के साथ साथ आम लोगों के लिए भी सरकार ने बजट में राहत दी है। पीएम आवास योजना के तहत ग्रामीण, शहरी क्षेत्रों में 80 लाख नए आवास पूरे किये जायेंगे। इस योजना के लिए सरकार 48 हजार करोड़ रुपये खर्च करेगी। यह योजना पहले सिर्फ गरिबों के लिए था लेकिन अब होम लोन की रकम बढ़ाकर शहरी इलाकों के गरीब और मध्यम वर्ग को भी इसके दायरे में लाया गया है। यह कहा जा सकता है कि कुल मिलाकर बजट सर्वहितैसी है। लेकिन आने वाले समय में चुनौतियां कम नहीं है। आर्थिक हालात को देखते हुए सरकार ने विनिवेश का लक्ष्य घटा कर अब मात्र अठारह हजार करोड़ रुपये पर ले आई है, जबकि पिछली बार पौने दो लाख करोड़ रुपये था। प्रस्तावित बजट को दूरगामी विकास वाला बताया जा रहा है, लेकिन अगर मंहगाई, बेरोजगारी जैसी समस्याओं से जल्द समाधान नही हो पाता है तो ऐसा विकास किस काम का कहा जा सकता है।

> “ऐसा करने से ही यह निश्चित होगा कि रोजगार के मौके भी बनेंगे। लेकिन बजट में इससे समस्या का कोई तत्काल समाधान नजर होता नहीं आ रहा कि ताकि मौजूदा बेरोजगारी से कैसे निपटा जा सके। जबकि बजट में इन सारे कामों के लिए पूंजीगत खर्च में 35 फीसद की बढ़ोतरी कर इसे साढ़े सात लाख रुपये करने का प्रस्ताव है। ढांचागत क्षेत्रों के विकास में भारत की स्थिति अभी वैसी नहीं है, जिसके लिए यह कहा जाय कि इन सब पर खर्च की जरूरत नहीं।

मानव की तरह संवेदनशील होते है विदेश पक्षी

विश्वनाथ सिंह, अधिवक्ता

भारत में शीत ऋतु आगमन की आहट के साथ ही यहां दूर देशों से मेहमान पक्षी बड़ी संख्या में आना शुरू कर देते हैं। और हमारे देश के अनेक जंगलों, झीलों, तालाबों आदि पर आकर्षक रूप से छा जाते हैं। दूर देशों से आने वाले पक्षियों में कुछ यहां अंडे देकर यहां अपनी संख्या में वृद्धि करते हैं फिर अपने बच्चो के साथ पुनः अपने साथ लौट जाते हैं। ऐसे पक्षी को 'प्रवासी पक्षी' या 'मेहमान पक्षी' कहते हैं।

मध्य एशिया से आने वाले कुछ प्रवासी पक्षी ऐसे है जो दिल्ली के चिड़ियाघर में बड़े पैमाने पर देखे जाते है। पाकिस्तान के ऊपर से उड़ते हुए कई हजार किलोमीटर का फासला तय करके मेहमान पक्षी भारत में आकर खासकर उत्तर भारत की झीलों, तालाबों, जंगलों में फैल जाते है। सच तो यह है कि कुछ पक्षी कश्मीर, गढवाल सिक्किम आदि भारतीय प्रदेशों से भी आते है।

वैज्ञानिकों के अनुसार भारत में पाई जाने वाले 2100 जातियों के पक्षियों में से करीब 350 जाति के ऐसे पक्षी है जो हर वर्ष बाहर देशों से कुछ महीनों के लिए, हमारे देश आते है। इनमें बत्तखें, मुर्गाबिया, फुदकी, कूलिंग पथरचितौटा आदि शामिल है।

सिंकपर: बत्तख किस्म की यह पक्षी जिसकी पूंछ का आखिरी भाग एकदम नुकीला, सिंक जैसा होता है। प्राणी-वैज्ञानिक इसे एनस एक्यूटा कहते है। इसकी लम्बाई 56 से 75 सेमी. तक होती है। आमतौर पर यह साइबेरिया और कैस्पियन सागर के क्षेत्रों से पाकिस्तान होती हुई हमारे देश में सितंबर और अक्टूबर के महीनों में आती है। यह पक्षी नवंबर के मध्य तक देश के पूर्व और दक्षिण भागो मे फैल जाती है। मार्च के अंत तक यह पक्षी हमारे देश को छोड़ कर चली जाती है। सिर, मुंह और गला चॉकलेटी रंग वाले इस पक्षी के गर्दन के दोनो ओर एक सफेद पट्टी रहती है जो चौड़ी होकर छाती और पेट तक जा सकती है। आमतौर से 'सिंकपर ' नाम की यह पक्षी को उन झीलों में या नदियों के मुहानों पर छाए हुए देखा जाता है जहां घास आदि उगी होती है। इस पक्षी को देखकर हर पक्षी प्रेमी आनंदित हो जाते है।

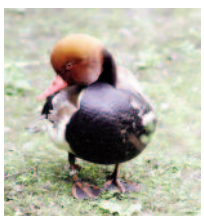

नीलसर: अपना देशी बत्तख की तरह यह करीब 60सेमी. की होती है। इसका नर भूरे रंग का होता है। गहरे हरे रंग का सिर काफी चमकदार होता है। गर्दन और छाती के बीच एक सफेद पतली पट्टी वाली इस पक्षी की चोंच पीले रंग की और टांगे नारंगी होती है। निलसर मादा का रंग ब्राउन होता है जिसपर काले धब्बे होते है। इसकी टांगे नारंगी रंग की होती है।

साइबेरिया से आने वाला इस बत्तख को वैज्ञानिक 'एनस प्लेटिराइंकोस ' कहते है। यह प्रति घण्टे 80 किलोमीटर तक उड़ान भरने की क्षमता रखती है। पानी पर तैरती हुई भोजन खाने वाली यह पक्षी मौका पड़ने पर पानी के अंदर में चली जाती है। यह मुख्य रूप से शाकाहारी पक्षी माना गया है लेकिन यदा-कदा झींगे, कैकड़े, टेडपोल, कीड़े आदि भी खा जाती है।

छोटी मुगार्बी यह पक्षी यूरोप से यहां शीत ऋतु आरंभ होने के साथ भारत आने लगती है। वैसे वैज्ञानिकों के अनुसार 38सेमी. लम्बाई वाली मुगार्बी अगस्त माह के अंत में ही आ जाती है लेकिन इनके झुंड का आना नवंबर तक जारी रहता है।

ठंड के मौसम में इन मुर्गाबियों को भारत के प्रायः सब मैदानी क्षेत्रों और दल-दल भरे स्थानों तथा झीलों आदि में बड़ी संख्या में देखा जा सकता है। मादा मुगार्बी हल्के हरे रंग की होती है। जबकि नर का रंग स्लेटी होता है लेकिन इसका सिर भूरे पीले रंग का होता है। सिर, आंखे और गर्दन पर एक हरे रंग की पट्टी होती है। अधिक ठंड बढ़ने पर यह अपने पंख गिरा देती है और कुछ दिनों के लिए पंखविहीन हो जाती है।

ये मुर्गाबियां को जब नया पंख आ जाता है तब मार्च के आखिर तक लद्दाख के ऊपर से होती हुई चली जाती है।

घिराह:- यह पक्षी अक्टूबर में माह में भारत पहुंचती है। मई माह तक यहां के जलाशयों गांवों के झीलों, नहरों, नदियों तक छाई रहती है। भारत में सर्वाधिक दिनों तक रहने वाला यह मेहमान पक्षी तैरते समय अपनी चोंच पानी में डूबो लेती है और घोंघों, कीड़ों, मछलियों आदि के बच्चों को खा जाती है।

यह यूरोप, एशिया और उत्तर अमेरिका के उत्तरी भागों में भारत आती है। घिराह नाम के इस पक्षी के नर का सिर और गर्दन हरे रंग की और छाती सफेद होती है। इसकी चोंच कुदाल जैसी चौड़ी होती है जबकि टांगे नारंगी रंग की। मादा का रंग काले भूरे रंग की होती है। नारंगी रंग की चमकदार चोंच वाली यह पक्षी जलीय वनस्पति खाने में भी रुचि रखती है।

भारत में 'प्रवासी पक्षी' शीत ऋतु आरंभ होने के साथ प्रतिवर्ष आना शुरू कर देते है इसका कई कारण बताए जाते है। वैज्ञानिकों का कहना है कि ठंडे प्रदेश में शीत ऋतु में पक्षियों के लिए भोजन का अभाव हो जाता है। उत्तरी बर्फीले प्रदेशों में शीत ऋतु में अंडे देना सुरक्षित नही माना गया है। इसलिए हजारों किमी. की लंबी यात्राओं पर वहां से चल पड़े पक्षी भारत में आकर हर दृष्टिकोण से सुरक्षित समझते हैं। और यहां अपना घर समझकर अंडा भी देती हैं और अंडे को सेवा कर उससे निकले चुज्जों को उड़ान भरने योग्य होने तक यहां रह कर अपने स्वदेश लौट जाती है।

कुछ लोगो का कहना है कि पक्षी अपने 'प्राचीन निवास स्थान' की ओर साल भर में एक बार कुछ दिनों के लिए यात्रा करना उचित समझते है। वैज्ञानिकों ने कुछ ऐसे पक्षियों के बारे में भी पता लगाया है जो भोजन की मात्रा में थोड़ी-सी कमी आ जाने पर भी अपनी लंबी-लंबी यात्रा प्रारंभ कर देते हैं।

खैर बात जो हो लेकिन वैज्ञानिकों की बातों पर तो कुछ-न-कुछ विश्वास करना ही होगा। भारत में पाई जाने वाली करीब 2100 जातियों की पक्षियों में करीब 350 जाति के ऐसे पक्षी है जो हर वर्ष (प्रत्येक वर्ष) बाहर के देशों से कुछ महीनों के लिए भारत में आते हैं। इन पक्षियों को देखकर भारतीय पक्षी प्रेमी जहां खुशी का इजहार करते हैं वहीं दूसरी ओर दुष्ट प्रकृति के मांसाहारी लोग हमारे मेहमान पक्षियों पर बंदूक चलाते हैं।

अब जरूरत है दूर देश से प्रवास करने आए 'मेहमान पक्षी' को सुरक्षा प्रदान कराने तथा इन्हें क्षति करने तथा पहुंचाने वालों के विरुद्ध दंडात्मक कार्रवाई करने की। अगर ऐसी व्यस्वथा होगी तो हमारे मेहमान पक्षी और अधिक संख्या में आकर यहां में पर्यावरण को संतुलित बनाने में सहयोग का सफेद चादर बिछाकर उड़ जायेंगे ठिकाने की ओर जहां से आते है। वर्ष 2022 में अभी से ही मेहमान पक्षी आने लगे है।

मेष धन का आगमन होगा। लेकिन सूर्यास्त के बाद दूध व दही का सेवन नही करें। घर के स्त्री पक्ष का सेहत चिंता का कारण बनेगा। प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल समय है।

बृषभ मन खिन्न रहेगा। विद्यार्थी के लिए और प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल अवसर हैं। शुभ अंक 2 और शुभ रंग सफेद या ऑफ वाइट ।बहुत मेहनत के बाद सफलता मिलेगी। जीवन में आनंद का वातावरण बनाने के लिए दुर्गासप्तशती का पाठ करें।

मिथुन दशम सूर्य आपके जीवन में विशेष कृपा बनाएगा। मां के महालक्ष्मी रूप की पूजा करें। शुभ अंक 3 रंग हरा और लाल। स्वास्थ्य का ध्यान रखें ।प्रतिष्ठा तो मिलेगी। लेकिन धनागमन में थोड़ी परेशानी होगी ।अष्टम शनि के लिए चांदी का टुकड़ा अपने पास रखें।

कर्क हनुमान जी की आराधना करें ।बजरंगबाण का पाठ करें। शुभ अंक 7। शुभ रंग- गुलाबी सेहत का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। घर के स्त्री पक्ष का सेहत चिंता का कारण बनेगा। प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल समय है।

सिंह संध्या प्रहर घी का चतुर्मुख दीपक अपने घर के मुख्यद्वार पर प्रतिदिन जलाए। उत्सव और मांगलिक कार्य की बातें करने का उपयुक्त समय है। शुभ रंग नीला। शुभ अंक 8। मत्र के वेश में छुपे शत्रु से सावधानी की जरूरत है। श्री लुक्ष्मी नारायण की पूजा से धन लाभ होगा।

कन्या महामृत्युंजय मंत्र का जाप या श्रवण करें। शुभ रंग पीला। शुभ अंक 3। पंचम शनि करियर के क्षेत्र में अच्छे अवसर देंगे। विद्या व बुद्धि से सफलता प्राप्त होंगे। गुरु के प्रभाव से लीवर या पेट की समस्या रहेगी। रंग सफेद, नंबर 3।

बृश्चिक बाएं सुर बाले पीले गणपति का तस्बीर घर में रखें। प्रतिष्ठा व सम्मान का योग है। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 5। आपके आराध्य श्री लक्ष्मी नारायण की कृपा से धन आगमन का योग है। भाई के लिए समय अनुकूल नही है।

तुला शनि माता के स्वास्थ्य के लिए ठीक नही है। चांदी के पात्र से गाय का कच्चा दूध नदी में बहाएं। अनुकूलता बनी रहेगी। शुभ रंग लाल। शुभ अंक 4। भाग्य का राहु राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे। गुरु की कृपा से शत्रु व रोग का नाश होगा।

मकर राहु अचानक व विचित्र परिणाम दे सकता है। कालभैरव जी की पूजा करें। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 7। जिद्द छोड़ना होगा ।बाएं हाथ की कलाई में पीला धागा बांधने सेनुक्सान कम होगा।

कुम्भ झूठ से नफरत होगी। चोट चपेट से बचना होगा। हल्दी का गांठ अपने पर्स में रखें ।ॐ नमो नारायणाय का जाप करें। शुभ रंग- गुलाबी। शुभ अंक 8 ।झूठे लोगों से सामना होगा ।लाभ होंगे लेकिन मन के अनुकूल नही।

धनु भगवान श्री सूर्यनारायण को अर्ध्य प्रदान करें। शुभ अंक 1 और शुभ रंग लाल है। गुरु की कृपा से भाग्य की बृद्धि होगी ।कर्म स्थान का शनि मेहनत के बाद ही सफलता देगा ।शनिबार की संध्या में लड्डू गरीबों में बांटे ।सेहत का ध्यान रखें।

मीन सूर्य की कृपा से पद व प्रतिष्ठा की बृद्धि होगी। नजर बचना होगा ।घर की शांति राहु के कारण नियंत्रण में नही रहेगा। सफेद कपड़े में सिंधा नामक घर के मुख्य द्वार पर बांधे। शुभ रंग –हरा। शुभ अंक 9।

6 फरवरी, लता मंगेशकरऔर प्रदीप यादों का सिलसिला

संगीत के दुनिया के कवि प्रदीप और लताजी दो ऐसे सितारे हैं जो कभी अस्त नहीं होते हैं। 6 फरवरी भारतीय संगीत की दुनिया में बेमिसाल तारीख के रूप में याद किया जाएगा। यह तारीख 2022 के पहले अमर गीतकार प्रदीप के नाम पर था जो आज के दिन ही जन्मे थे तो यह तारीख हर साल मन को पीड़ा देती रहेगी कि इस दिन लताजी हमसे जुदा हुई थी। ह्यऐ मेरे वतन के लोगों.. जरा आंख में भर लो पानीह्ल प्रदीप की अमर रचना थी तो लताजी की आवाज ने उसे चिरस्थायी बना दिया था। आज हमारे बीच ना प्रदीप रहे और ना लता जी लेकिन हर पल वे हमारे बीच बने रहेंगे। खैर, अब उन बातों का स्मरण करते हैं जिन्होंने ह्यलतिकाह्ल से लता बनी।

लता मंगेशकर के बारे में इतना कुछ लिखा गया, बोला गया और सुना गया कि अब कुछ शेष नहीं रह जाता है। संगीत की दुनिया से इतर लताजी अपने पीछे जो अपनों के लिए अपनापन छोड़ गईं हैं, उन पर लिखना शेष है। लता जी का बचपन किन संकटों से गुजरा और कैसे उन्होंने यह मुकाम पाया, इसकी कहानी भी अनवरत लिखी गई है लेकिन लोगों को यह बात शायद याद में ना हो कि लता ने जिस शिद्दत के साथ अपनी हर सांस संगीत को समर्पित कर दिया था, उसी शिद्दत के साथ अपने जीवन का हर पल अपने परिवार को समर्पित कर दिया था। लताजी के स्वर को लेकर हम अभिमान से भर जाते हैं तो एक सबक वे हमें यह भी सिखाती हैं कि परिवार के लिए क्या कुछ करना पड़ता है। गायक संगीतकार पिता दीनानाथ मंगेश्कर के निधन के बाद घर की बड़ी होने के नाते उन पर पूरे परिवार की जवाबदारी थी। छोटी उम्र में उन्होंने इस जिम्मेदारी को अपने सिर पर लेकर पूरा करने में जीवन खपा दिया।

लता देश की आवाज थीं, यह सबको मालूम है लेकिन उनका सफर कितना कठिन था, यह बहुत कम लोगों को मालूम होगा। कामयाब शख्स के गीत सभी गाते हैं लेकिन उनके संघर्षों की कहानी उनकी अपनी होती है। एक नामालूम सी गायिका के रास्ते में अनेक रोड़े आए। उनके आत्मविश्वास को डिगाने और हिलाने के लिए भी कोशिशें होती रही लेकिन लता चट्टान सी खड़ी रहीं। आरंभिक दिनों में नकराने और खारिज करने का दंश भी लता को झेलना पड़ा था लेकिन धुन की पक्की लता धुनी बनकर संगीत की दुनिया में अमर आवाज बन गईं और वे हमेशा देश की आवाज बनी रहेंगी।

साल 1929 के सितम्बर माह की 28 तारीख को गायक-संगीतकार के घर पैदा हुई बड़ी बेटी हेमा। हेमा से लता बन जाने की कहानी भी रोचक है। मराठी ड्रामा कंपनी के संचालक दीनानाथ मराठी नाटक ह्यभाव बंधनह्ल में लतिका नामक किरदार से प्रभावित होकर हेमा का नाम बदलकर लता कर दिया। इसी लता को शायद अपने पिता से भय था और कहीं आत्मविश्वास की कमी के चलते वह पांच वर्ष तक अपने पिता के सामने गाने छिपती रही लेकिन एक दिन पिता के कानों में लता का मधुर स्वर मिसरी की तरह घुल गया। उन्होंने तय कर लिया कि कल से मैं लता को गायन सिखाऊंगा। कहते हैं कि लता सिर्फ दो दिनों के लिए स्कूल गईं लेकिन संगीत की सम्पूर्ण शिक्षा घर पर ही हुई। लता ने अपना पहला गाना 16 दिसम्बर, 1941 को रेडियो प्रोग्राम के लिए रिकार्ड किया। करीब 4 महीने बाद पिता का देहांत 24 अप्रेल, 1942 को हो गया। इसके साथ ही लता एकाएक बड़ी हो गईं। परिवार की पूरी जिम्मेदारी उनके कंधों पर थी। साथ में तीन बहनें और एक भाई के साथ मां की जवाबदारी। हालांकि इस बीच उनके लिए रिश्ते आने लगे थे लेकिन कम उम्र में सयानी हो चुकी लता ने रिश्ते से इंकार कर दिया क्योंकि ऐसा नहीं करती तो परिवार की देखभाल कौन करता। फिर तो जिंदगी का पूरा सफर उन्होंने अकेले तय किया। घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए फिल्म में अभिनय करने लगी लेकिन जल्द ही उन्हें अहसास हो गया कि वे अभिनय के लिए नहीं बनी हैं। 25 रुपये का मानदेय लताजी के जीवन की सबसे बड़ी पूंजी थी जो उन्हें स्टेज पर गाने के एवज में पहली बार मिला था। मराठी फिल्म ह्यपहली मंगलागौरह्ल में 13 वर्ष की उम्र में पहली दफा गाना गाया। जूझते हुए अपना मुकाम बनाते हुए

लता के जीवन के 18वें वर्ष में एक नया मोड़ आता है जब गुलाम हैदर साहब उनकी आवाज से प्रभावित होकर शशधर मुखर्जी से मिलवाते हैं लेकिन मुखर्जी ने लता की आवाज को पतली कहकर खारिज कर दिया। यह और बात है कि हैदर साहब ने ह्यमास्टरजीह्ल में लता को पहला ब्रेक दिया। यह भी सुख लता के हिस्से में आया जब शशधर मुखर्जी ने अपनी गलती मानकर अनारकली और जिद्दी जैसे फिल्मों में अवसर दिया। मास्टर गुलाम हैदर एक तरह से फिल्म इंडस्ट्री में लता के गॉडफादर बने। हैदर साहब ने सिखाया हिन्दी-उर्दू सीखो और हमेशा फील कर गाओ तो अनिल बिस्वास ने सांस कब लेना और कैसे छोड़ना है।

यह बात आम है कि लता, दिलीप कुमार को अपना भाई मानती थी लेकिन इसके पहले का एक किस्सा। लोकल ट्रेन में सफर करते हुए दिलाप कुमार ने लता से पूछा था कि मराठी हो क्या? इस बात से उन्हें ठेस पहुंची और वे एक मौलाना से बकायदा उर्दू की तालीम हासिल की। अपने उसूलों की पक्की लता द्विअर्थी गाना गाने से परहेज किया। अनेक मौके ऐसे आये जब गीतकार को गीत के बोल बदलने पड़े तो कई बार उन्होंने गाने से मना कर दिया। राजकपूर जैसे को फिल्म संगम का गाना ह्यमैं का करूं राम मुझे बुड्ढा मिल गयाह्ल गाने के लिए घंटों मिन्नत करनी पड़ी। हालांकि राजकपूर के आग्रह पर गाया तो सही लेकिन कहा कि इसे मैंने मन से नहीं गाया। लता की शोहरत उनके जान की दुश्मन बन गई थी। 33 वर्ष की उम्र में उन्हें धीमा जहर दिया गया लेकिन आत्मविश्वासी लता अपनों के सहारे उठ खड़ी हुईं। हालांकि यह झूठ फैलाया गया कि वे अभी कभी गाना नहीं गा पाएंगी लेकिन डॉक्टरों ने ऐसा कभी नहीं कहा था। लताजी ने खुद इस बात का खुलासा करते हुए कहा था कि यह कृत्य करने वाला कौन था, पता चल गया था लेकिन सबूत के अभाव में कोई कार्यवाही नहीं कर पाए।

“ साल 1929 के सितम्बर माह की 28 तारीख को गायक-संगीतकार के घर पैदा हुई बड़ी बेटी हेमा। हेमा से लता बन जाने की कहानी भी रोचक है। मराठी ड्रामा कंपनी के संचालक दीनानाथ मराठी नाटक ह्यभाव बंधनह्ल में लतिका नामक किरदार से प्रभावित होकर हेमा का नाम बदलकर लता कर दिया। इसी लता को शायद अपने पिता से भय था और कहीं आत्मविश्वास की कमी के चलते वह पांच वर्ष तक अपने पिता के सामने गाने छिपती रही।

चैंपियन एथलीट और 'महाभारत' के भीम-प्रवीण कुमार सोबती का 74 साल की उम्र में हुआ निधन

नई दिल्ली। चैंपियन एथलीट और 'महाभारत' के भीम प्रवीण कुमार सोबती का 74 साल की उम्र में निधन हो गया है।

सोबती को बी.आर.चोपड़ा का प्रतिष्ठित टेलीविजन धारावाहिक 'महाभारत' में पांडव बलवान भीम की भूमिका निभाने के बाद काफी फेम मिला।

इससे पहले, सीमा सुरक्षा बल के साथ अपने कामकाजी जीवन की शुरूआत करने वाले सोबती ने डिस्कस थ्रो और हैमर थ्रो में भारत के लिए ख्याति अर्जित की, एशियाई खेल के तीन संस्करणों में एक स्वर्ण और एक कांस्य जीते, 1966 बैंकाक एशियाई खेलों में, 1970 एशियाड में एक और स्वर्ण जीता, जो बैंकॉक में भी आयोजित किया गया था, और 1974 तेहरान एशियाड में एक रजत पदक जीता था। सोबती ने 1966 में किंग्स्टन, जमैका में राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक जीता था और 1968 और 1972 में ओलंपिक में देश का प्रतिनिधित्व किया था। हालांकि, उन्हें उनके ऑन-टेलीविजन पात्रों - 'महाभारत' में भीम और साबू के लिए याद किया जाएगा। रघुबीर यादव-स्टारर 'चाचा चौधरी', प्राण कुमार शर्मा की हिंदी में बेहद लोकप्रिय कॉमिक-बुक श्रृंखला पर आधारित है।

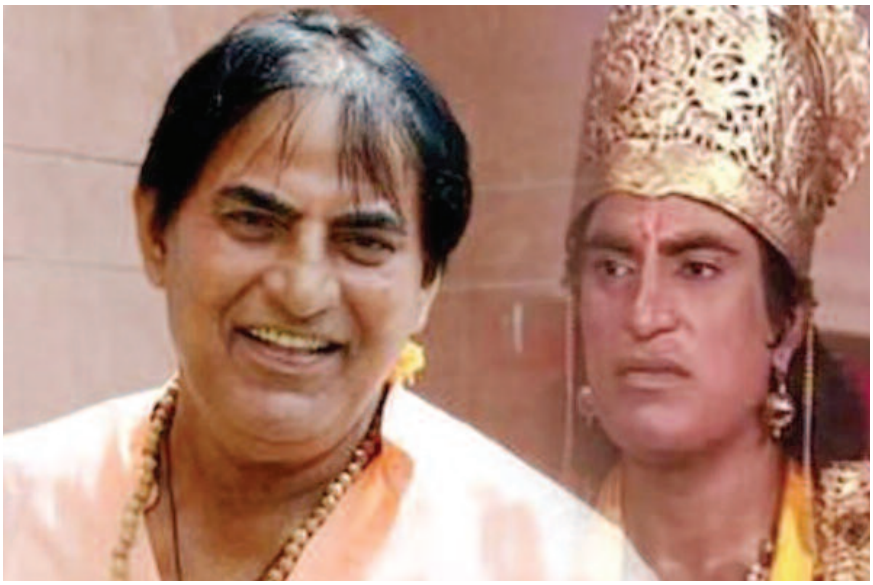

दिलचस्प बात यह है कि उनका चाचा चौधरी का किरदार बृहस्पति से एक विशालकाय एलियन का था, जो बुजुर्ग चाचा को सुरक्षा प्रदान करता है।

वह एक्शन थ्रिलर, 'रक्षा' में दिखाई दिए, जो जेम्स बॉन्ड की फिल्म 'द स्पाई हू लव्ड मी' से प्रेरित एक तेलुगु फिल्म की रीमेक थी। एक व्यस्त फिल्म और टेलीविजन करियर के अलावा, सोबती ने राजनीति में भी काम किया - वह 2013 के दिल्ली नगर निगम (2013) के चुनावों में खड़े हुए और बाद में भाजपा में शामिल हो गए थे।

चाहे रोहित की कप्तानी में खेल रहा हो, कोहली को रन मिलेंगे : गावस्कर

महान क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने कहा है कि विराट कोहली अब टीम के कप्तान नहीं रहने के बावजूद रन बनाना जारी रखेंगे। उन्होंने रोहित शर्मा और पूर्व कप्तान के बीच अनबन की अटकलों को खारिज कर दिया। इससे पहले, पिछले साल दिसंबर में कोहली ने उन अफवाहों को भी हवा दी थी कि उनका रोहित के साथ मनमुटाव है। उन्होंने कहा कि जब वह प्रेस को संबोधित कर रहे थे, एक ही सवाल का बार-बार जवाब देते-देते थक गए थे।

क्योंकि बाद में कोहली एकदिवसीय क्रिकेट में पहली बार रोहित के नेतृत्व में खेले। अहमदाबाद में रविवार को वेस्टइंडीज के खिलाफ भारत के पहले एकदिवसीय मैच में भारत की कप्तानी रोहित ने संभाली।

गावस्कर ने स्टार स्पोर्ट्स से कहा, "उन्हें कोहली का साथ क्यों नहीं मिल रहा होगा? वे भारत के लिए खेल रहे हैं। दो खिलाड़ियों के बीच मेल न खाने की ये सभी बातें हमेशा अटकलें होती हैं।"

उन्होंने कहा, "आप इस तरह की अटकलों के बारे में भी परेशान नहीं होंगे, क्योंकि आप खुद जानते हैं कि क्या सच है। वास्तव में कुछ भी नहीं है।"

गावस्कर ने कहा कि ऐसा नहीं है कि कोहली

रोहित की कप्तानी में अच्छा प्रदर्शन करने के बारे में नहीं सोचेंगे। गावस्कर ने कहा, "अक्सर अटकलें लगाई जाती हैं कि कप्तान जो अब टीम में एक खिलाड़ी है, वह नहीं चाहेगा कि नया कप्तान सफल हो। यह बकवास है। क्योंकि अगर वह रन नहीं बनाता है या कोई गेंदबाज विकेट नहीं लेता है तो वह टीम से बाहर हो जाएगा।"

गावस्कर ने कहा, कोहली को रन मिलेंगे चाहे वह रोहित या किसी और के नेतृत्व में खेल रहा हो। वह भारत के लिए रन बनाने जा रहा है।

भारत ने तीन मैचों की श्रृंखला में 1-0 की बढ़त ले ली है और बुधवार को दूसरे एकदिवसीय मैच में अहमदाबाद में वेस्टइंडीज से भिड़ने पर वे एकदिवसीय श्रृंखला समाप्त करने की कोशिश करेंगे।

उभरता बिहार परिवार की ओर से

राजा बाबू और ममता कुमारी

को 10 वीं शादी की सालगिरह पर ढेर सारी शुभकामनाएं और बधाई

FORD HOSPITAL, PATNA

A NABH Certified Multi Super-Speciality Hospital

PATNA

A 105-Bedded Hospital Run by Three Eminent Doctors of Bihar

उत्कृष्ठ एवं अपनत्व की अनुभूति

Dr. Santosh Kr.

Dr. B. B. Bharti

Dr. Arun Kumar

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE
NABH
PRE ACCREDITED

Best Promising Multi Speciality Hospital 2018 Bihar.

हृदय रोग चिकित्सा के लिए बेहतरीन टीम

2nd Multi Speciality NABH Certified Hospital of Bihar

फोर्ड हॉस्पीटल में उपलब्ध सेवाएं

क्लीनिकल सर्विसेस

- कार्डियोलॉजी
- क्रिटीकल केयर
- न्यूरोलॉजी
- स्पाईन सर्जरी
- नेफ्रोलॉजी एवं डायलेसिस
- ऑर्थोपेडिक एवं ट्रॉमा
- ओब्स एवं गॉबनेकोलौजी
- पेडिएट्रिक्स
- पेडिएट्रिक सर्जरी
- साइचिरेट्री एवं साइकोलॉजी
- रेस्पिरेट्री मेडिसिन
- यूरोलॉजी
- सर्जिकल ऑन्कोलौजी

Empaneelled with CGHS, ECR, CISF, NTPS, Airport Authority, Power Grid & other Leading PSUs, Bank, Corp. & TPS

New Bypass (NH-30) Khemnichak, Ramkrishna Nagar, Patna- 27
Helpline ; 9304851985, 9102698977, 9386392845, Ph.: 9798215884/85/86
E-mail : fordhospital@gmail.com web. : www.fordhospital.org